दो-शब्द

संगीत कला का महात्म्य बतलाने की आवश्यक्ता नहीं, बीसवीं सदी की चौथाई में भारतीय संगीताचार्यों ने संगीत कला को कोने कोने में पहुँचाने की कोशिष की है, किन्तु फिर भी हमारी संगीत कला की उन्नति में अभी कसर है। यह तो निश्चित ही है कि संगीत की नाद सुधा का आकंठपान करके परमार्थ की उपासना की जा सकती है। संसार के भयङ्कर झगड़ों व दुखों से बने हुए निरास व उदास व्यक्ति के लिए संगीत ही एक मात्र सहारा है। विश्व संगीतमय है जीवन संगीत मय है जीवन में संगीत का विशेष स्थान है।

द्रव्य सहायकों के नाम ।

१ शा जयानमल सुगालचन्द् कटारिया
मु० तुलसैकुलम् पीरुब्रिस्स पो मद्रास
शा जवानमल मिसरीलाल कठारिया,
मु० सेवाज पो० बगड़ी (मारवाड़)
२. शा. मालीराम सुगराज कटारिया
पो पैरंबूर मादावरम हाईरोड नं ७ मद्रास
३ शा अमोलकचन्द् अमराज कटारिया
मु पो आरणी जि पुनेरी, मद्रास
४ शा गणेशमल राजमल मरलेचा
मु तुलसैकुलम् पो पीरुब्रिस्स मद्रास
५. शा जसराज छवेराज कोठारी
मु पो आरणी जि पुनेरी मद्रास
६ शा हीराचन्दजी लालचंदजी आर्मीर
मु पो पैरंबूर मादावरम हाईरोड मद्रास
७ शा चम्पालालजी पगारिया
मु पो पैरंबूरमादावरम् हाईरोड मद्रास

दो-शब्द

संगीत कला का महात्म्य बतलाने की आवश्यक्ता नहीं, बीसवीं सदी की चौथाई में भारतीय संगीताचार्यों ने संगीत कला को कोने कोने में पहुँचाने की कोशिष की है, किन्तु फिर भी हमारी संगीत कला की उन्नति में अभी कसर है। यह तो निश्चित ही है कि संगीत की नाद सुधा का आकंठपान करके परमार्थ की उपासना की जा सकती है। संसार के भयङ्कर झगड़ों व दुखों से बने हुए निरास व उदास व्यक्ति के लिए संगीत ही एक मात्र सहारा है। विश्व सगीतमय है जीवन संगीत मय है जीवन में संगीत का विशेष स्थान है।

संगीत की रसलहरी का पान जन उद्देश्य से करने के लिये यह भजन संग्रह संग्रहित किया है।

पं. मुनि श्री सूर्य मुनिजी कृत यह सूर्य स्तवन संग्रह मुनिराजों महासतियों जी एवं गृहस्थों के व्याख्यान-वाणी एवं स्वाध्याय के लिये बहुत ही हितकर सिद्ध होगा। भाषा बहुत सरल है।

लेखक एव संग्रहकर्ता अपने परिश्रम की सफलता इसी में मानेंगे कि इस भ-जन संग्रह को अपना कर जन समुदाय इससे अधिक से अधिक लाभ उठावें। स्थान स्थान पर इसका प्रचार करें।

चन्दनमल कोचर
साहित्य-विशारद हिन्दी-प्रभाकर.

* श्री *

सूर्य-स्तवन-संग्रह

गौतम-स्तुति

तर्ज—कव्वाली

गौतम गणेश गुरुवर, सुखधाम नाम प्यारा। श्री संघ पे सवाया, उपकार है अपारा ॥ टेर ॥ प्रभु वीर का विनय कर, तज के प्रमाद निशिदिन। श्री द्वादशांगी वाणी, आगम निगम को धारा ॥ गौ. १॥ उस सिन्धु में से विन्दू कुछ अंश में रहा

भव। अचा मङ्गल है जिनसे, सदा
सहाय ॥ चौ. ८ ॥ दस दस में १
यह है अक्षय बुद्धि भगवन्। ५
बढ़ रहा है मतभेद पल पल भी।
नहीं ज्ञान अवधि केवल जिन पूर्ण
मुनिवर। केवल परमात्मा अब तो, !
कैसप हमारा ॥ चौ. ४ ॥ है आपकी
गाई बाजी रही पे सूखी। जल
सींच करके भव कीजिए सुधार॥
१॥ करो सूर्य तुम शिक्षा ही आभा
२ हमको। करके कृपा कृपालु दो
५ आशा " चौ. १ ॥

सा।

स्व. आचार्य श्री नंदलालजी म. के गुणानुवाद

पूज्य नन्दलाल भगवन् की, सदा जय हो सदा जय हो। लगी कंक्षा ही दरशन की, सदा जय हो सदा जय हो ॥ टेर ॥ सुखद मालव मनोहर है, शहर खाचरोद श्री कर हैं। नगीना लाल पितु वर हैं, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. १ ॥ बूवक्या गौत्र हैं ख्याती, विशुद्ध है मात पितु जाती। है अमृत मात सुविभाती, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. २ ॥ गुन्नीसे साल नवदस में, भयो है जन्म शुभनिश में। हुवो सानंद कुटुम्ब असुमें, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. ३ ॥ जनक अरु मात की पालन, दिलों

अब। भजा भटक है जिनपे, सच्चा हमें सहारा ॥ गौ. २ ॥ पल पल में होती शङ्का है अल्प बुद्धि भगवन्! अज्ञान बढ़ रहा है मतभेद पक्ष धारा ॥ गौ. ३ ॥ नहीं ज्ञान अवधि केवल जिन पूर्वधारी मुनिवर। केवल भरोसा अब तो जिन वैनपे हमारा ॥ गौ. ४ ॥ है आपकी लगाई वाटी रही ये सूखी। अब ज्ञान सींच करके अब कीजिये सुधारा ॥ गौ. ५ ॥ कहे 'सूर्य' शुभ शिक्षा दी, आधार है न हमको। करके कृपा कृपालु दो ज्ञान शक्ति भारा " गौ. ६ ॥

॥ पू ६ ॥ रहें गुरु भक्ति में शुद्ध मन, करे हैं पतित को पावन। अधम और दीन उद्धारन, सदा जय हो सदा जय हो। ॥ पू १० ॥ श्री मोखमसिंहजी पूज्यवर, थे त्रेसट साल के अन्दर। पूर्ण गुण लख-करें पटपर, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. ११ ॥ कई जन पद गमन करते, तिमिर मिथ्यात रज हरते। बोध भव्य-गण हृदय धरते, सदा जय हो सदा जय हो। ॥ पू. १२ ॥ वयोवृद्ध श्रुचित चारित में, हैं स्थेवर पूज्य त्रयस्थित में। अहिया से सब व्यथा चित में, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू. १३ ॥ नगर रतलाम के अन्दर, विराजे वर्ष कई वहां पर। दियो सम्यक्त्व ही तहां पर, सदा जय हो सदा हो ॥ [illegible] दियो है पाट युवपद

तन से भये शासन । किये उद्धार घर
मोदम सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू
४ ॥ गुरु गिरधर मुनीश्वर से, भजन पद
पाम कर हरषे । त्वरित त्यागी बने घर
से सदा जय हो सदा जय हो ॥ पू ५ ॥
सर्व पत्नी प्रिया त्यागी हुये धरदेव
वैरागी । शुरुत शिष भार से लागी सदा
जय हो सदा जय हो ॥पू ६॥ कुटुम्ब ताको
सभी आकर रुकाये राज्य में भाकर ।
नहीं हैं ताप स्थिर मनमर सदा जय
हो सदा जय हो ॥ पू ७ । सच्चा वैराग्य
चितमांई तजे ना यद्यपि सुरथांई । सर्व
शुभ मत किये ध्यांई सदा जय हो सदा
जय हो ॥ पू ८ ॥ साल चालीस में संयम
लियो गुरु भार में शमदम । परिश्रम कर
पढ़े आगम सदा जय हो सदा जय हो

करें उपकृति ज्यों भास्कर, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पृ. २० ॥ बांसवाड़ा शहर सुन्दर, गुआसी साल में तरा पर। कथे गुण 'सूर्यमुनि' नमकर, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पृ. २१ ॥

स्व. जैनाचार्य श्री माधव मुनि महाराज के गुण कथन.

पूज्य माधव मुनि ज्ञानी, गयो हॉ जैन को हीरो। विशद विज्ञान गुणखानी गयो हॉ जैन को हीरो ॥ टेर ॥ तीव्र अभिलाषा है मन की, दयालु पूज्य दर्शन। तृपति नां होत नेत्रन की, गयो हां ॥ हीरो ॥ पृ १ ॥ अग्रजाती सुकुल वंशीधर तात सुख दाता। श्री-

का भक्त: माधव मुनीश्वर को। करी
कीरत दशों दिशा को सदा जय हो सदा
जय हो ॥ पृ १५ ॥ अरिल तन सत्र करे
माधव नाम माधव मतालव सन।
विदी धरमीं है शंकर द्विम सदा जय हो
सदा जय हो ॥ पृ १६ ॥ करी श्री संघ
निर्भमस करें मैं मत जियो मससस।
अपधि जिम मास हो उत्पन्न सदा जय
हो सदा जय हो ॥ पृ १७ ॥ रहियो एक
याम को पनसस रहि वृत्ति विशुद्ध चित
मन। पधारे स्वर्ग में भगवन् सदा जय
हो सदा जय हो ॥ पृ. १८ ॥ करें जो पूज्य
के सुमरन करें सब करम के बंधन।
मिले हैं सौख्य शिव माधम सदा जय
हो सदा जय हो ॥ पृ १९ ॥ विराजित
पूज्य के पद पर श्रीमन् पूज्य माधव वर।

करें उपकृति ज्यों भाखर, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पृ. २० ॥ बांसवाड़ा शहर सुन्दर, गुन्नासी साल में तहां पर । कथे गुण 'सूर्यमुनि' नमकर, सदा जय हो सदा जय हो ॥ पृ. २१ ॥

स्व. जैनाचार्य श्री माधव मुनि महाराज के गुण कथन.

पूज्य माधव मुनि ज्ञानी, गयो हाँ जैन को हीरो । विशद विद्वान गुणखानी गयो हाँ जैन को हीरो ॥ टेर ॥ तीव्र अभिलाषा है मन की, दयालु पूज्य दर्शन की । तृपति नां होत नेत्रन की, गयो हां जैन को हीरो ॥ पृ. १ ॥ अग्रजाती सुकुल ख्याता, वंशीधर तात सुख दाता । श्री-

मति रायकोर माता, गयो हो जैन को हीरो ॥ पृ २ ॥ सुगुरु श्री मगन मुनिवर के चरण रज शीस पै धर के। श्रवण उपदेश कर हरखे गयो हो जैन को हीरो ॥ पृ ३ ॥ हुवो वैराग्य लघु वय में, भये तल्लीन संयम में। रहे निन पठन पाठन में गयो हो जैन को हीरो ॥ पृ ४ ॥ हुवे कोविद विविध भाषा स्व-पर परमार्थ समझाता। प्रकट श्रुति भेद दरसाता गयो हो जैन को हीरो ॥ पृ ५ ॥ सुणी वाणी हर्षित थावें हृदय तृप्ति नहीं पावें। बोध में मग्न हो जावें गयो हो जैन को हीरो ॥ पृ ६ ॥ सहि सम्यक्त्व पद पावें पूज्य माधव मुनिराजे। रखियो मग्न जिन्व में जावें गयो हो जैन को हीरो ॥ पृ ७ ॥ हुरी पैनी हरिख भावें त्योंहि पावस

लख लाजे। ज्ञान मय भानु कर आजे,
गयो हां जैन को हीरो ॥ पू ८॥ पोत
सम हों तुम्हीं तारक, दयालु शांत रस
धारक। तुम्ही हो नाथ सुख कारक, गयो
हां जैन को हीरो ॥ पू ९॥ दिपायो जैन
शासन को, मिटायो भ्रम मुदिर तमको।
कई तारे नर धाम को, गयो हां जैन को
हीरो ॥ पू. १० ॥ भरोसा सर्व का था वह,
दिलासा सर्व का था वह। उजासा सर्व
का था वह, गयो हां जैन को हीरो ॥ पू.
११ ॥ शात मूर्ति सुखद ताकी, करूँ मैं
पासना जाकी। कहें यों 'सूर्यमुनि' दाखी
गयो हां जैन को हीरो ॥ पू. १२ ॥ गयो
हा जैन को इन्दु, गयो हा जेन को भा-
स्वर गयो हां जैन को वत्सल, गयो हा
जैन को आकर ॥ पू. १३ ॥

चौबीसी जिनस्तवन

तर्ज—हां म्हारा धर्म गुमानार ।

चौबीसी जिनवर ध्यावो रे भव भव पातिक दूर पलावो । संकट सब मिटाय सभी सुख सम्पत पावोरे ॥ टेर ॥ ऋषभ अजित सम्भव अभिनंदन सुमति पदम सुपारस चंदम । शशि सुविधी शीतल सुख स्यन्दम । श्री श्रेयांस श्रेयकरें, हरें भव दुख नित गावोरे ॥ श्री १ ॥ वासुपूज्य बहु भविजन कीना [विमल २ जस जग में लीना । अनंत अमित सुख आतम चीना । श्री धर्मनाथ जगताव नाम गुणकर ध्यावोरे ॥ श्री २ ॥ श्री शांतिनाथ जग शांतिदाता, श्री कुंथु अर मल्ली जग त्राता । मुनि सुव्रत नम पद

के ज्ञाता। नमी नेम शिव क्षेम करन को, भविक मनाओ रे ॥ चौ ३ ॥ श्री पार्श्व-नाथ पाव जगज्ञायक, महावीर शासन के नायक। गणधर साधु सकल गुण लायक। "मुनि सूर्य" कहे भवि भक्तियुत नित-सीस नमाओरे ॥ चौ ४ ॥

श्रीमहावीर स्तुति

तर्ज—काली कमली वाले तुम पर लाखों सलाम।

त्रिशलाजी के प्यारे, तुम हो मेरे सनम्। धरणी के उजियारे, तुम हो मेरे सनम् ॥ टेर ॥ यज्ञ में जलते जीव बचाया गौतम गणधर को समझाया। फणिधर को सुरलोक पठाया, ऐसे अधम उधारे ॥ तु १ ॥ सच्चे तारक तुम हो भगवन,

बहिन का बाहुबली को उपदेश

तर्ज---मेरे शम्भू त काशी ।

भैया क्यों ? कर बन में ध्यान किया। नाहक कष्ट अमित तन जान लिया॥ टेर ॥ बाहुबलि से बहिन यों आकर बचन कहने लगी। क्यों भ्रात तुम गजपे चढ़े दे ज्ञान समझाने लगी। करते बन में अनुपम आपक्रिया ॥ भै १॥ कर लोच तज के सोच सब, जग से निराले बन गये। अति कष्ट घाम रु शीत के, सब सहन कर दुर्बल भये। ठाढे रहकर सारे दुःख सया॥ भै २॥ यों ध्यान करते आपको, अब मास द्वादस होगये। छाई लता चहुँ ओर तन पक्षी के घर तुम बन गये। नहीं तन पे कुछ भी ध्यान दिया।

मैं ३। भगिनी पचम करके भयण, चल
त्रित सभे सोलम लगे। त्यागा सभी गज
अश्व को क्या ? त्यागना भोजन लगे।
चक्र भाम मतलपे धार लिया। मैं ४।
वैराग्य धर मन मोच के अभिमान का
मर्दन किया। मुनि बनमें पग को उठाया
ज्ञान केवल पागया। अनुपम ज्ञान सुधा
का प्याला पिया॥ मैं ५॥ तिहुंताप
व्याधि दूर कर सीमी अचल शिवसुंदरी।
'मुनिसूर्य' कहैं जस धन्य है शुभ सील
ममसूधी धरी। मब होय सफल पवकल
लिया॥ मैं ६॥

नेम प्रभु से देवकी राणी का सन्देह निवारण

तर्ज—कव्वाली ।

मैया श्रीदेवकीजी श्रीनेम से उचारे।
मन में हुवा है ज्यों संशय सब पूछ के नि-
वारे ॥टेर॥ अति मुक्त साधु मुझ से, कहा
सात पुत्र होगा। क्या वैन है ये झूठा,
नहिं झूट सो निकारे ॥ मै. ॥ १ ॥ वह
पुत्र कौन जननी, जाये कहो दयाला। इक
कृष्ण सुत हैं मेरे, कहें नाथ भर्म टारे
॥ मै ॥ २ ॥ सुन देवकी ? मुनि के, कहे
वैन सब सही हैं। षट् साधु लेन भोजन,
आये थे घर तिहारे ॥ मै. ॥ ३ ॥ थे पुत्र
ही वह तेरे, सुलसा के घर वढे हैं। जिन
वैन सुनके राणी, हर्षित भई अपारे ॥ मै

सति चेलणा कथन।

तर्ज—कल्याणी

श्रेणिक नृपत की राणी, श्री चेलणा सुज्ञानी। श्रद्धा अटल धरम में, धारी है जैन वानी ॥ टेर ॥ श्री वीर दर्श करके, आती थी निज भवन पे। निर्ग्रंथ एक देखा वन में अचल सुध्यानी ॥ श्रे. ॥१॥ दारुण सो शीत सहते, लख धन्यवाद देती। निशि घोर शीत पड़ती, रही कंथ साथ राणी ॥ श्रे. ॥२॥ रहे हाथ सोड बाहिर, तब साधु याद आया। क्या करते होंगे वह तो राणी कही यों वानी ॥ श्रे. ॥ ३ ॥ सन्देह पड़ा है नृप सुन, नर अन्य उर-वसा है। व्यभिचारणी है राणी, छुरि सेंतके समानी ॥ श्रे. ॥ ४ ॥ अन्तःपुर

धर्म्म प्रकाशा, आदेश नृप दिया यों। सुन के समय भैंरुजी बुद्धि से मान मानी ॥ श्रे ॥ ५ ॥ श्री वीर सम्मने को अधिक नमी सिधारा। श्री वीर राय सम्मुख सती वेसरा पधारी ॥ श्रे ॥ ॥ ६ ॥ समके हैं चित भूपत मने किया प्रकाशा। सम पुत्र मित्र भवन में चिंता हृदय में आनी ॥ श्रे ॥ ७ ॥ कहते समय से मा मा मूच्छा भरे ? किया क्या। मित्र मान दिन मुजाक चारित्र सौख्य पानी ॥ श्रे ॥ ८ ॥ सतियों में है "शिवमग अब पार न्यो सहेगा। हरिमन्य सूर्य" कहैं यों मतिगुण सनो मनानी ॥ श्रे ॥ ९ ॥

वीरस्तुति ।

तर्ज—कमली वाले ने ।

आनन्द दयामृत शांति का, रस पाया वीर महा प्रभु ने। भवनिधि तिरने का पथ सच्चा, वतलाया वीर महा प्रभु ने ॥ टेर ॥ घनघोर घटाएँ छाई थी, अज्ञान अविद्या की जग में। सत् ज्ञान का सूरज चमका के, समझाया वीर महा प्रभु ने ॥ १ ॥ जव हिंसावादी का होश गया, और जड़वादी का कोप गया। सव शत्रु का मन रोष गया, तव ध्याया वीर महा प्रभु ने ॥ २ ॥ वलिदान यहा पशु दीनों का, करते थे धर्म वता पापी। उनके ढोल का पोल खोल, भगवाया वीर महा प्रभु ने ॥ ३ ॥ आकर के लुटेरे डाकू ठग,

घन घोर के शोर मचाया था। उनकी सब लीला पवता के जगतारिणी वीर महा प्रभु ने ॥ ४ ॥ सत्य अहिंसा क्षमा शील अनुकम्पा धर्म दया करना। कहे 'सूर्य मुनि' यह पाठ हमें सिखलाया वीर महा प्रभु ने ॥ ५ ॥

रहनेमी प्रत्ये राजुल।

तर्ज—थांरी नहीं म्हारे वाली।

श्रीमति राजुलमार कहती यों सम झाय के ॥ टेर ॥ सुन देवरिया गज को तज के हां २, सरपे चढो मत जाय। क्यूं यों हरसाय के ॥ श्री. ॥ १ ॥ भोग तजी फिर भोग को चाहे हां २, सैंस-

तिन्हें धिक्कार। वमन कर खाय के ॥श्री ॥२॥ हे विषयांधे शुधवुध विसरी, हां २, मरन तुम्हें श्रेयकार। जीवन गमाय के॥ श्री ॥ ३ ॥ अपयश कामी मन लल-चाया, हां २. अब मन कावूलाय। उत्तम भव पाय के ॥ श्री. ॥ ४ ॥ जहां तहां सुन्दर कामनि लख के, हां २, मन चंचल ललचाय। संजम गमाय के ॥ श्री. ॥५॥ अंकुश सम सुन श्री रह नेमी, हां २, धर्म स्थानक के माय। बांधत मन लाय के ॥ श्री. ॥ ६ ॥ पढ़ के चढे सो उत्तम प्राणी, हां २, 'सूर्यमुनि' जिन वैन। कहें यों शिर नाय के ॥ श्री. ॥ ७ ॥

ढंढण मुनि ।

तर्ज—सीता भाभी सिरज का माजी।

लियो अभिग्रह ढंढण स्वामी । नित
पन्द्र में गुण धामी रे ॥टेर॥ मुनि गौचरी
नित नित जावे नहीं आहार ग्रह कहीं
पावोरे ॥ १ ॥ कोई शिर पे जल घट धारी
कोई जल में हाथ पखारी रे ॥ २ ॥ कोई
नारी मांगे खीरा कोई पोषक नारी धी-
रारे ॥ लि ॥ ३ ॥ किहां पूरदे नाज प
डायो किहां मोदन माहि बनायो रे ॥४॥
किहां पीसा गुन्थे नारी किहां कपण
मिस्या नरनारी रे ॥ ५ ॥ कोई पालने
दूध पिलावे किहां वारणां बंध दिखावे रे
॥ ६ ॥ किहां खीपण थी परनाली किहां
गावे गीत रसाली ॥ ७ ॥ कोई मुनि को

घर से काढे, कोई गाली देकर भांडेरे ॥ लि ॥८॥ किहां सूझतो आहार न पावे, मुनि देख २ फिर जावे रे ॥ लि ॥ ६ ॥ किहां ऊभा द्वार भिखारी, मुनि ,फिरता समता धारी रे ॥ १० ॥ किहां गर्भवती उठ देवे, सो आहार मुनि नहीं लेवे रे ॥ लि ॥ ११ ॥ छहँ मास लगे मुनि फिरिया, निज लब्धि को आहार न मिलिया रे ॥ १२ ॥ नहिं लाज दुजा का चाया, जाके 'सुर्य मुनि' शिर नायारे ॥ लि. ॥ १४ ।

चतुर्विंशति स्तवन ।

तर्ज—छोटी मटी सैयारे जाली ।

श्री चौवीसों जिनदेव, अरज अव धारिये ॥ टेर ॥ आदि अजीय संभव अभि-

नन्दन हां २, सुमति पद्म सुपास । चंद्र प्रभु तारिये ॥ श्री ॥ १ ॥ पुष्पदन्त शीतल जगनायक हां २, श्री श्रेयांश दयाल । जनम जर टारिये ॥ श्री ॥ २ ॥ वासुपूज्य श्री विमल जिनेश्वर हां २ अनन्त धर्म सुखकार । विघन निवारिये ॥ श्री ॥ ३ ॥ शांति कुन्थु अर मल्ली मुनिसुव्रत हां २, नमिनेमी गुणचन्द्र । विपत विदारिये ॥ श्री ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ महावीर जिनेश्वर हां २, यों चौबीसों महाराज । भविक भव तारिये ॥ श्री ॥ ५ ॥ जिन शासन में समदृष्टि धर हां २, कहैं सूर्य मुनि सिरसेरा । नेक सु निहारिये ॥ श्री ॥ ६ ॥

श्रावक विषे-चतुरंगचन्द्र राजा का दृष्टांत।

तर्ज—कव्वाली।

श्रावक हुए हैं ऐसे, जग से रहें निराले। डिगते नहीं धरम से, जिन पंथ शुद्ध पाले॥ टेर॥ थे कनकपुर के राजा, चतुरंग चन्द्र न्याई। श्री वीर दर्श करके, अघ पक को प्रजाले॥ श्रा॥ १॥ उपदेश सुण विरागी, व्रत द्वादशादि धारे। लख राज्य द्रव्य अस्थिर, उरकी सों गांठ गाले॥ श्रा॥ २॥ फिर भी विनय प्रभु से, करले नियम कराला। मुझ महिल में जहा तक, दीपक प्रकाश डाले॥ श्रा॥ ३॥ तब तक खड़ा रहकर, शुभ ध्यान

व्याकुलता में । नृप आय ध्यान कीना, गुण आतम के सम्भाले ॥ भा ॥४॥ नृप ध्यान देख दासी मद्धि दीप पुनभी देवे । ज्यों ज्यों ही तेल सींचे नृप मय धरी करावे ॥ भा ॥५॥ बीती है रैन सारी पग थंभ से हुवे हैं । कष्ट है खूब भीषा, नहीं ध्यान से चले है ॥ भा ॥६॥ आयुष किया पुरंत से सुर वासमें सिधारे । समके सो एक छिन में समभाव जो निहारे ॥ भा ॥७॥ शिव सौख्य फिर लहेगा सुरिनन्द "सूर्य" भावे । जो धर्म धोरी श्रावक दुर्गति के दुख टारे ॥ भा. ॥८॥

क्रोध विषे।

तर्ज—छकि मत कर गर्व दिवानारे।

क्रोध मत करो सयानारे, क्रोधी पावे नरक ठिकाना। क्रोध किया दुख महा, अन्त में हो पछताना रे ॥टेर॥ दीपायन कर क्रोध कराला, संचित तप को छिन में जाला। क्रोध हलाहल विषधर काला। क्रोध कषाई महा वैन ये, जिन फरमाना रे ॥ क्रो. ॥ १ ॥ थर थर अङ्ग सब धूजन लागे, सद्गुण क्रोध भूत से भागे। सज्जन वरी हो जिन आगे। त्रण भारत होय छिनक में, प्राण गवांना रे ॥ क्रो ॥ २ ॥ निज परको क्रोधी दुखदाई, प्रतीत जांकी जाय विलाई। सुध बुध संपत सर्व नशाइ। अच्यंकारी भट्टा पाइ, विपत नि-

धामारे ॥ मो ॥ ३ ॥ क्रोध तिमिर जिनके घन छावे ज्ञान ध्यान गुण मान भुलावे । क्षमा रूप नग श्रीम दिखावें । कहें शुद्ध अविचार वचन में जहर समाना रे ॥ मो ॥ ४ ॥ उपसम रसकर पान महात्मा क्रोध रूप अरिहना मयामा । क्षमा शस्त्र गहि तज अभिमाना । अरिहन्त मुनि सूर्य करे भजिये भगवाना रे ॥ क्रो ॥ ५ ॥

क्षमापना ।

त — जिनवी श्री सद्गुरु के वाणी ज्ञान की थी ।

ध्याग पाक्षिक पर्व अराधी वैर निवारिये रे । सब से समत खमापना करी क्षमागुण धारिये रे ॥ टेर ॥ श्री अरिहन्त सिद्ध आचार्य साधु पाठक अघीधी ।

ध्याओ शन अठ सब गुण धार, संघ साधर्मी विनय विचार। यदि जो करी कषाय लिगार। त्रिविध करण जोग शुद्ध लाय, कषाय विसारिये रे ॥ ध्या ॥ १ ॥ वसियो लक्ष चोरासी जोन, विविध भव संचरीजी। क्षमापन कीधे हो भव नाश, होय बिन कीधा नरक निवास। सब से क्षमो क्षमाओ खास। करके अघ अष्टा-दश भविक, जन्म मत हारिये रे ॥ ध्या ॥ २ ॥ छूटे सरल पणा से वैर, कहियो जग नाथजी रे। क्षमा है मोक्ष, क्रोध संसार। क्रोध वश धर्म क्रिया निस्सार। सब से मैत्रियता दिलधार। तजता क्रोध होय जग पूज्य, अवश अब धारिये रे ॥ ध्या ॥ ३ ॥ करिये धर्म स्नेह सब साथ, क्षमागुण सेविये रे। हुए श्री अभय उदाई

राय नृपति चण्डप्रद्योत खमाय। परस्पर वैर विरोध मिटाय। समता सम्यक्त्व के साथै कुरगडु मानिये रे ॥ प्या ॥
॥ ४ ॥ श्री चन्दन बाला को मृगावतीजी खमावतांजी। लीनो केवल ज्ञान निधान पामती समकित भाव महान्। उत्तम क्षमा भाव उर ध्यान। "मुनि सूर्य" नम्न सूरि नमी कहे भव तारिये रे ॥ प्या ॥ ५ ॥

सुशीला स्त्री विषे।

तर्ज—(रसिया)।

पहलों प्रथम की सतियों का वरणन सुनिये ध्यान लगाय। सुनिये ध्यान लगाय कि पहलों शील शृङ्गार सजाय ॥ टेर ॥ महासती सीतापति छाये रहती

जंगल मांय । राजपाट सुख भोग छोड़ के, पति के पद कंज नाय ॥ व.॥१॥ आल सुभद्रा के शिर ऊपर, दीना सास चढ़ाय । शील सहाय सुर आय करी, सब संकट दियां नशाय ॥ व. ॥२॥ राजकुमारी चन्दन वाला, घर घर रही विकाय । शील धर्म छोड़ा नहीं मन से, ईश चरण चित लाय ॥ व. ॥३॥ राणी धारणी को एक दुष्टी, विषयी वचन सुनाय । शील रखन के काज जीभ को, काटी स्वर्ग सिधाय ॥ व. ॥ ४ ॥ दमयंती पति साथ विपन में कष्ट महा तन पाय । अर्ध चीर निज फाड़ पति को, दीना आप ओढाय ॥ व ॥ ५ ॥ तारा राणी को निज पति ने, बेची बीच बजार । संकट सर्व सहन सती ने, कियो धर्म उरधार ॥ व ॥ ६ ॥

राजमति पति भक्ति कारण चढ़गई गढ़ गिरनार । दूजा वर नहीं चाहा हृदय में सीमा संयम भार ॥ च ॥ ७ ॥ चौसठ पर्व पति सह द्रौपदी पाई दुःख प्रचण्ड । दुष्ट पद्मोत्तर घर पै रह के पाल्यो शील अखण्ड ॥ च ॥८॥ सती अञ्जना के शिर पति ने ठोकर गई लगाय । सासू आल चढ़ाय निकाली फिरती वन वन जाय । च ॥ ६ ॥ सती जयती वीर प्रभु को औषध दान बेराय । ब्राह्मी सुन्दरी वीर पासने भ्राता को समझाय ॥ च ॥ १० ऐसी ऐसी होगई सतियें कहां तक करें जताय । 'सूरिमन्द मुनि सूर्य" सतीगुण गौरव कथ के गाय ॥ च ॥ ११ ॥

एला पुत्र वृत्तांत।

तर्ज—कव्वाली

है धन्य नर जगत में, वश काम राज करते। हटते नहीं शियल से, तिहुँ योग शुद्ध धरते ॥ टेर ॥ धनदत्त सेठ का सुत एलायची कंवर था। नटवी स्वरूप लख हो, विषयांध भान हरते ॥ है. ॥१॥ माना नहीं किसी का, पितु मात नार तज के। बीते हैं वर्ष बारा, नट संग जिनको फिरते ॥ है. ॥ २ ॥ सीखी है नृत्य विद्या, पुर पुर में खेल करते। कर्मों के खेल जबरे, नहिं देर हो विगड़ते ॥ है. ॥ ३ ॥ चढ वंश डोर पे नट, था नाचता सभा

में । नटवी का रूप लखा नृप सद्भाव को बिसरत ॥ है ॥ ४ ॥ मैंहूँ म दान नट को नीचे गिरेगा आकर। तब तो हमारी नारी होगी ये नट के मरते ॥ है ॥ ५ ॥ मुनिराज उस समय में फिरते लखा है नट ने। है धन्य जग में साधु, भव पंक दूर हरते ॥ है ॥ ६ ॥ निज रूप उर विचारा पर द्रव्य को बिसारा। पाया है ज्ञान केवल परिणाम शुद्ध बढ़ते ॥ है ७॥ प्रतिबोध नृप को दीना निज आत्म काज कीना। "मुनिसूर्य" पद्य गाया है धन्य जो सुमरत ॥ है ॥ ८ ॥

पहले के श्रावक।

तर्ज—भारत देश में जी कैसी ? ।

हमारे पूर्व के जी, ऐसे ऐसे श्रावक होगये ॥ टेर ॥ दैत्य आकर कामदेव को, दुख दीना अति घोर। तो भी धर्म न छोड़ा मन वच, मिलते दैत्य करोड़ ॥ ह पुण्या श्रावक सवा रुपये से, करते थे व्यापार । तृष्णा तज निर्लोभी होकर, करते सद् व्यवहार ॥ ह. ॥ २ ॥ सेठ सुदर्शन प्रभु आगम सुन, वंदन को चित-चाया । मरने का भय बड़ा यक्ष का, वह भी नां उरलाया ॥ ह ॥ ३ ॥ राय प्रदेशी को समझावन, किया मन्त्री उपचारा । केशी मुनि संयोग मिलाकर, मिथ्या तिमिर निवारा ॥ ह ॥ ४ ॥ सु-बुद्धि प्र–

धान भूप को पुद्गल रूप बताया। पानी का परिचय बतला के मिथ्या दूर नशाया ॥ ह ॥५॥ कार्तिक सेठी नास्तिक वरषे निजशिर मांहि झुकाया। चुम्बक दिया ताप सम तुरत समझावे उरलाया ॥ ह ॥६॥ विजय कुंवर और विजया कुंवरी एक-स्थानम के मांहि। ब्रह्मचर्य एक शय्या सोकर पाला द्युष समतांई ॥ ह ॥ ७ ॥ चतुरंगचन्द्र भूपाल असिमह किया खड़ा हो ध्यान। सूत उतर पांचोंपि आया रहा अचल जिन ध्यान। ह ॥ ८ ॥ भय-ऋषभ श्री आदिनाथ को इक्षु रस बहि गया। शंख पोकली श्रावक आदि, तन मन धर्म रंगाया ॥ ह ॥ ९ ॥ शरण परेवा रखकर नृप ने काट दिया निज मांस। शांतिनाथजी हुए तीर्थंकर मेट दिया

जगन्नाश ॥ ह. ॥ १० ॥ निन्हव गोशाला समझाता, दृढ़ रहे आर्द्रकॅवार । सूर्ययशा नृपदेवी वश नहीं, हुये रहे वृतधार ॥ ह. ॥ ११ ॥ मॅडुक श्रावक प्रश्न पूछ के, निर्ग्रंथ धर्म छिपाया । पिंगल भी स्कंधक समझा के, वीर चरन सिरनाया ॥ह. ॥१२॥ सूलि सिंहासन कियो सुदर्शन, शील प्रभाव वनाया । नृप प्रदेशी निज नारी पे, समता रस उरलाया ॥ ह ॥ १३ ॥ विहल कंवर चेटक राजा के, शरणागत वह आया । राजा विभव की करी न परवा, सुजस जग में पाया ॥ ह ॥ १४ ॥ ऐसे ऐसे हो गये श्रावक, कहां तक करें वयान । सूरिनन्द 'मुनि सूर्य' श्राद्ध का, किंचित कीना गान ॥ ह ॥ १५ ॥

मनगुप्ति पे जिनदास श्रावक।

तर्ज—[illegible]।

मातंग मत्त मन ये करते हैं धीर पथ में। धरते अचल धरम को रमते सुध्यान रस में ॥ टेर ॥ जिनदास नाम श्रेष्ठि चम्पानगर में रहता। जिन धर्म रत जिसके उछला मनोगुप्ति नय में ॥ मा ॥ १ ॥ दिन अष्टमी का पौषध कीना है शून्य घर में। जिनकी थी नारकुलटा रानी विषय के विष में ॥ मा ॥२॥ लेकर मित्रों में परनर उस शून्य घर में आई। डाला पलंग वहाँ पर होकर मदा हृदय में ॥ मा ॥ ३ ॥ पति ध्यान धर खड़े थे पग में गिरा भी पाया। पग कील से बिंधाया रहे ध्यान के सुरस में ॥ मा ॥

४॥ छूटी हैं खून धारा, हुई वेदना अतुल ही। निज नार कृत्य लखभी, नहीं क्रोध के धगस में ॥मा. ॥ ५ ॥ रे ? जीव कौन किस के, होते नहीं जगत में। ले भोग कृत्य तेरे, वांधे हँसी विघश में ॥ मा. ॥ ६ ॥ निज देह तज उसी क्षण, पाये सुरग वैमानी। पति देह लख विचारे, धृग भोग के विलस में ॥ मा. ॥ ७ ॥ सुरबोध आय दीना, कहें सूर्य धन्य प्राणी। मन वश करें जिन्हों की, कीरत दशोंहि दिश में ॥ मा ॥ ८ ॥

पंच विषे ।

राग—रसिया ।

करते पंच प्रपंच न रंच पंच सच सत्य सुनाते हैं। सत्य सुनाते हैं पंच परमेश्वर कहाते हैं ॥ टेर ॥ पूर्वज के पंचों का बरणन करते करके हाल । प्राण जाय पर सत्य न आवें झूठ के ये काल । एक भूप से न्याय बना नहीं रखता सत्य सम्भाल । सजीव कहैं दीजे पंचन को देंगे सत्य हवाल । पंचों को परमेश्वर भी पत्ना सभी लगाते हैं ॥ करते ॥ १ ॥ भूप कहैं मुझ से हैं कैसे, पंच अधिक सत ध्यान । न्याय सुधारे मेरा कैसे, हैं परमेश्वर समान । पक्ष परीक्षा करने कारण बुल-वाये निजध्यान । छिपा हाथ में मोती

एला पुत्र वृत्तांत।

तर्ज—कव्वाली

है धन्य नर जगत में, वश काम राज करते। हटते नहीं शियल से, तिहुँ योग शुद्ध धरते॥ टेर॥ धनदत्त सेठ का सुत एलायची कंवर था। नटवी स्वरूप लख हो, विषयांध भान हरते॥ है. ॥१॥ माना नहीं किसी का, पितु मात नार तज के। बीते हैं वर्ष बारा, नट संग जिनको फिरते॥ है. ॥ २ ॥ सीखी है नृत्य विद्या, पुर पुर में खेल करते। कर्मों के खेल जबरे, नहिं देर हो बिगड़ते॥ है. ॥ ३ ॥ चढ वंश डोर पे नट, था नाचता सभा

में। नटवी का रूप तज नृप सद्ज्ञान को विसरते ॥ है ॥ ४ ॥ देखूँ न दान नट को नीचे गिरेगा आकर। तब तो हमारी मारी होगी ये नट के मरते ॥ है ॥ ५ ॥ मुनिराज उस समय में फिरते सवा है नट ने। है धन्य जग में साधु, अघ पंक दूर हरते ॥ है ॥ ६ ॥ निज रूप उर विचारा पर द्रव्य को विसारा। पाया है ज्ञान केवल परिणाम शुद्ध करते ॥ है ७॥ प्रतिबोध नृप को दीना निज आतमकाज कीना। "मुनिसूर्य" पद गाया, है धन्य जो सुधरते ॥ है ॥ ८ ॥

पहले के श्रावक।

तर्ज—भारत देश में जी कैमी ? ।

हमारे पूर्व के जी, ऐसे ऐसे श्रावक होगये ॥ टेर ॥ दैत्य आकर कामदेव को, दुख दीना अति घोर। तो भी धर्म न छोड़ा मन वच, मिलते दैत्य करोड़ ॥ ह. पुण्या श्रावक सवा रुपये से, करते थे व्यापार । तृष्णा तज निर्लोभी होकर, करते सद् व्यवहार ॥ ह. ॥ २ ॥ सेठ सुदर्शन प्रभु आगम सुन, चंदन को चित-चाया । मरने का भय बड़ा यद्य का, वह भी नां उरलाया ॥ ह ॥ ३ ॥ राय प्रदेशी को समभावन, किया मंत्री उपचारा । केशी मुनि संयोग मिलाकर, मिथ्या तिमिर निवारा ॥ ह ॥ ४ ॥ सु-बुद्धि प्र–

धाम भूप को पुत्रगल रूप बताया। रानी का परिचय बतला के मिथ्यातूर नशाया ॥ ह ॥५॥ कार्तिक सेठी नास्तिक करके निजशिर सीर्हि झुकाया। तुम्ब दिया ताप समे तुकर समझाये उरलाया ॥ ह ॥६॥ विजय कंवर और विजया कंवरी गृहस्थाश्रम के मांई। ब्रह्मचर्य एक शय्या साकर पाला तुम अमलाई ॥ ह ॥ ७ ॥ चतुरंगसम्म भूपाल असिमह किया अन्त हो ध्यान। मूल उतर पांचोंपि आत्मा रहा अचल जिम भान। ह ॥ ८ ॥ अय कंवर भी आदिनाथ का इक्षु रस बहिराया। श्रीक पाकली श्रावक आदि, तन मन धर्म रंगाया ॥ ह ॥ ९ ॥ शरण परेवा रखकर भूप ने काट दिया निज मांस। शांतिनाथजी हुए तीर्थंकर मेट दिया

जगत्राश ॥ ह ॥ १० ॥ निन्हव गोशाला समझाता, दृढ़ रहे आर्द्रकँवार । सूर्ययशा नृपदेवी वश नहीं, हुये रहे वृतधार ॥ ह ॥ ११ ॥ मॅडुक श्रावक प्रश्न पूछ के, निर्ग्रंथ धर्म दिपाया । पिंगल भी स्कंधक समझा के, वीर चरन सिरनाया ॥ह ॥१२॥ सूलि सिंहासन कियो सुदर्शन, शील प्रभाव वताया । नृप प्रदेशी निज नारी पे, समता रस उरलाया ॥ ह ॥ १३ ॥ विहल कंवर चेटक राजा के, शरणागत वह आया । राजा विभव की करी न परवा, सुजस जग में पाया ॥ ह ॥ १४ ॥ ऐसे ऐसे हो गये श्रावक, कहा तक करें वयान । सूरि-नन्द 'मुनि सूर्य' श्राद्ध का, किंचित कीना गान ॥ ह. ॥ १५ ॥

मन गुप्ति पे जिनदास श्रावक।

तर्ज—कव्वाली।

मातंग मत्त मन ये करते हैं धीर वश में। धरते अचल धरम को रमते सुज्ञान रस में॥ टेर॥ जिनदास नाम श्रावक चम्पानगर में रहता। जिन वैन पन जिनके उमगा मनोरथ मन में॥ मा॥ १॥ तिस अष्टमी का पौषध कीना है शून्य घर में। जिसकी थी नारकुलटा राची विषय के विष में॥ मा॥ २॥ लेकर मित्रों में परनर उस शून्य घर में आई। डाला पलङ्ग वहां पर होकर मदा हरण में॥ मा॥ ३॥ पति ध्यान धर खड़े थे, पग में गिरा सो पाया। पग कील से बिंधाया रहे ध्यान के सुरस में॥ मा॥

४॥ छूटी हैं खून धारा, हुई वेदना अतुल ही। निज नार कृत्य लखभी, नहीं क्रोध के धगस में ॥मा. ॥ ५ ॥ रे ! जीव कौन किस के, होते नहीं जगत में। ले भोग कृत्य तेरे, बांधे हँसी विवश में ॥ मा. ॥ ६ ॥ निज देह तज उसी क्षण, पाये सुरग वैमानी। पति देह लख विचारे, धृग भोग के विलस में ॥ मा. ॥ ७ ॥ सुरबोध आय दीना, कहें सूर्य धन्य प्राणी। मन वश करें जिन्हों की, कीरत दशोंहि दिश में ॥ मा. ॥ ८ ॥

पंच विषे।

तर्ज—रसिया।

करते पंच प्रपंच न रंच कभी सब सत्य सुनाते हैं। सत्य सुनाते हैं पंच परमेश्वर कहाते हैं॥ टेर॥ पूर्वज के पंचों का परपन कहते करके हास। माय आय पर सत्य न आवें झूठ के ये फास। पक्ष भूप हों न्याय बना नहीं रखता सत्य सम्मान। सजीव करें दीजे पंचन को देंगे सत्य इमान। पंचों को परमेश्वर भी सभा सभी लगाते हैं॥ करते ॥ १ ॥ भूप कहें मुझ से हैं कैसे पंच अधिक सद् ज्ञान। न्याय सुधारे मेरा कैसे हैं परमेश्वर समान। पक्ष परीक्षा करने कारण भूप-पाये निजधाम। छिपा हाथ में मोती

राजा, देता यों फरमान। मेरे हाथ मे क्या है, तुमको, सत्य जताते हैं ॥ क. ॥२॥ सुन यों पंच विचारे यहां पे, करना कौन उपाय। विना इल्म से कैसे कहना, अब तो इज्जत जाय। मौन कहां तक बैठे रहेंगे, खुलके नही सुलझाय। पक्ष छोड़ के कीना हमने, न्याय सत्य दरसाय। कभी न रिश्वत लीनी किसका हृदय दुखाते हैं ॥ क ॥३॥ परमेश्वर का डर मन लाके, भरी न झूठी साख। परदारा को माता समझी, परधन माना खाक, पंचायत खोटी नहीं कीनी, वचन सत्य एक भाख। अब तो निर्भय होके बोले, दिल है अपना पाक। ओठा सवही लेय भरोसा, पक्ष पे लाते हैं ॥ क ॥४॥ लाल कहो मिलके सब पञ्चों, साच आंच नहिं आय। राजा

न्यासो मुट्ठी भय तो, लाल हाथ के मांय।
राजा कहे भिखारी चोखो, गये शुभ
विमराय। मीन मेख नहीं भूपति यामें
नयके सत्य महाय। बार बार नृप बोले
तुमरी पात विख्यात है ॥ क ॥ ५ ॥ अब
तो पक्ष हुये पर पक्षी मुट्ठी खोली राय।
मोती बदल हुई लाल हाथ में, सब लख
अचरज पाय। प्रत्यक्ष सत्य परखा सब
जनने माना पक्ष सवाय। सच्चे का
सुर होय सहायक सत्य सदा हर लाय।
सूरिमन्त्र 'मुनिसूर्य' पक्ष गुण गौरव गाते
हैं ॥ क ॥ ६ ॥

दोष की लावणी।

तर्ज—लावणी अष्टपदी।

धन्य श्री जग में अनगारा, कठिन व्रत धारे असिधारा ॥ टेर ॥ छोड़ आरंभ गृही दीक्षा। सुगुरु की ग्रहण करे शिक्षा। करे त्रस थावर की रक्षा। लेय सो निरवद नित भिक्षा ॥ दोहा ॥ दोष बयालीस टाल के, याचे शुद्ध आहार। पञ्च दोष मण्डल का टाले पाले संजम भार ॥ कहूँ सब करके विस्तार ॥क १॥ समुच्चय साधु काज धारी, बणकर आहार करे चारी। वही सो आधा करम भारी, आहार सो नहीं ले अनगारी ॥ दोहा ॥ एक साधु के नाम से, उद्देशिक कहिवाय। शुद्ध अशन में अशुद्ध मिल्या सो, पूति कर्म

हो जाय। गृहस्थ मुनि काज मिश्र धारा
॥ क ॥ २ ॥ साधु के काज थाप राखे।
पाहुडा अरु थपसम भाखे। अन्धेरे प्रभु
धालो लाके। मुनि नहीं लेवे मों आके।
॥ दोहा ॥ मोल उधारो लाय के अदल
बदल कर लेन। घरसे लाकर देय सामने,
ऊपरी कोठी देन ॥ विषम सीढ़ीको परि-
हारा ॥ क ॥ ३ ॥ निबल से कोय अशन
लेवे पांति हि समपी एक देवे। आहार
में आहार अधिक खेवे अशन ना मुनि
पर नहिं लेवे ॥ दोहा ॥ सोल दोष जब
गमन के श्रावक देय लगाय। उत्तम
श्रावक दोष टाल के मुनि को शुद्ध बहि-
राय। रहैं सब दोषों से न्यारा ॥ क ॥
॥ ४ ॥ अकस्पमिक मुनि को जो बहिराय
त्रिन्हो के अक्षपायुबधाय। गोप यों लोके

साधु लगाय, रमाने वाले चित्र बतलाय ।
॥ दोहा ॥ लाड़लड़ावे धाय सम, सगा
सेन की बात । समाचार कहें जहां तहां
के दूत दोप कही बात ॥ भाव है मिले
सरस आहारा ॥ क ॥५॥ भूकम्प उत्पात
गगन लक्षण, व्यंजन तन फुरकन स्वरहि
सुपन । निमित्त यह आठों का वरणन,
बता नहीं अशन लेय मुनिजन ॥ दोहा ॥
जाती गोत्र बताय के, सेवक सम आधीन ।
वणिमग जसे बचन निकाले, होय दया
मय दीन । करे है औषधि उपचारा ॥ क
॥ ६ ॥ क्रोध कर भय देवे भारी, कृपण
रे ! होगा तुज ख्वारी । उलट परिणामी
दातारी, कौन दे तुम बिन ये आहारी ।
मान चढ़ा ऐसे कहे, दूध दही मन भाय ।
सुख से छाश मांगे रसलोभी, बचन बदल

धरसाय । कपट कर कहमे में कुशियाय ॥ क ॥ ७ ॥ सरस ले दाता से बोले, पुण्य फल कथन करी ओले । दान सम अपर नहीं तोले लोभ वरकाय यों मन डोले । ॥ दोहा ॥ पहिले या पश्चात से यश बोले अधिकाय । विद्या मन्त्र जन्त्र कर लेवे, वशीकरण बतलाय ॥ शकुन या ज्योतिष उच्चाय ॥ क ॥८॥ चुम्ब चुर्ण योग कहीं रंजे संजम यों आहार काम भंजे । सोल यों दोष नहीं गंजे जिनेश्वर आज्ञा को भंजे ॥ दोहा ॥ साधु श्रावक मिल लगे, एषण दोष विचार । गृहस्थ साधु संशय हुए भोजन सचित्त टार ॥ अयोग्य भाजन से दे दाता ॥ क ॥ ९ ॥ अशुद्ध पे शुद्ध आहार डाले शुद्ध पे सचित्त को भासे । अपंग दातार भमी ढाले, मिश्र

वस्तु को नहीं झाले ॥ दोहा ॥ विन परि-
णन हैं शस्त्र से, लीपण घर ततकाल।
टपकां पड़तां आहार ले, दश पण का
टाल ॥ पालते संजम श्रेयकारा ॥ क. ॥
१० ॥ वस्तु संयोग सभी टारा. करें परि-
माण सहित आहारा। प्रशंसा करके
अङ्गारा, खाय नही निन्दा परिहारा।
॥ दोहा ॥ छह कारण से आहार को,
तजें करें बुधवान। पंच दोष टाले मंडल
का, जिन आज्ञा परिमान ॥ "सूर्य मुनि"
कहें यों सुविचारा ॥ क ॥ ११ ॥

भगवान श्री वीर जयन्ती।

तर्ज—हरिगीत छन्द।

है यह जयन्ती तीर्थंकर भगवान
श्री जिनवीर की। है ज्ञान दाता सकल
सुखकर मेटने भव पीर की दिन आज
यह आनन्द का है सर्व जीवों के लिए।
सद्धर्म का उत्थान हो अब भव्य जीवों
के हिये ॥१॥ ये जन्म श्री जिनवीर का
क्या क्या तुम्हें बतला रहा। क्या कार्य
करने का अवश्य प्रत्यक्ष सो बतला रहा।
कुछ देखलो भी ध्यान दे उस वीर के
इतिहास को। खुल जायगा भ्रम तम
सभी तब पाओगे सुप्रकाश को ॥ २ ॥
है कौन श्री जिनवीर अथवा कौन हैं
उनके पिता। है कौन त्रिशला भगवती

या कौन है उनके हित ॥ खुद आतमा श्री वीर हैं, पुनि ज्ञान है अपना पितु । माता दया है भगवती, था सत्य है सच्चा हितू ॥ ३ ॥ है जन्म ज्यों ही वीर का, ऐसे ही अब तुमने लिया । जा धर्म के मैदान में, क्यों कर है पीछा पग दिया ॥ कैवल्य दर्शन ज्ञानमय है, आतमा अपनी सदा । है आत्मबल भी वीर जैसा, मानते हो क्यों जुदा ॥४॥ उपदेश क्या था वीर का, कर्तव्य क्या करने लगे । निज उच्च जीवन कार्य में, नहीं नीन्द से अब तक जगे ॥ जो हैं पतित निज भ्रात पे, तन धन सभी अर्पण करो । बनते विधर्मी हैं कई निर्नाथ का पालन करो ॥ ५ ॥ होवे मुबारिक आज का दिन, सर्व सज्जन के लिये । वात्सल्यता पुनि ज्ञान वृद्धि, संप

हो सब के हिये ॥ पावन पतित जगनाथ
भगवन वीर के पदपंकज गहो। सब
मनुष्य मिलकर एक ध्वनि से वीर की
सब जय कहो ॥ ६ ॥

अमृत कहाँ ?

तर्ज़—हरिगीत छन्द।

मिल पंडितों ने बात यह ठाना कि
अमृत है कहाँ ? कहा एक ने मधु में
सुधा तासे कि मीठा है महा ॥ है नव-
वधू मुख पै सुधा जसचाय सब मूर्ख
कहैं। शशि में सुधा निधि में सुधा
मरु स्वर्ग में कोई कहैं ॥ १ ॥ जो
स्वर्ग पै पीयूष हो तो स्वर्ग क्यों

होते नये । पीयूष कमला में रहा है, इसलिए सब जन चहें ॥ धन में यदि अमृत रहे तो, त्याग क्यों मुनिजन करें। सम्पूर्ण अमृत मय भरी, वाणी प्रभु की है सिरे ॥२॥ निज और पर को शांतिहो, वाणी अचल सब जन कहें। सच्चा ही अमृत है यही, माना सभी धन धन कहें। वाणी सुधा का पानकर, प्राणी असंख्या तिर गये। "मुनि सूर्य" सुख सम्पत्ति अटल, पावे अमित धारे हिये ॥ ३ ॥

तप ।

तर्ज—हरिगीत छन्द ।

उपवास कर भूखा रहन में तप समझते नर कई। सरदी सहन और कड़-

कपाती धूप आमे पर कई ॥ कोई खड़े पर्वत में रहते अचल तप मानते । तप रेत पे लड़ आमे से क्रोध लड़कना जानत ॥१॥ म्यान कई मोह फील प या मागते स्वागी लिया । पीते कई रक्त घोल कै करते भ्रमण चारों दिशा ॥ गो मूत पीते मिट्टी का या खाय खाते मोद से । नख को बढ़ाते काटते रहते पुरानी सोच से ॥२॥ तप ! बाल रखने में कहें या मूण्ड मगडवाना कहें । भस्मी लगाने में कहे या दंड रखने में कहें ॥ ऐसा अ-धूरा अर्थ कई लोगों के दिल में घुस गया । परमार्थ क्या उपवास का सच्चा हृदय से खम गया ॥३॥ जो जो रही भूलें उन्हें मिस आत्म मोगुण देखिये । मद क्रोध कामादिक रिपु जिनको जरा अब

लेखिये ॥ अभ्यंतरादि दुर्गुणों को मेट के सद्गुण धरे। उत्कृष्ट तप यह जानिये, संसार सागर से तिरे ॥ ४ ॥

लावणी उपदेशी।

तर्ज—बहरे तवील।

मन सोचे नही पड़ा होके भरम,
मद मोह नशे में हुआ बे शरम।
मुनि वैन अमोल सुनाते परम,
मतकर गुनहा को तू हो बेरहम॥टेर॥
महावीर भज नम जिनके कदम,
महवूव हमारा है वीर सनम्।
मत गरीबों पे कर ए सितमगर सितम,
मिसाले सुपन हैं संसार अलम।

मगन बस अपने भक्त के प्रियतम
 मिट जायगा तेरा जो कतरे अपनम।
मुनि सुख कहें पढ़ो जैन इल्म,
 मिलती है उन्हें सुख सम्पत्ति हरदम। ४

स्वार्थ।

छन्द—हरिगीतिका छन्द।

जो दीन निर्धन देख के नर गर्व हीन निवारता। होवे अशुभ तब दीनता के दीन ठाकर मारता॥ कुछ पाय विद्या गर्व धर सब गर्व में संहारता। संयोग में इतराय है सो अन्त आँसू डारता॥ १॥ नर स्वार्थ में होकर विवश नहीं कार्य करने का करें। पहला शुभाशुभ का

नहीं, कुछ भान भी सद्बुध हरें ॥ सब मित्र होते शत्रुवत्, इस स्वार्थ के व्यवहार पर। हा! जिस जगह हम देखते, बस स्वार्थ ही आता नजर ॥ २ ॥

ईश-प्रार्थना।

तर्ज-हरिगीति छन्द।

हे ईश! सम्पत्ति पाय के, सन्तोषता आई नहीं। आपत्ति पाकर के तथापि, धैर्यता ध्याई नहीं ॥ थी सम्पत्ति मुझ पास में, आपत्ति जब टाली नहीं। आपत्ति पाकर सम्पत्ति की, बात कुछ भाली नहीं। हे वीर तेरे बालकों पे दृष्टि कर अब तो जरा। जो डूबते भव भ्रम

दिये कर पार ताको जिनवर। कुछ शांति भी मिलती नहीं तेरे बिना अब तो कहीं। विश्राम दे अब दास का, ले दीन की अरजी यही ॥ २ ॥

चतुर्विंशती स्तवन।

राग—मेरे मन तू क्या जाने शुभ।

नित चौबीस जिन गुण गाया करो। भव्य भक्ति से ध्यान लगाया करो ॥टेर॥ श्री आदिनाथ अजीत सम्भवनाथ अभिनन्दन नमो। सुमति सुपद्म सुपार्श्व जिन श्री चन्द्र सुखकर हैं नमो ॥ धर सुविधी सुबुद्धि लाया करो। नि ॥ १ श्री शीतल श्रेयांस जिन श्री वासुपूज्य हृदय धरो।

विमल अनन्त जिन धर्म भज भविभाव से कलिमल हरो ॥ सब राग रु रोष मिटाया करो ॥ नि. ॥ २ ॥ श्री शांति-जिन कुन्थु अरह प्रभो मल्लि जिन जग राजता । नमियेसु मुनि सुव्रत प्रभो नमि-नेम जग यश गाजता ॥ पद पार्श्व रु वीर के ध्याया करो ॥ नि ॥ ३ ॥ अरिहन्त जिन चौवीस यों सुनिये विनय मम जग-पति । श्री सूरिनन्द 'मुनि सूर्य' यों याचे अमित सुख सम्पत्ति । प्रभो जिनदास अनाथ निभाया करो ॥ नि. ॥ ४ ॥

ईश प्रार्थना ।

राग—प्रभात ।

अपनी भक्ति का रास्ता बताओ मुझे । हित आतम का भान कराओ मुझे ॥टेर॥ भमता रहा नाना-विधी तेरे बिना संसार में । हो मोह वस अज्ञान में रहा डूबता मझधार में ॥ सुखसादि अनन्त दिखाओ मुझे ॥ अ ॥ १ ॥ मिथ्यात्व में तल्लीन हो सब प्राणियों का मैं किया । चैतन्य जड़ एक मान के नानाविधि संकट लिया ॥ हे नाथ अनाथ बचाओ मुझे ॥ अ ॥ २ ॥ धर पीत श्याम विविधविध कई पट पहिर के भूषन किया । भट सा बनाया ख्याल तो भी काम ना किंचित् भया ॥ अब शुद्ध स्वरूप लखाओ मुझे ॥ अ.॥३॥

समझा हृदय में खूब अव तो जन विन सव फेन है। श्री सूरिनंद पसाय से लहि शांति की शिव लेन है॥ वैरी कर्मों से दूर भगाओ मुझे॥ अ.॥ ८॥

तर्ज—जमाना रंग बदलता है।

क्षमा सकल सुखकार, सार शिव सौख्य दिखाती है॥ टेर॥ प्रथम धर्म लक्षण बतलाया, क्षमा श्रेष्ठ उरधार। सफल तपस्या होवे जांकी, धरे क्षमा गलमार॥ सर्व सो पाप हटाती है॥ क्ष.॥ १॥ क्षमा धरी परदेशी भूपति, देतां विष निज नार। क्षमा शर्णा ले शिवगति पायो, अर्जुन मालागार। सुधारी नर भव जाती है॥ क्ष ॥१॥ गज सुकुमाल मुनी-श्वर के सिर, धरा खेर अङ्गार। सोमल विप्र पे क्रोध जो कीनो, अतुल क्षमा लहि

पार ॥ जनम जरा मरण मिटाती है ॥ च ॥३॥ क्षमा धरी हरिकेशी शिशु पे, सम-भावे सहिमार । मेतारज और खन्धक मुनि भी वेदन सही अपार ॥ तो भी समता सुखिमाती है ॥ च ॥४॥ दीपायन ऋषि क्रोध लीन हो करी तपस्या अपार । असुर होय के नगर द्वारिका बालकरी है छार । क्रोध से दुखदुख आती है ॥ च ॥५॥ जहां क्रोध की आग लगी है, गाली रूप अङ्गार । क्षमा शान्ति जल छांटत वहां पे, होवे ठण्डा गार ॥ नहीं फिर प्रज्वलित पाती है ॥ च ॥६॥ यों ज्ञानी भवि क्षमा आराधी हो जाओ भव पार । मन्न सरि सुत 'सूर्य मुनि' कहे क्षमा चन्दनी धार ॥ जिन्हों के विपदा न आती है ॥ च ॥७॥ इति ॥

जिनेश अर्ज ।

राग— गजल ।

तुम्हें अब दीद अविनाशी, दिखाना एक दम होगा। अधम मम जान सुख राशी, बताना एक दम होगा ॥टेर॥ हुआ व्याकुल भ्रमण करते, अनादि दुःख चउ गति में। अचल गति पंचमी सुखकर, जताना एक दम होगा ॥ तु ॥१॥ सच्चिदानन्द तज कर के, लियो जड़ मान में चेतन। हो गई बुद्धि जड़ जिनकी, मिटाना एक दम होगा ॥ तु ॥ २ ॥ तुम्हारा नाम ले लेकर, करें मुक जीव की हिंसा। अहिंसा धर्म के पथ अब, लगाना एक दम होगा ॥ तु. ॥३॥ विविध पटरंग धर करके, कदा कई नग्न हो फिरतां। जो

सोये मोहवश उनको जगाना एक दम होगा ॥ तु. ॥४॥ कु-गुरु कु देव की दासी भवसु भ्रमाम वश कीनी। हित मित भाम मय उनको कराना एक दम होगा ॥ तु ॥ ५ ॥ तुम्हारे होय अनुयायी करें सो गार आपस में। उन्हीं को पाठ शांति का पढ़ाना एक दम होगा ॥ तु ॥ ६ ॥ सुरि नन्दलाल सुपसाये मिला जिनराज सुखकारी। अधम 'मुनि सूर्य' की नैय्या तिराना एक दम होगा ॥ तु ॥ ७ ॥

मुनि मार्ग।

राग—गजल।

धन्य है जैन के मुनिवर कठिन तप जोग धारा है। तजी मुनियों यह पुत्र-दारे तजया परिवार सारा है ॥टेर॥ गिने

हैं आत्मवत् सबको, अहिंसा धर्म प्यारा है। करें षट काय की रक्षा, तिरें खुद और तारा है॥ ध.॥१॥ कभी ना झूठ सो बोले, भले हो प्राण की हानि। कहें ना मर्म भी किसका, वचन इक सच उच्चारा है॥ ध ॥ २ ॥ करे ना काहू की चोरी, गिने सब द्रव्य को पत्थर। कभी विन हुक्म से तुम भी, गहे ना मन सम्भारा है॥ ध. ॥ ३ ॥ सहू छोटी बड़ी नारी, गिणे हैं मात सम ताको। हुये हैं आप ब्रह्मचारी, किया जग का किनारा है॥ध ॥४॥ अथिर सम्पत विभवजानी, रखे नां पास में कोड़ी। बने हैं आप वैरागी, पाप तज के अठारा है॥ ध ॥५॥ कठिन

मुनि मार्ग का पालन नहीं है काम कायर का। लहो न्यामत का पदपंकज शरण जिनका सहारा है॥ ध ॥ ६ ॥

जिनेश प्रार्थना।

तर्ज—कव्वाली।

भगवन् जिनेश सुखकर सुनिये दयाल मेरा। उद्धार आतम का अब, कीजे कृपाल मेरा॥ टेर॥ तेरे चरण का चेरा मुझ दास जान लीजे। चारों गति दुख्खन से कीजे निकाल मेरा॥ भ॥ १॥ कीना बिगार मैंने भूला हूँ आतम गुण को। तेरी कृपा से अब तो होगा निहाल मेरा॥ भ॥ २॥ परभाव को विचारा निज भाव को बिसारा। शुद्ध स्वरूप चेतन

कीजे विशाल मेरा ॥ भ. ॥ ३ ॥ समता स्वभाव प्रकटे, निज आत्म भान होवे। हित वत्स जान हरदो, कलिमल कराल मेरा ॥ भ. ॥ ४ ॥ अपनो विरुद विचारो, निज दास को सुधारो। सब भर्म कर्म वानो तूँही दयालु मेरा ॥ भ ॥ ५ ॥ सूरिनन्द पाद नम के, "मुनि सूर्य" यों उचारें। शुभ भाव से तुम्हीं को, वन्दन त्रिकाल मेरा ॥ भ ॥ ६ ॥

स्वार्थ।

राग—श्रामव सागर तू श्रयक्षामा।

इह जग मांही स्वार्थ सगाई।

विन स्वारथ हों जग दुखदाई ॥टेर॥

मात पिता बंधव सत वनिता, विन स्वारथ सब छेह दिखाई ॥ इ ॥ १ ॥ होय

सगो मा यद्यपि सेतो स्वारथ जहाँ तहाँ
होय सगाई ॥ द ॥ २ ॥ स्वारथ बन्ध
मूल्यो नर मट है, सुधबुध सब ही दे
बिसराई ॥ द ॥ ३ ॥ अहर ठई मारे निज
पति को देखत ही हो नार पराई ॥ द ॥
॥ ४ ॥ तन धन बल वीरज हो जिस पे,
तिस से सब जन प्रेम लगाई ॥ द ॥ ५ ॥
इस तरहें स्वारथ से जग में, मीत करे मुख
प्रेम सुनाई ॥ द ॥६॥ स्वार्थ विषय मदके
नर मूरख माहिं मजे इक सच्चे सहाई
॥ द ॥ ७ ॥ नम्र ह्यरि रज 'सूर्य मुनि'
माधे स्वार्थ तजी जपिये जिनराई ॥ द ॥
॥ ८ ॥ इति ॥

राग—नारा मनमां जाणे के गरवी ।

मना, मानव तन लई शूं कर्यूं रे, नहिं भक्ति तणूं भाथूं भर्यूं रे ॥ टेर ॥ मना, माता पिता परिवार मेरे, थयो गृद्ध अति संसार मेरे ॥ म. ॥ १ ॥ मना, विषय भोग प्यारा लगेरे, जिन वाणी में नहिं श्रद्धा जगेरे ॥ म. ॥२॥ मना, बाग महिल सुंदर कियो रे, पंचेंद्री विषय सुख भोगियारे ॥ म ॥३॥ मना, पाप करी ने धन जोड़ियो रे, नहिं मर्ण समय साथे लियो रे ॥ म ॥ ४ ॥ मना, धर्म बिना सब आपदारे, कहें ज्ञानी गुरु सांची सदा रे ॥ म. ॥५॥ मना,, शुद्ध सुगुरु संग कीजिये रे, मन धर्म श्रद्धा धर लीजिये रे ॥ म ॥६॥ कहें "सूर्य मुनि" यों उन्हेल मेरे, रहो काज साधी शिव महेल मेरे ॥ म. ॥ ७ ॥

ईश-प्रार्थना।

गज़ल।

कीजे कृपा कृपाल अब इच्छित होय काज सब ॥ टेर ॥ अमल अचल अविकार हूँ करुणानिधी करतार हूँ। संसार मेरी टार दूँ भव सिंधु से करपार दूँ॥ तेरी अनोखी है ये छब ॥ की ॥१। तूहि मेरे मात तात सखा सहाई हूँ दिनात। पावन परम पवित नाथ तेरा अखण्ड लीला साथ ॥ तुम नाम ग्रन्थ सर्व वर्ण ॥ की ॥ २ ॥ परिपूर्ण दर्श ज्ञान मय, अचल अटल ध्यान मय। अनन्त सौख्य ज्ञान मय अमित गुण निधान मय। तुम दर्श होने आप रूप ॥ की ॥ ३ ॥ तुम-सा न देव है कहीं है वीतराग हूँ सही। तुम

जन्म जरा दूर कर, दास अर्ज ध्यान धर। सुनते नहीं मुझ क्या सवव ॥ की. ॥ ४ ॥ सच्चा तूही संसार में, भवसिंधु पारावार में। तारक तूही आधार में, कहें "सूर्य" वार वार में ॥ लहि सूरि नंद पाद पर्व ॥ की. ॥ ५ ॥

गजल—ईश।

ईश व्यापी घट विषे और, ज्ञान मय भरपूर है। कोई विदूषी लखलखें, ताको अखिल ही नूर है ॥ टेर ॥ ना गेह मठ मंदिर विषें, और ना वसे को देश में। पृथ्वी अपवायु तेऊ, इनसे सतत सो दूर है ॥ ईश ॥१॥ नरमूढ़ चिन पहिचान से करता भ्रमण चारों दिशां। सुनता

किसी की है नहीं, मन में धरी मगरूर है ॥ ई ॥ २ ॥ जड़देव हिंसक को मनावैं, निज शुद्ध आतम को तजी। हो अज्ञता में लीन घोखा, पाप का अकुर है ॥ ई ॥ ३ ॥ घर पीत पट नानाविधि हुंढ़त फिरे जड़देव को। निज आतम साधन के बिना सब ही निरर्थक झूर है ॥ ई ॥४॥ मृग मद भरे शुचिगंध का, ढूंढ़त फिरैं खुद भूल के। ज्यों सिंहा कारागार में रहता न खुद का शूर है ॥ ई ॥ ५ ॥ कर्ता नहीं हर्ता नहीं देता नहीं लेता नहीं। है सो अविनाशी अचल होना सकल दुख दूर है ॥ ई ॥६॥ है कर्म जड़ चेतन अनादि, साथ में तिल तेल ज्यों। बिन यत्न तिल से तेल त्यों होता नहीं पैहूर है ॥ ई ॥ ७ घर ध्यान हर्षे चारित्र सम

को अब छानलो। सूरिनन्द ने 'मुनि सूर्य' को जिन्न पथ बतलायाःभूर है॥ ई. ॥८॥

गजल—उपदेशी।

करो कुर्वान तन धन को, जहां पर की भलाई हो। हटोमत धर्म के पथ से, भले विपदा समाई हो॥ टेर॥ करो परचार दुनियां में, अहिंसा धर्म का निशदिन। डरोमत सत्य कहने में, तेग जहां पे दिखाई हो॥ क॥ १॥ दुःखी दरदी अनाथों की, करो रक्षा अरे प्यारों। करो प्रयत्न अब ऐसा, सभी दुःख की विदाई हो॥ क.॥२॥ बढ़ाओ प्रेम आपस में, हटाओ द्वेष का खञ्जर। धरो शुद्ध धर्म में श्रद्धा, जहां सच्चा सरखाई हो॥ क ॥३॥ निज निज जाति की देखो, हो

गही सम्पति जग में । तुम्हीं को हिर्स हैं येही, मेरी फैसी बड़ाई हो ॥ क ॥४॥ द्वेष और मान में हो कर किया बर्बाद जाति का । उन्हीं के सामने कैसे गरीबों की सुनाई हो ॥ क ॥५॥ सूरि नन्दलाल पद नमकर कहे मुनि 'सूर्य' यों हितकर । बढ़ाओ संप की खेती नओ पथ ज्ञा न न्याई हो ॥ क ॥ ६ ॥

मिन्द ।

निन्दक में पावे तिन दोष ॥ टेर ॥

बुद्धिमन्त धम पाय होपमा धरें धर्म पै रोष । जिमसा कुसजाती नहीं पावें नहीं हो शाम सन्तोष ॥ मि ॥ १ ॥ सूरवीर सौभाग्य रूपता नहीं पण्डित गुण कोष । पढ़ श्रुति नपमान म कहिये नास्तिक

माया मोष ॥ निं ॥ २ ॥ आराधिक होवे ना कबहु, कबहुन हो निर्दोष । पीठ मास भक्षी सो जाकी, पर निन्दा में होश ॥निं ॥३॥ निज स्थापक और पर की निन्दा, किञ्चित् ना खामोश । चतुर्गति में भ्रमण करे सो, अशुभ कर्म के जोश ॥ निं. ॥४॥ करें रत्नत्रय चतुसंघ की, निन्दा सो निशि घोस । होवें किल्विषी दुर्लभ बोधि, जो करता है उपक्रोश ॥ निं ॥६॥ इह परभव निन्दा दुःखदाई, लेवें निजगुण खोस । तज निन्दा और चाड़ी चुगली, निज गुण को ले पोष ॥ निं ॥ ७ ॥ देव विरागी ध्याओ जगलख, ज्यों जल बिन्दु ओस । सूरिनन्द रज "सूर्य मुनि" यह, सत्य कहें निर्घोष ॥ निं. ॥८॥

तर्ज—[illegible] ।

दया सब जग की माता है, हित
वत्सल सब जग की पालक । शिव सुख
दाता है ॥ टेर ॥ आरंभ दया को प्रथम
किये से सर्व सिद्ध हो काज । दुर्गति
पड़ते अधम जनों को, राखे धर्मशिरताज
साज । दया से पावें संसार है । दया ॥
॥ १ ॥ सम देखत और [illegible] की,
दानादि पर [illegible] । सुमति माल गले [illegible]
विभाती तप [illegible] है । मात ॥ दया
[illegible] कहलाता है ॥ दया ॥२॥ [illegible]
सिंह असवार करे [illegible] विविध
धार । [illegible] होगो है परिहार को [illegible]
[illegible] उदार ॥ गुणों का पार न आता है ।
॥ दया ॥३॥ दया भगवती जिनके चित्त
में बरसी [illegible] आश्चर्य ताके [illegible]

मरण भय विपति होवे छिन में नाश ॥ ज्ञानभानु प्रकटाता है ।दया.४। आयु दीर्घ वपु क्रांत अरोगी, इह परभव सुख पाय। विभव धर्म सन्तोष मुक्तता, संयम शिव दरसाय ॥ दया से ये यश पाता है ॥ दया. ॥५॥ मेघ कँवर और मेघरथ राजा, धर्म रुची अणगार। द्वाविसा में तीर्थंकर पाये, दयाधरी भवपार ॥ तूही सब जग की त्राता है ॥ दया ॥ ६ ॥ निर्धन धन प्यासे ज्यों पानी, चातक बूंद विचार। ज्यों चाहते हैं भव भव तुझको रे माता सुखकार ॥ सर्व जन गुण तुझ गाता है॥ दया ॥ ७ ॥ मात अनन्त हुई हैं जग में, मिली न तुझ-सी मात। सूरिनन्द रज 'सूर्य मुनि' कहें, अखूट तूही मम हाथ ॥ नाम तुझ श्रेष्ठ सुहाता है ॥ दया. ॥८॥

जिनेश-प्रार्थना

राग—[illegible]

जिनेश्वर तारो दीन दयाल।

काज पूरण आस कृपाल ।टेर।

अधम दीन उधारन अतिशय, गुण गौरव अभिराम। पावन धर्म पालक पद पंकज पुरुषोत्तम गुणधाम ॥ जि ॥ १ ॥ भील पुर अधम उधारे गोघातक गुण हीन। जन्मान्ती निम्बजआमात्य तस तार्यो तल्लीन ॥ जि ॥ २ ॥ फणिधर पुर दया कर दीधा चण्डकोशिक विकराल। श्रद्धा किया तुम पद पंकज पै ताको कीनो न्याल ॥ जि ॥ ३ ॥ पांचवां के ही भय थिये मार्यो सुकोशल पूत। जाती सुमरण पाई ततक्षिण बाल यही अद्भुत ॥ जि ॥ ४ ॥

इन्द्रभूति कहतो इन्द्रजाली, ताको सुमार्ग बताय। आप समान कियो जग तारण, अपनो विरुद्ध निभाय॥ जि ॥ ५ ॥ यों जानी मम इच्छित पूरो दीजे अविचल स्थान। नन्द सूरि सुनू "सूर्य मुनि" यों, याचें परम निधान॥ जि. ॥ ६ ॥

-:भाषा:-

तर्ज— गजल।

हमारी मोहनी मधुरी, अति उत्तम पियारी है। स्वदेशी मातृ भाषा ये सर्व को सौख्य कारी है॥ टेर॥ ऋषी भाषा ये प्राकृत है और संस्कृत भाषा है। पढ़ाओ और खुद पढ़लो, यही जिनवर

उपकारी है ॥ ह ॥ १ ॥ अजायब शिफ्त है इसमें फर्क पड़ता नहीं हर्गिज। लिखा जैसा उसे पढ़लो और लिपी नटारी है ॥ ह ॥ २ ॥ प्राची भारती लिपी, इसी को नागरी कहते। उचारें देख यह वाणी, सभी का मोदकारी है ॥ ह ॥३॥ जब ही से फारसी उर्दू हुई भाषा ये भारत में। तभी से हिन्दी भाषा की होगई बहुत ख्वारी है ॥ ह ॥ ४ ॥ जरा कुछ भी पढ़ी नीं सो करी इंग्लिश अब हामी। अरे प्यारे तुम्हो समझो कहां मन में विचारी है ॥ ह ॥ ५ ॥ करो अब ध्यान विद्या का बढ़ाओ देश भाषा को। ध्यान मम दास नहिं जग में, कही आगम मझारी है ॥ ह ॥६॥ श्री महावीर गौतम ने, किया उद्धार भाषा का। पुनः जीवित करो इसको

किया उपकार भारी है ॥ ह. ॥ ७ ॥ करो रक्षा अरे प्यारों, संम्भालो डूबती नैया। सूरिनन्द "सूर्य" ने वाणी, पढ़ी दुर्गति विडारी है ॥ ह. ॥ ८ ॥

तर्ज—जमाना रंग बदलाता है ॥ धर्म ॥

धर्म पे हैं वीरों का प्यार। मूरख मूढ़ कायर कहा जाने। कंचन काच विचार ॥टेर॥ शूरवीर कायर में अन्तर, जैसे सिंह सियार। धर्म रूप मैदान बीच में, कातर लख हथियार॥ पलायन होता है उस वार॥ ध ॥१॥ चढ़े सुवर्ण की तेज स्वच्छता, लागत खूब अगार। अगर चन्दन इक्षु को छेदत, होय गन्ध रससार॥ त्योंहि हैं सज्जन गुण आगार ॥ ध. ॥ २ ॥ गीदड़ भभकी देख डरे नां,

रहें अटल गुणधार । तन धन हानि गिने
न किंचित्, धरें धर्म पै प्यार ॥ देवे
छिन में पाप विडार ॥ ध ॥३॥ काम वीर
से भाव वीर में परिषह सहे अपार ।
देव आय तन छेदन कीना असुर गया
फिर हार ॥ जिन्हों की वार वार बलि-
हार ॥ ध ॥ ४ ॥ महावीर शासन के
नायक, गज सुकुमाल कुंवार । आतम
रिद्ध अनुभव को पाये, साधु संयम
संभार ॥ कीना कर्म सभी संहार ॥ध ५॥
आतमबल प्रकटाओ प्रतिदिन, निश्चल
धर्माधार । नन्द सुरीश्वर शिष्य "सूर्य"
यों करें नकल हितकार ॥ धम पै धर
धरता सुविचार ॥ ध ॥ ६ ॥

ईश-पहिचान

तर्ज—जमाना रंग बदलता है।

कीजे ईश्वर की पहिचान, निरर्थक क्यों नरभव खोते हो। धरो हृदय में ज्ञान ॥ टेर ॥ अचल अटल अविकार निरंजन, अजर अमर गुण खान। करता हरता भरता नाहीं, सकल कर्म करहान ॥ विराजे सिद्ध स्थान भगवान ॥ की. ॥१॥ राग द्वेष तज हुये विरागी, निर-मम निर-अभिमान। क्रोध कपट मद लोभ त्याग के, मुक्त हुए शिव स्थान ॥ पाये दंसण ज्ञान निधान ॥ की ॥२॥ अखण्ड अगोचर अलख अखिल सो, अरि वसु कीना भान। हस्त कमलवत् पेखत जग को, जोति स्वरूप प्रमाण ॥ जहां पे निराबाध

सुखमान ॥ की ॥ २ ॥ दानादिक अन्तराय पन और ज्ञानादिक भटजाय । रस्य रति भय भीति जुगुप्सा, शोक काम वलवान ॥ किये सब जारी अशुभ समान ॥ की ॥ ३ ॥ अधान मिथ्र अविरति दुख मिथ्या सर्व महान । अष्टादश दूषण रहित—जिने श्वर अघमल कर अवसान ॥ पाये परम अमो निर्वाण ॥ की ॥ ४ ॥ ऐसे अमल अज अविनाशी भव भवि पर अज्ञान । मन्न नूरि रज सूर्य कहैं यों प्रभु सम्यक्त सु-विज्ञान ॥ समत मो है सबको सुखदान ॥ की ॥ ६ ॥

परनार-विष

राग—मेरे शम्भू तू काशी बुलाने मुझे।

परनारी स्नेह लगाओ मती।
अपनी इज्जत को आप गमाओ मती ॥टेर

है नागनी काली यही तन में हलाहल विष रहा। बोले सुधासम बैनसों अन्तर कपट बक सम महा॥ देखी शहेत छुरी ललचाओ मती॥ प.॥१॥ है ये शिखासम दीपकी सुन्दर दमक मोहन वला। देखी अधम नर मुग्धवन तन धन सभी देता जला॥ परदास बनी दुख पाओ मती।प.॥२॥ धर नैन बान कामन से घायल किया इसने कई। ब्रह्मा हरिहर इन्द्रनर सबकी मती मारी गई॥

पर नारि से पाप कमाओ मती ॥ प ॥३॥
भूली पतलक हैं यही घूमी कटारी आग
की। धन धर्म बीरज घी हरें उलटी
गती हम राग की। अपनी नीति से
पाँव हटाओ मती ॥ प ॥४॥ कुल सिंधु
सम परनार लख त्याग न करो इन कर्म
का। श्री मुनिचन्द मुनि सूर्य यों सत्पथ
बताते धर्म का ॥ कभी कर्म कुकर्म कमा
ओ मती ॥ प ॥५॥

अनाथ-विपे

तर्ज—मेरे शम्भु न पकड़ी मुरारि हाथ।

दुःखी दर्दी की पीर पिछान करो।
दुख भी अपने हृदय में भान करो ॥टेर॥

देखो दशा इस देश की भारत सभी गारत बना। सीमा नहीं कुछ दुख की खाने न मिलता है चना॥ निज जाति उन्नति का ध्यान करो॥ दु ॥ १ ॥ भूखे मरे लाखों यहां सब धर्म अपना तज गये। होते मुसलमां वा ईसाई अन्य धर्मी बन रहे॥ कुछ दीन अनाथ को दान करो॥ दु ॥ २॥ अपनी अपनी जात की सब कर रहे हैं उन्नति। सूझे नहीं धन्मांध हो तुमको जग भी सन्मती॥ नित स्वपरहित धी मान करो॥ दु ॥३॥ करते परस्पर द्वेष ईर्षा सोचते हितनां जरा बर्बाद करते द्रव्य का अन्याय पे पग को धरा॥ अब तो कुछ भी धर्म उत्थान करो॥ दु ॥ ४॥ निज पेट पशु पक्षी सभी भरते जगत में देखलो। तन धन लगा

पद हित करे मथा.पादी१मर पेमतो
कहे सूर्य मुनि हित मान करो ॥ ३ ॥

सुगुरु

दर्द—नाम।

सुगुरु के वर्ण कहपे।,हो, मपद अघ
फल बिगुलाता है।, जिनके में, जो मामन
पालन गरुद गुरु के जो बाता है,वैसा
मथम बरिहन्त,की पावी मदन,हो पाम
हुसने का। तस्वारि,नाम फिर होवे,
हुसमथम मेष,पाता है।घ.॥ १॥
बिहास फिर नाम से होवे, वरें सब
पाप कर्मों से।,तवे इस जीव,की हिंसा,
पुगि संपद,को ध्याता है।घ.॥ २॥

तजें आश्रव तप धारें, करें क्षय कर्म का वंधन । अकिरिया होय तब सिद्धि, लहें शिव सौख्य शाता है ॥ सु. ॥ ३ ॥ अक्षय आनन्द निधि सुख के, अतुल सो द्वार दरसावे । जन्म जर मर्ण की विपदा, सभी दुख को जलाता है ॥ सु. ॥ ४ ॥ विषय परमाद जग वन्धन मिटावें ताप-त्रय छिन में । स्पर्श पारस किये अय तब, तुरत कंचन विभाता है ॥ सु. ॥५॥ अन्ध नर सम भटकते हैं, विना गुरुज्ञान दर्शन से । सूरि श्री नन्द के पदकंज, लहे सो अघ हटाता है ॥ सु. ॥ ६ ॥

हमारा संघ

(दोहा)

हमारे संघ में भगवन् रत्न नर हो तो ऐसा हो। उजाले जैन के पथ को दिवाकर हो तो ऐसा हो॥ टेर॥ सिरे खुद भीर पर धारे, विमुख कामन कनक से हो। प्रकाशे धर्म को जग में मुनीश्वर हो तो ऐसा हो॥ ह०॥ १॥ मनो तन द्रव्य से करके, करे हित देश धर्म तज के। धरे शुद्ध जैन की श्रद्धा श्रावक हो तो ऐसा हो॥ ह०॥ २॥ करे सब कार्य आरम्भ के तजे हिंसा वृथा धारे। धरे वात्सल्यता घर में श्राविका हो तो ऐसा हो॥ ह०॥ ३॥ करे पितु मात की भक्ति धरे कुल धर्म की नीति। धरे परमार्थ

में प्रीती, पुत्रवर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥ ॥ ४ ॥ करे सब जीव की रक्षा. दया के कुंज हो अनुपम । हरे अज्ञान तम सब का, गुरुवर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥ ५ ॥ चहे शिर भी अलेदा हो, डिगे ना धर्म से हर्गिज । अटल श्रद्धान जिन मग पे, धुरंधर हो तो ऐसा हो ॥ ह ॥६॥ निभावे प्रेम से सब को, बढ़ावे सम्प आपस में । करें श्री संघ की सेवा, सुश्रवर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥७॥ छत्तीसों गुण अखिल जामें, बने श्री संघ निर्यामक । धुरंधर नन्द मुनीश्वर से, सूरीश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ह. ॥ ८ ॥

तर्ज पद्म—जोगी ।

देखलो कुछ गोर करके सार यहां कुछ भी नहीं । सुत मित्र बंधू नार यह परिवार यहां कुछ भी नहीं ॥टेर॥ साथी किसी के है कोई ना, स्वार्थ की दुनियां सभी । सब मान में प्यारे बने है पार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे ॥१॥ होता नहीं एक दम, साथी विपत्ति काल में । एक धर्म के सहारे बिना, आधार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ २ ॥ क्यों भार ही जिन के लिये उन्नत शिखर पर बांधता । संसार सिंधु है उन्नमें मझधार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ ३ ॥ चल गये बरबीर राजा, छत्रपति नर इन्द्र भी । आखिर फना होगा अरे धन

धाम यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ४ ॥ श्री नन्द सूरीश्वर पसाये, "सूर्य" कहे हित वैन यों। जिन नाम सुमरण के सिवा, सुविचार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ५ ॥

गुण वचन वाणी

तर्ज—माता सीता के सोरा में हनुतम डारी मुन्दड़ी !

श्री अरिहन्त महन्त भगवन्त अनन्त गुण राजता जी। जस जाप जपें दुखनसें मिलें सुख साश्वताजी ॥ टेर ॥ जिनवर राजें पण तीसे वर गुण भारतीजी। प्रथम संस्कार युक्त गुण आण, उच्च-स्वर अति गुण पथ्य निधान। तूर्य गुण मेघ

तर्ज मधुर—प्यारी।

देखलो कुछ गौर करके सार यहां कुछ भी नहीं। सुत मित्र बंधू नार यह परिवार यहां कुछ भी नहीं ॥टेर॥ साथी किसी के है कोई ना, स्वार्थ की दुनियां सभी। सब काम में प्यारे बने हैं यार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे ॥१॥ होता नहीं एक एक का, साथी विपत्ति काल में। एक धर्म के सहारे बिना, आधार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ २ ॥ क्यों भार ही दिन के लिये नाहक सिरपर घर बांधता। संसार सिंधु है दुःखमई, मझधार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे ॥ ३ ॥ चल गये महावीर राजा, चक्रपति नर इन्द्र भी। आखिर फना होना अरे, धन

धाम यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ४ ॥ श्री नन्द सूरीश्वर पसाये, "सूर्य" कहे हित वैन यों। जिन नाम सुमरण के सिवा, सुविचार यहां कुछ भी नहीं ॥ दे. ॥ ५ ॥

गुण वचन वाणी

तर्ज—माता सीता के सोरा में हनुतम सारी मून्दड़ी !

श्री अरिहन्त महन्त भगवन्त अनन्त गुण राजता जी। जस जाप जपें दुखनसें मिलें सुख साश्वताजी ॥ टेर ॥ जिनवर राजें पण तीसे वर गुण भारतीजी। प्रथम संस्कार युक्त गुण आण, उच्च-स्वर अति गुण पथ्य निधान। तूर्य गुण मेघ

गहीर समान, पंच में गुण प्रतिपाद वि-
भाग। हि सरस सरल गुण मालप की
शिव गाजताजी ॥ श्री ॥१॥ भाषा मिश्र
मागधी देशयुत नय में भखीजी। भवि
युक्त सूचक भाव प्रकाशे नरमन संशय
सर्व पलासे। बारमें वारी समभव भावे,
अभय मोक्ष के सुख सुविकासे। चार
चरण सर्व पद्भर्या भेद विस्तारताजी ॥
श्री. ॥ २ ॥ नय निक्षेप युक्त योजना में
जिनवाणी कहीजी। सप्तर में वेदक द्रव्य
उचारे अठार में पाग प्रेय से न्यारे।
बालक समझे द्रव्य प्रचारे, कहें पूत
मिष वचन अनुसारे। हि उपदेश वर्णा
योग्य वस्तु प्रकाशताजी ॥ श्री ॥४॥ प्रभु
धरे उपशुद्धगम औदार्य नय पीसमैजी।
हि धर्मार्थ मोक्ष गुण पावी चिन्ह अनु-

शासन घाणी जाणी। क्लीव कुचेष्टा रहित वखाणी, अ.अर्थकारी सत्वकहाणी। गद शोक विवर्जित वैन अखण्ड घन धारताजी ।। श्री ॥४॥ मृदु अलंकार युत वाणी कहें प्रभु तीस मेंजी। पद अने-कार्थ प्रापती कहिये, सुण उत्साह हृदय भवि लहिये ॥ मौक्तिक माल शुभ्रजिम गहिये, धर्म दृढ़ भाव परमे उर रहिये ॥ श्रम खेद नहीं पण तीसे सहितसु सौम्य-ताजी ॥ श्री. ॥ ५ ॥ दुख भूख वेदना वैर सर्व तहां उपसमेजी। प्रभु पण तीस गिरा गुण जाण, कियो श्री समवायंग विधान ॥ यही उपकार सम्पदामान, सुणतां इह पर भव कल्यान। ऐसे सूरि-नन्द 'मुनि सूर्य', वैन जिन याचताजी ॥ श्री ॥ ६ ॥

जिनेश के चौंतीस अतिशय

चाल—मथुरा गीता के बीरा में हनुमान करी कृपाली।

सेवो सकल अमित सुखदायक जिन
वर जगपतीजी। तस पद पंकज सेवें
होय सदा निर्मल मतीजी॥ टेर॥ सोहे
अतिशय चौंतीसे गुण मणि नायजीरे॥
अवस्थित मूछ रोम नख (किया) निरामय
शरीरजी लेपन लेश॥ रुधिरामिष सित
गोक्षीर विशेष॥ श्वासोश्वास पद्म पंकज
सम गन्ध मन मोहतीजी॥ से॥ १॥ दृ
आहार निहार अदृश्य चर्म-चक्षु तणेजी।
नभ में धर्म चक्र चालें छत्र रु चामर
श्वेत सुखियाले॥ सिंहासन पाद पीठ
उजियाले॥ चालें इन्द्र ध्वजा जिन आगे
नभ में सोहतीजी॥ से॥ २॥ पुष्प फल

ध्वजा पतायुत तरू अशोक छायां करेजी। पृष्ट भा-मण्डल तम नाशे, मंजुल भूमि भाग विकाशे ॥ अधोमुख कंटक पगतल भासे ॥ अनुकूल षटऋतु हो सुख स्पर्श अतिशय सम्पतिजी ॥ से ॥ ३ ॥ योजन भूमि भाग हो स्वच्छ सुगन्ध समीर से जी ॥ सूक्ष्म घन से धूल समावे, जाणूं तक पुष्प अचित वर्षावे ॥ अनुकूल इन्द्रि विषय रहावे ॥ युग वींजता चमर अमर पावें रतीजी ॥ से ॥४॥ वाणी प्रिय पुनि भाषा अर्ध मागधी जाणिये जी ॥ समझे नरसुर तिर्यग भाषा, होवे वैर विरोध विनाशा ॥ अन्यमति होवे पद कज दासा ॥ वादी प्रतिवादी जिन देख कुबुद्धि विनाशती जी ॥ से ॥ ५ ॥ जहां विचरे प्रभु सौ-सौ कोस ईति भय नां

हुये जी ॥ मारी जन्म-जरा आदिक भयभीति, अगाधिक छुटि गई पर्याई ॥ प्रशान्ति शांति जहां दरसाई ॥ जहां पे पशिके सो सब प्रीति सो जावे छूटीजी ॥ से ॥ ६ ॥ पावें अतिशय गुण चौंतीसे पैंतीसे भारतीजी ॥ केवल ज्ञान धर्यो दुःख-विनाये लोकालोक भाव सुविकाये ॥ परजीभास सूर्य परकाया ॥ मांगे अचल सम्पति नम के नन्द धारि संपतीजी ॥ से ॥७॥

वाणी-महिमा

छंद—अनबी।

सुमन सोहन वारिद दायक को दायक जिनवर वाणी है। जो मर ध्यावे उसी के मनवांछन विरकाशी है ॥ ९८ ॥ जय जय

श्री जिनवाणी तेरी कौन सके महिमा वरणी। कोटि जिह्वा थके मुख तूँ है आ-तमहित करनी ॥ भव भव भमतें अधम जनों की पार करे पल में तरणी। कुमति कुगति के धारक जनकी छिन में अधमल दे हरणी ॥ सब जन के हितकारी प्यारी उपकारी शिवदानी है ॥ जो ॥ १ ॥ नित षट नर एक नारी जिनका घातक था अर्जुन माली। छह महिनों तक अधम ये कीना कृत सुकृत टाली ॥ वीर जिनन्द पदकज ले छिन में अधमल दीना है जाली। छह महिनों में मुक्त गया सो जिन आणा उत्तम पाली ॥ दादुर नाग बाघ तस्कर कई तारे ऐसे प्राणी हैं ॥ जो ॥ २ ॥ नृप परदेशी संयति श्रेणिक कृष्ण नरेश्वर आदि महान। जिनवाणी का

पाल कर सफल किया सब पर अहसान ॥ पुण्य प्रकट हो उन्हीं जीव के सुने पर्व सो जिनवर नाम। तीन भुवन की यही सम्पदा शिव मंदिर की है सोपान ॥ अ नाम तिमिर सब नशे परम यही बने मनुज सत्वामी है ॥ जो ॥ ३ ॥ गौतम गुणधर सुण के वाणी आगम गुथ पर-काश किया। यही सिन्धु है इसी में आदि अन्त इक साथ छिपा ॥ ऐ माता जिन वाणी पर्यन्त गुण भक्ति आप किया। सन्द् सुरीश्वर सुना के जिनवाणी सुभ तार दिया ॥ "सूर्य मुनि" नित करत सेवनां जिनवाणी उरठाणी है ॥ जो ॥ ४ ॥

स्व. पूज्य श्री नंदसूरीश्वर स्तुति ।

माता सीता के खोरा में हनुन्त डारी मून्दडी ।

वन्दौ चरण युगल श्री पूज्य गुरु नंद-लाल के जी । पावन परम पुनीत पुनवान विशद् गुणमाल के जी ॥ टेर ॥ पाई तत्त्व रुची हिरदा में जिनवाणी धरी जी ॥ सुगुरु श्री गिरधरलाल महान, वाणी ताकी सुधा समान । सुण कर भ्रमतम भग्यो अनाण ॥ होगये परम विरागी ममता जग की टाल के जी ॥ वं ॥ १ ॥ हिंसा झूठ अदत व्यभिचार परिग्रह त्यागियोजी । करुणा सब जीवन पे धार, दसविधयती धर्म को पार । कीनो पंच प्रमाद निवार ॥ धरके इरिया समिती चालें चाल मराल के जी ॥ वं ॥ २ ॥ धर

परमारथ पथ पुद्गल परिचय को हरे जी ॥ अरु और चेतन भिन्न निहार, भ्रम रात भ्याले स्थिरता धार। कोमल कठिन वचन सुविचार। वरतें विपरीत में सम भाव विनम्र पथ चाल के जी ॥ मं ॥३॥ सुमनस भावन से असुवैन सतत अमृत झरे जी ॥ व्रामिश परिसद को समभाव जीते राग द्वेष अपसार। राजत भय सम्पदा भार ॥ सब ही विपत नसें अस लसें दर्शवरमाल के जी ॥ म ॥ ४ ॥ श्री सूरि गुरुगुणी भगवन्त अधम समझाम के जी ॥ ऋद्धिवास सूर्य की सीजे कृपालु दर्श दया कर दीजे, बुद्धि अचल अमल मम कीजे ॥ होवे मंगल नित्य निम ध्यातां नाम दयाल के जी ॥ म ॥ ५ ॥

○ चतुर्विंशति ○

तर्ज—जमाना रंग बदलता है ।

ध्याओ चतुर्विंश भगवान । विघन हरन बन्धन भव जारन, दिव शिव सम्पति खान ॥ टेर ॥ आदि अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुख कान । सुपार्श्व चन्दा प्रभु सुविधि, शीतल श्रेयांश वखान । वासुपूज्य हरिये मम अज्ञान ॥ ध्या. ॥ १ ॥ विमल अनन्त धर्म शांति जिन, कुन्थु करत कल्यान । अरमल्लि मुनि सुव्रत स्वामी, अमित दर्शन ज्ञान । लियो है अविचल पद निर्वाण ॥ ध्या. ॥२॥ नमिनेम पारस जग नायक, दायक परम निधान । अन्तिम श्री वर्धमान जिनेश्वर, प्रकट भये भू

भान। अहर्निश कीजे मंगल गान ॥ ध्या ॥३॥ ये चोवीस जिन सेव सेय से होवत आदि समान। पुण्डरीकादि गौतम गण मुनि देखो हस्तिगत थान। हमारा निज गुण हो उत्थान ॥ ध्या ॥४॥ भव भय हरन शरण में तारो, कीजो है शुभ ध्यान। सूरि नन्द पद सेव 'सूर्य मुनि' कहे करके भजान। सुजानी भजलो जिन अभिधान ॥ ध्या ॥५॥

ईश्वर प्रार्थना

तर्ज—[illegible]।

लगी है आस दरशन की तुम्हारे शरण में भगवन्। कहे सब कोटि गुण गाये पड़ा हूं चरण में भगवन् ॥ टेर ॥ सही है ताप भव भव में अनन्ती मर्द

तिर्यंग में। तुम्हारे नाम की सुखमय, लही अवतरण मैं भगवन् ॥ ल. ॥ पड़ी है भूल चेतन में, फिरे मोहांध चक्कर में। तुम्हारी मोहनी वाणी, धरी नां करण में भगवन् ॥ ल. ॥ तीव्र इच्छा से अहोनिश ही, करी हिंसा मगन होकर। दयामय सुक्ति को सुनकर, लग्यो अब डरण मैं भगवन् ॥ ल ॥ रुच्यो सम्यक्त्व नां शुध मन, रहियो अज्ञान के पथमें। मुक्त कीजे जनम जर से, करूँगा मरण मैं भगवन् ॥ ल. ॥ हर्यो ना कर्म दल कोटी, वन्धे पातिक जो पूरव के। कथा कर्मो की कहां तक ही, करूँ सब वरण मैं भगवन् ॥ ल.॥ पूज्य नन्दलाल जगत्राता, दिखायो वीतरागी. को। जैन 'मुनि सूर्य' अहोनिश ही, रहियो है स्मरण में भगवन् ॥ ल ॥

जिन स्तुति

तर्ज—कव्वाली।

सुख शांतिमाय दीजे, सुख दीन के दयाला। चरणों में आ पड़ा हूँ रख लीजिये कृपाला॥ टेर॥ है सौख्य सिन्धु सर्वज्ञ गुण का न पार पावे। इक नाम ही पसावे, सुख सम्य कर्म ज्वाला॥ सु॥ १॥ है आत्म घाति के सम अवगुण मरे अनादि। नानाविध आत्म सुख को तज हो रहा निराला॥ सु॥ २॥ पञ्चास्य सुख चेतन, कर्मों के पेच लिपटा। निज मान भूल कर के, पर द्रव्य को सम्भाला॥ सु॥ ३॥ मत भेद पक्ष तामें, पाखण्ड सत्य माने। हिंसा में धर्म ठाने गुरुओं का संग काला॥ सु॥ ४॥ कर पाप माया

मेरे; ज्योति स्वरूप भगवन्। निज स्थान दास जानी, बतला तू कर कृपाला ॥ सु. ॥ ५ ॥ सूरि नन्दलाल गुरु के 'मुनि सूर्य' ध्यान ध्याई। स्तवन इन्द्रप्रस्थ में ये, सुन विश्व सेन लाला ॥ सु. ॥ ६ ॥

卐 भगवन 卐

तर्ज—कव्वाली।

दुख दूर अब हमारा, कीजे तू विश्व भगवन्। हमको धरम सहारा, दीजे तू विश्व भगवन् ॥ टेर ॥ मझधार में पड़ी है नौका ये आय मेरी। कर पार इसको तट पे, लीजे तू विश्व भगवन् ॥ दु. ॥१॥ है देव तूँ विरागी, ज्ञाता है भाव घट के।

जिन स्तुति

तर्ज—कव्वाली।

सुख शांतिनाथ दीजे, मुझ दीन के दयाला। चरणों में आ पड़ा हूँ रख लीजिये मयाला॥ टेर॥ हे सौख्य सिन्धु सर्वज्ञ गुण का न पार पावें। इक नाम से पलावें दुख द्वन्द कर्म ज्वाला॥ सु॥ १॥ हे आत्म घाति के मम अवगुण भरे अनादि। कम्मादि आत्म सुख को तम हो रहा निराला॥ सु.॥ २॥ परमात्म शुद्ध चेतन कर्मों के पंक लिपटा। निज भान भूल कर के, पर द्रव्य को सम्भाला॥ सु॥ ३॥ मत भेद पक्ष तानें, पाखण्ड सत्य मानें। हिंसा में धर्म ठानें गुरुओं का संग टाला॥ सु.॥४॥ कर पाप नाग

महावीर

तर्ज—धन २ जग में वह नर नार ।

शासन नायक श्री महावीर, जगदानन्द बढ़ाने वाले ॥ टेर ॥ प्रभुजी दशवें सुर से आय, क्षत्रिय कुण्ड नगर के मांय । लीनो जन्म तहां जिनराय, तिमिर मिथ्यात्व मिटाने वाले ॥ सा. ॥ १ ॥ नृप श्री सिद्धारथ हैं तात, श्रीमति त्रिशला देवी मात । वृद्धि सुख वैभव हुई पर्याप्त, जग में जश प्रगटाने वाले ॥ सा. ॥ २ ॥ संसार सकल परिवार, दीना मोह ममता को टार । लीना केवल कर्म विडार, दउ विध धर्म बताने वाले ॥ सा ॥३॥ सुनके वीर जिनन्द उपदेश ग्यारा गौतम आदि गनेश । लीनो संयम चउदस सहेस,

भवबन्ध मर्म मेरा हरले तू विश्व भगवन् ॥ तु ॥२॥ तेरे लिये हां ! कोई सब प्राणियों के करते। उनके हृदय में सुमती भरते तू विश्व भगवन् ॥ तु ॥३॥ मिथ्यात मय अनादि अज्ञानतम भरा है। शुद्ध ज्ञान का उजाला, करते तू विश्व भगवन् ॥ तु ॥४॥ तू है अनन्त ज्ञानी और शक्ति भी अनन्ती। वह आत्म शक्ति मुझ में भर दे तू विश्व भगवन् ॥ तु ॥५॥ भटका हूँ भूल भ्रम में तेरे बिना मैं दरदर। अब तो चरण का चेरा रखले तू विश्व भगवन् ॥ तु ॥६॥ हरिनन्द 'सूर्य' तुमको ध्याता है भाव भर के। किंचित् विनय हमारी सुनले तू विश्व भगवन् ॥ तु ॥७॥

अहियासे, छेद पुराकृत पाप ॥ जि. ॥२॥
द्वादश वर्ष साढ़ा छे महिने, छउमत्थ रहे
वर्द्धमान। नित्यानन्द अखिल प्रकाशक,
पाये केवल ज्ञान ॥ जि ॥३॥ गौतम गण-
धर मुनिवर आदि चउदस सहस प्रमाण।
सहस छत्तीस सु साधवी सोहें, चिंता-
मणि गुणखान ॥ जि ॥ ४ ॥ पांवापुरी में
अन्तिम जिनवर, कीनो है चउमास।
कार्तिक वदी अमावस निशि में, लीनो
शिव सुख वास ॥ जि ॥ ५ ॥ महिर करो
मुझ साहिब शीघ्र ही, दुष्कृत दूर निवार।
सुख निश्चय अविचल पद दीजे, कीजे
भवदधिपार ॥ जि ॥ ६ ॥ श्री पूज्य दया
निधिवर नन्दलाल महाराज। तास चरण
रज 'सूर्य मुनि' कहे, सुनिये श्री जिनराज
॥ जि. ॥ ७ ॥

हिंसा धर्म नशाने वाले ॥ सा ॥ ४ ॥ प्रभु श्री चरम जिनेश्वर वीर, कर भव व्याधि से भव तीर। सही हैं लख चौरासी पीर, तुम्हीं जिनेश्वर हटाने वाले ॥ सा ॥ ५ ॥ तज संघ तुम्हरा दीनदयाल, जय तारण बहोत्तर साल। मेरी चरण पूज्य नन्द-लाल 'सूर्य' यों विनय सताने वाले ॥ सा ॥ ६ ॥

—जिन गुण—

तर्ज—चतुर नर घूमेरे उदार।

जिनन्द मम दीजे मम वरदान। दरिपो नाथ मिसन तरसन ॥ टेर ॥ महाता प्रभु चौबीसवां शासन ईश दयाल। नृप सि-द्धारथ त्रिशला राणी ताको तनय कृपाल ॥जि ॥ तज वैभव सुख अस्थिर जगतना संयम श्री लो आप। सुरनर पशु परिषह

त्रिशला तनय जगताजसूँजी ॥ मु ॥ ६ ॥
श्री पूज्य गुरुनन्द पद परें जी । यों "सूर्य
मुनि" विनती करेजी ॥ मु. ॥ ७ ॥

उपदेश

तर्ज—म्हानि म्हेर करीने वेगा तारजोजी ॥ गरबी ॥

घना जाप जपो जिन राजका रे । कर
साधन आतम काज का रे ॥ टेर ॥ मना
यौवन वय वीती गयो रे । मन सुकृत
करवानां थयोरे ॥ म. ॥१॥ मना आई जर
अङ्ग थर हरे रे । मन इच्छा नूतन वढ़ती
रहे रे ॥ म ॥ २ ॥ मना कान पुरा उजड़
थया रे । गढ़ दन्त पूरी टूटी पड्या रे ॥मु.
मना आंख नाक पानी वहेरे । नित खास
सांस वढ़ती रहे रे ॥ म. ॥ ४ ॥ मना केश

—विनय—

तर्ज—थाने टेर करीमे मैया तारजीमी ॥ मरी ॥

सुम चरन छुमो जगदीश्वरजी ।
करूँ नम्र विनय अखिलेश्वरजी ॥ टेर ॥
प्रभु अतिशै गिरागुण शोभताजी । प्रभु
अनुपम जगजय ओपताजी ॥ सु ॥ १ ॥
प्रभु स्फटिक सिंहासन राजताजी । त्रय
छत्रहि सिर पर छाजताजी ॥ सु ॥ २ ॥
प्रभु चमर अमरगण ढारताजी । तरु
अशोक शोक संहारताजी ॥ सु ॥ ३ ॥
तुम बैन त्रिजग भव भ्रम नसेजी । सुर
तिर्यंग नर मन सम बसेजी ॥ सु ॥ ४ ॥
प्रभु तारक बिरुद बिचारियेजी । कृपा-
निधि महोदधि तारियेजी ॥ सु ॥ ५ ॥
मम आस लगी जिनराजसूँजी । श्री

च्छाचारी रमतूं। पर की कीरत श्रवण करीने, सम भावे नवि खमतूं॥ ना. ॥१॥ पर वैभव लख धीर धरे नां, मात्सर्यता मन धरतूं। पर वंच वैराग्य कियो सहु, दंभ धरी जग ठगतूं॥ ना. ॥२॥ नैन गिरा श्रुत इन्द्रि आदि, कर पद विहीन है दंतूं। बुद्धि घटी तन एते थकें सहू, तो पण लोभ न यमतू॥ ना ॥३॥ सुकृत कार्यमां विघ्न करे तूं, पर-निन्दा रहे रटतूं। विन अकुश वारुण ज्यों मदमां, त्योंहि मन अनुसर तूं ॥ ना. ॥ ४ ॥ जलधि तरंग चंचल कपि त्योंहि, मन मूरख रहे फिरतूं। ज्ञानी ध्यानी कवहु मानी, निश्चल पन विठरतूं॥ ना. ॥ ५ ॥ लिंग नपुंसक कहे जग तोहूं, काज [illegible] ही करतूं। सेर चालीस थी [illegible] मण, तेथी

समी पोसा यया रे। साहू मन्न चरम
सरकी गया रे॥ म ॥५॥ ममा डूंगर
सम वेरी गई रे। कची वांकी हुई लाठी
गयी रे ॥ म ॥६॥ मना साठी मे पुख
नाठी गई रे। मई लाठी लाया मन में धई
रे ॥ म ॥७॥ ममा खेत समी वजन
पया रे। बोई बीज धर्म फल मां लया रे
॥ मु ॥८॥ मना पुन्य मम्ब गुरु प्यारे रे।
'मुनि सूर्य' अचल पद पारये रे ॥ म ॥९॥

मन

तर्ज—श्री मधु बनमी माणी।

मन मार्ये रहे भमर्दू माय मन मार्ये
रहे ममर्दू। मनुमय रस मधि गमर्दू॥
टेर॥ मास् पमे सम्मान चाहे मम रहे–

कार। प्रकट ही नवनिधि के आगार॥ ॥ भ. ॥ १ ॥ पुत्र कलत्र वंधु पितु माता, और सभी परिवार। देत छेह पल में विन स्वारथ, जो हो सच्चा यार। मित्रवर देखो आंख उघार ॥ भ ॥ २ ॥ सप्त धात विमल पुनि जाति, उन्नत ही आगार। राज मान धन धान ये सब ही, अस्थिर है दुख कार। सार इक नाम जिनन्द का धार ॥ भ ॥३॥ झूठ कपट माया छलवा जी, तज प्रभु से कर प्यार। शुभ अशुभ निज काज किया सो, आप ही भोगनहार निश्चय है झूठा संसार ॥ भ. ॥४॥ अविनाशी अविकार निरंजन, भज मन दृढ़ता धार। पूज्य श्री नन्द पद कज ध्याई, 'सूर्य' कहें हितकार। कीजे निश दिन पर उपकार ॥ भ. ॥ ५ ॥

गति में पहुंचे ॥ मा ॥ ५ ॥ तिथी उत्कृष्टि अन्तर्मुहूर्तमें पहुंच रहे पुनि पहुंचे । मयदस हाथे शैल अयोगी, तब ही है अविचार ए ॥ मा ॥ ६ ॥ अब हम बीते उत्तम नर से वाणी रहे मित दम दे । श्रीमन् पूज्य नमन चरण कज, 'सूर्य मुनि' रहे नमदें ॥ मा ॥ ७ ॥

उपदेश

तर्ज—बाला ऐ बरता है ।

जय जय महावीर सुखकार ।
सुख सम्पत शिव शान्ति निकेतन हैं यह जगदाधार ॥टेर॥ भव भव भ्रांति दुःख को नाशी ताको सुख दातार । रोग शोक सन्ताप दूरत ही, नाम से हो जय

कार। प्रकट ही नवनिधि के आगार॥
॥ भ. ॥ १ ॥ पुत्र कलत्र बंधु पितु माता,
और सभी परिवार। देत छेह पल में
विन स्वारथ, जो हो सच्चा यार। मित्रवर
देखो आंख उघार ॥ भ ॥ २ ॥ सप्त घात
विमल पुनि जाति, उन्नत ही आगार।
राज मान धन धान ये सब ही, अस्थिर
है दुख कार। सार इक नाम जिनन्द का
धार ॥ भ. ॥३॥ झूएठ कपट माया छलबा
जी, तज प्रभु से कर प्यार। शुभ अशुभ
निज काज किया सो, आप ही भोगनहार
निश्चय है झूएठा संसार॥ भ. ॥४॥ अवि-
नाशी अविकार निरजन, भज मन दृढ़ता
धार। पूज्य श्री नन्द पद कज ध्याई,
'सूर्य' कहें हितकार। कीजे निश दिन
पर उपकार ॥ भ. ॥ ५ ॥

भरजन

तर्ज—पीवूं भवजर देव सेव ॥ कवाली ॥

जय जय जगदाधार जगत गुरु सुनिये अरज हमारी ॥ टेर ॥ भव भ्रमण करत संसार भ्रमत ही काल भयो सुख को। यही कुमति कुटेव चित आनी जड़ को मैं चेतन मानी। पारस मणि को छोर लियो हाँ! कंकर कर में धारी ॥ ज ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष मैं पाय कुठार ले कीनो ताको संहारन। अधम मूर्ख अज्ञान लियो माँ जिन पथ मैं सुख धारन। हिंसा में धर्म बतायो कुगुरु कुदेव सुनायो। प्रभु हेतु किया वध जीव जाय के धर्म भांति मैं हितकारी ॥ ज ॥ २ ॥ अगम अगोचर देव जन्म जर मृत्यु गद भय

टारी । ऐसे श्री जगदीश, अक्ष में आन्यो-ताको साकारी । हिंसा झूठ अदत व्यभिचार, कर पाप रुल्यो ससारा । हर भव व्याधि शोक, नाथ मम सेवक लख तूँ उपकारी ॥ ज ॥३॥ जो अनन्त भव विरतंत, अन्त किम ओगुण को थावें । ज्ञाता घट घट भाव, जपे तुज जाप पाप भय विरलावें । प्रभु ऐसो तूं अविरागी, लख आतम दशा अव जागी । सूरिनन्द चरण रज कहें, 'सूर्य मुनि' देओ भवनिध तारी ॥ ज ॥ ४ ॥

तर्ज —जमाना रग बदलता है ॥ गजल ॥

जगत में दो दिन के महेमान । जो जनमे सो निश्चय एक दिन, हो ताको अवसान ॥ टेर ॥ क्यों विरचे जग देख

अथिर ही आ यावत के काम । इस्तुमाल
तम व्यापक है जग का, देखो मित्र सुजान ।
हृदय में ध्याओ श्री भगवान ॥ अ ॥ १ ॥
चिन्तामणि को पाय हाथ में कदर करे
इस्तमाल । काग उड़ावन फैंके ताको, मूरख
भर अज्ञान । नहीं है स्व-पर हित का भान
॥ अ ॥२॥ हृदय भर अहंकार मिले मन,
हूं मैं मति धनवान । अथिर जग्त गये
उस के बाकी है न निशान । वृथा क्यों?
धरता है अभिमान ॥ अ ॥ ३ ॥ चेतन
काल अहो निश लेके घूम रहा है बाण ।
हो सचेत कीजे शुभ काज या दीनन
को दान । कीजे भक्ति पूरा विधान ॥ अ
॥ ४ ॥ यौवन पूर नदी जल जैसे, धावत

आयु हान। सुरिनन्द रज कहे, "सूर्य मुनि" कर आतम कल्यान। धरो मन सतगुरु का श्रद्धान ॥ ज. ॥ ५ ॥

तर्ज—श्रीजिन मुजने पार उतारो ॥ आशावरी ॥

ऐसे निर्ग्रंथ गुरुजी हमारे। जो आप तिरे पर तारे ॥ अज्ञान तिमिर भर्यो घट भीतर, ते सब टालन हारे। मोह निवारे भये जग त्यागी, स्व-पर स्वरूप निहारे ॥ ऐ ॥ १ ॥ त्रस थावर की हिंसा परहर, अनुकम्पा रस प्यारे। झूंठ अदत्त परिग्रह आदि, अघ अष्टादश टारे ॥ ऐ. ॥ २ ॥ नवविध वाड़ सहित ब्रह्मचारी, नारी नागन धारे। वाह्य अभ्यन्तर एक स्वभावे, चरण करण मग धारे ॥ ऐ. ॥३॥ ध्यान धर्म को

अथिर ही जो बादल के काम । इन्द्रजाल सम ज्यान है जग का देखो मित्र सुजान । हृदय में ध्याओ श्री भगवान ॥ ज ॥ १ ॥ चिन्तामणि को पाय हाथ में कहा करे इन्सान । काला कागला फैंके ताको, मूरख मद अज्ञान । नहीं है स्वपर हित का भान ॥ ज ॥२॥ हृदय घरे ओंकार जिने मन, हूं मैं मति धनवान । अथिर आयु गये तन के तापा है न निदान । वृथा क्यों ! करता है अभिमान ॥ ज ॥ ३ ॥ चंचल काल चढ़ो सिर तेरे घूम रहा है प्राण । हो सचेत कीजे शुभ कारज या दीनन को दान । कीजे भक्ति पूरी विधान ॥ ज ॥ ४ ॥ जीवन पूर नदी जल जैसे, रोपत

तर्ज—वारी जाऊँरे सांवरिया तुम पर ॥ सोरठ ॥

एजी क्रोध महा दुःखकार ख्वार पल में करेजी ॥ टेर ॥ इह भव परभव है दुखदाई, भान सर्व हां जाय भुलाई । कई विषखाई, लाज काज त्यागी मरेजी ॥ ए. ॥ १ ॥ निर्दयता घट जाय समाई ॥ करे प्राणवध हिंसक थाई ॥ प्रभुता जाय विलाई, क्रोध हृदये ठरेजी ॥ ए ॥ २ ॥ होय क्रोध में ताको ज्ञानी ॥ कहे तभी चंडाल समानी ॥ माने ना अभिमानी, वाणी प्रभु की ना धरेजी ॥ ए. ॥ ३ ॥ क्रोड़ पूर्व का तप छिन मांई ॥ क्रोध वसे हां देत गमाई रुले अनन्त भव मांही, कहियो जिनवरेजी ॥ ए. ॥ ४ ॥ हाथ पांव दोऊ हृदय धुजावें ॥ नैन लाल विकराल वनावें ॥ भ्रकुटी चढ़ावे किंचित् मूरख ना डरेजी

ध्यावे अहर्निश, आतम रीझ विचारे । आनन्द कन्द चिदानन्द सुमरे अघमल पंक पखारे ॥ पे. ॥ ४ ॥ बाविश परिसह पंच इन्द्रिय को, जीते सम अणगारे । घोर तपोधन समदम पूरे पण परमाद निवारे ॥ पे. ॥ ५ ॥ श्रमण धर्म में रम रहे नित विनकर धर्म उजारे । क्षमा दया वैराग्य समाधि धारी तत्त्व विचारे ॥ पे. ॥ ६ ॥ समाचीर्ण पावन नित वासे समिति गुपति रत पारे । मन्दसूरि रत 'सूर्य मुनि' ऐसे सद्गुरु सुगुण उजारे ॥ ॥ पे. ॥ ७ ॥

○ दान-विषय ○

तर्ज—मारी नाव तमारे हाथे हारी समाल ॥ सोरठ ॥

दीजे दान सयल सुखकार, सदा शुभ भाव से जी ॥ टेर ॥ धन्ना सेठ मुनि लख हर्षावे ॥ घड़ा पान से घृत वहिरावे। प्रथम ऋषभ जिन थावे, दान प्रभाव से जी ॥ दी. ॥१॥ पंचशत मुनि को दान देय कर ॥ हुवे ताहि से भरत चक्रिवर। पाय अमित सुख वैभव, मुक्ति में वसेजी ॥ दी. ॥ २ ॥ मेघरथ भूप दयारस भीना ॥ शरण परेवा ले तन दीना। ऐसे जिनपद लीना, दिव शिव पावसेजी ॥ दी. ॥ ३ ॥ सरल भाव से शंखराय ने ॥ दियो द्राख-जल मुनिराय ने। कंवर सुवाहु सुध दान, दियो हर्षाय से जी ॥ दी ॥४॥ संगम भव

॥ ए. ॥५॥ द्वीपायन ऋषि था तपधारी ॥
क्रोध वसे हो द्वारिका जारी। भारी तप
किये हारी अति क्रोध भरेजी ॥ ए. ॥६॥
प्रीति नम्र होवे फिर नाहीं। वैरी सम
मित्र मित्र सब थाई। जग में अपयश पाई
भाव २ में फरेजी ॥ ए. ॥७॥ क्षमा शस्त्र
जिनके कर माहीं। दुर्जनता की करें
सफाई। क्षमा बिन सब दुःखाई शीतलता
परेखी ॥ ए. ॥८॥ यों जानी समभाव
भरायो ॥ क्षमाधरी आतम हित साधो।
पूज्य मन्न पद पायो 'सूर्य' भव जल तरे
जी ॥ ए. ॥९॥

तर्ज—स्थूलिभद्र कियो है चउमास ॥ माढ ॥

नित वंदू रिठ नेम, यादव वंश सेहरो महाराज हो ॥ या ॥ हैं ब्रह्मचारी आप, सौख्य शिव देहरो ॥ म. ॥ टेर ॥ समुद्र-विजयजी के लाल, राणी शिवादे भली ॥ महा. ॥ तस कूंखे अवतार, लियो अतुल वली ॥ महा. ॥१॥ मिलकर वासव वृन्द, जिनन्द चरने परे ॥ महा. ॥ नील वरण वपु तास, छटा घन की हरे ॥ महा. ॥२॥ व्याहन काज प्रभु आप, चले परिवार से ॥ महा. ॥ पशु की सुन के पुकार, हृदय करुणा वसे ॥ महा. ॥३॥ फेरी रथ तत-काल, दान वर्षी दिये ॥महा ॥ गढ़ गिर-नार पै जाय, प्रभु संयम लिये ॥ महा. ॥ ॥४॥ सुनकर राजुल नार, जिनन्द दीक्षा-

दे दान खीर को॥ चंदनबाला महावीर को। श्रेयांस कुंवर दे इक्षु रस को, मोक्ष पठायसे जी॥ दी ॥५॥ एक क्रोड़ बहु लाख सुवर्ण को॥ देत जिनन्द नित दान भविन को। एक वर्ष लग अन्न को दें दीक्षा धरसे जी॥ दी ॥६॥ तन मन धन से दान देय नित॥ कीजे कारज सकल स्व परहित। रिद्ध सिद्ध पावें इच्छित कर्म खपावसे जी॥ दी ॥७॥ अगणित महिमा कही सुखकारी॥ दान दीये सुख पावें प्राणी। हरिचन्द 'सुनू' वाणी, कहें अध्याय से जी॥ दी ॥८॥

तर्ज—स्थूलिभद्र कियो है चउमास ॥ माढ ॥

नित वंदू रिठ नेम, यादव वंश सेहरो महाराज हो ॥ या ॥ हैं ब्रह्मचारी आप, सौख्य शिव देहरो ॥ म. ॥ टेर ॥ समुद्र-विजयजी के लाल, राणी शिवादे भली ॥ महा ॥ तस कूंखे अवतार, लियो अतुल बली ॥ महा. ॥१॥ मिलकर वासव वृन्द, जिनन्द चरने परे ॥ महा. ॥ नील वरण वपु तास, छटा घन की हरे ॥ महा. ॥२॥ व्याहन काज प्रभु आप, चले परिवार से ॥ महा. ॥ पशु की सुन के पुकार, हृदय करुणा वसे ॥ महा ॥३॥ फेरी रथ तत-काल, दान वर्षी दिये ॥महा.॥ गढ़ गिर-नार पै जाय, प्रभु संयम लिये ॥ महा. ॥ ॥४॥ सुनकर राजुल नार, जिनन्द दीक्षा-

वर्षा ॥ महा ॥ संवेग धर्यो मन मांय सखी शुभ लक्षणी ॥ महा. ॥ ५ ॥ लियो सुवृष बराय, सहेली वृन्द में ॥ महा ॥ ज्योति अखिल प्रकटाय, गये सुख कन्द में ॥ महा ॥६॥ श्री नेम जिनेश्वर आप, पाप रज शिव वरे ॥ महा ॥ जो ध्यावें नर-नार तिमिर दल अपहरे ॥ महा ॥७॥ यों जीव दया दिल लाय, हृदय करुणा धरो ॥ महा ॥ हरिजन्द रज सूर्य', वरे शिवपुर वरो ॥ महा ॥ ८ ॥

॥ जिनवाणी ॥

तर्ज —ख्याल में ।

जिनवर की वाणी सुनिये चित्त आणी प्राणी भाव से ॥ टेर॥ सुखदायक हैं कल्प वृक्ष सम, चिन्ता चूरन हार। भव्यन के उर भ्रमतम भेदन, छेदन, कर्म कुठार हो ॥ जि. ॥ १ ॥ सात नय निक्षेप चारयुत, वाणी गुण पेंतीस। सुणे अमर नर तिर्यंग आदि, समभावे तज रीस हो ॥ जि. ॥२॥ निजपर आतम सूचन को भई, जिनवाणी रवि जोत। भ्रमण करत भव सरित मांहि जसु, मिली तिरन को पोत ॥ जि. ॥ ३ ॥ जन्म मरण दुःख मेटन सुखकर, बोध बीज दातार। वचन अदोषित आदि अन्तसम, परमा-

॥ आ. ॥ ४ ॥ गुरु ब्रह्मा मे विष्णु शंकर, सकल श्रुति गुरु गायो। वीतराग जिन सकल जिनेश्वर, गुरु प्रसाद लखायो ॥ आ ॥५॥ गरुड़ देख सुन पन्नग छिन में, विष जाय भगायो। त्यों गुरु वाणी मिथ्या भ्रमतम पल में जाय विलायो ॥ आ ॥ ६ ॥ अन्तरात्मा का भवन आंजी दूर अ-ज्ञान भगायो। जड़ चेतन दोउ भिन्न बताई आतम ज्योति जगायो ॥ आ ॥७॥ सुखदाई पद पंकज सेवी हृदय अमी बरसायो। अमरचन्द सुत 'सूर्य' हरखधर सद्गुरु कीर्तन गायो ॥ आ ॥ ८ ॥

तर्ज,—ख्याल में ।

गुरुराज तुमारी वाणी हितकारी, भव दुःख भेदनी ॥टेर॥ अमृत धारा सम है वाणी, अनुपम अति सुखदाय । क्षुधा तृषा व्यापे नहीं किंचित्, श्रवण तृपति नहीं थाय ॥ गु ॥१॥ मन हरणी मिथ्यात विनाशक, इच्छा पूरन हार । कल्पतरु सम आप गुरुजी, त्रय दुःख चूरन हार हो ॥ गु ॥२॥ ज्ञान सुधासम भोजन रुच कर, पायो तुम परसाद । संका कंखा मिटी सर्व ही, कीनो जब आस्वाद हो ॥ गु ॥३॥ सुखदाई जहां लहर सरित की, नसें भ्रांति पुनि शोक । त्यों सरित तुम तजी खाल कोऊ, गहे सो मूरख लोक हो ॥ गु ॥४॥ सात भंग निक्षेप चार और,

भव निहार ॥ जि ॥ ४ ॥ जिनवाणी बिन धीर वैन जग पालक ध्यान रसाय। इह वाणी सुन लहैं भव्य सुख, आतम गुण प्रकटाय हो ॥ जि ॥५॥ दादुर नाग मृग तस्कर, भील सुर गजराज। इत्यादिक जिनवाणी को धर, सफल कियो निज काज ॥ जि ॥ ६ ॥ सरस्वती जिनवाणी शुद्ध मन पढ़ें सुने चितलाय। श्रुति वाक्य यों प्रकट बतावें ज्ञानावरण नशाय हो ॥ जि ॥ ७ ॥ स्याद्वाद जिन-वाणी हित कर, भ्रमय मिथ्य संहार। हरिमन्द सुपसाय 'सूर्य मुनि' वंदे बारं बार हो ॥ जि ॥ ८ ॥

तर्ज,—ख्याल में ।

गुरुराज तुमारी वाणी हितकारी, भव दुःख भेदनी ॥टेर॥ अमृत धारा सम है वाणी, अनुपम अति सुखदाय । छुधा तृषा व्यापे नहीं किंचित्, श्रवण तृपति नहीं थाय ॥ गु ॥१॥ मन हरणी मिथ्यात विनाशक, इच्छा पूरन हार । कल्पतरु सम आप गुरुजी, त्रय दुःख चूरन हार हो ॥ गु ॥२॥ ज्ञान सुधासम भोजन रुच कर, पायो तुम परसाद । संका कंखा मिटी सर्व ही, कीनो जब आस्वाद हो ॥ गु ॥३॥ सुखदाई जहां लहर सरित की, नसें भ्रांति पुनि शोक । त्यों सरित तुम तजी खाल कोऊ, गहे सो मूरख लोक हो ॥ गु. ॥४॥ सात भंग निक्षेप चार और,

भव तरणादिक सार । समझायो गुरु भेद विविध से भ्रमतम दियो निवार हो ॥गु ॥४॥ किरपा सिंधु दीन उधारक, शरण सहूं गुरु देव । ऐसे निर्ग्रंथ त्यागी गुरुकी निसको भव भव सेव हो ॥ गु ॥६॥ मैन दपत ना होय वचन से तन मन रहें सु भाव । जिन बोधित जिम आगम भाखी, अनुपम दरें सुभाव ॥ गु ॥७॥ आठ सिद्ध नव सिद्धि सहु पावें गुरु किरपा जब होय । सहितम्य सनू 'सूर्य मुनि' कहें, सुगुरु शरण हो मोष हो ॥ गु. ॥ ८॥

तर्ज —गजल उपदेशी ॥

हमारे धर्म के ऊपर, करूं मै होम निज तन का। अहिंसा धर्म के ऊपर, न्यौछावर है सरव धन का ॥ टेर ॥ कोई नां साथ हो साथी, जुदा हो मित्र और न्याति। छेह तो देत निज जाती, चहे नां सहारा किन का ॥ ह ॥१॥ धर्म जिनराज का सुख कर, हमारे प्राण से प्रियवर। छिनक में ताप त्रय दें हर, सहारा एक है जिनका ॥ ह ॥ २ ॥ करें तन व्याघ्र आ भेदन, करें कोउ शस्त्र से छेदन। विविध कोउ देत है वेदन, तथापि ध्यान है तिन का ॥ ह ॥३॥ नहीं कोई धर्म से वढ़कर, न देखा जक्ष के अन्दर। अधर्म और धर्म में अन्तर, पड़ा जिम आक चन्दन का ॥ ह ॥४॥ चाहे सर्वस्व पिए जावे, डगे

नां धर्म के पथ से । भले कहो मूर्ख सब दुनियां हटे नां ध्यान तोडु मन का ॥ द ॥४॥ मिले अपमान नां कुछ भी, डगे ना सहससुर आवें । सरिमन्द 'सूर्य' दो मार्ग धन्य अवतार है जिनका ॥ द ॥५॥

---

८ —गजल कसेरी ॥

कहे समझाय गुरु ज्ञानी, जगत फानी जगत फानी । सुमति धर ज्ञान उर आनी जगत फानी जगत फानी । टेर ॥ नहीं कोई साथ में आवे जगत सब स्वार्थ दरसावें । धरा धन धान रह जावें, प्रत्यक्ष देखो खरे प्राणी ॥ ज. ॥ १ ॥ समझत् प्यास है जग का मुसाफिर लोग है मठ

का। रहे महिमान दो दिन का, त्यों ही तेरी ये जिन्दगानी ॥ क. ॥ २ ॥ मोह में होय अज्ञानी, करें हिंसा हरष आनी। डरें नां पाप से प्राणी, रुले भवभव में अभिमानी ॥ क. ॥३॥ उमर सब मुफ्त मै खोई, अमृत तज वैल विष वोई। रह्यो मिथ्यात में सोई, नहीं निज हानि को जानी ॥ क ॥४॥ देव गुरु धर्म सुखकारी, धार त्रय रत्न हितकारी। देओ परभाव को टारी, सुगुरु की सीख ले मानी ॥ क. ५ ॥ अमूल्य नर रत्न को पाई, करो हित कार्य सुखदाई। सुरिनन्द 'सूर्य' समझाई वरो वर वेग शिवरानी ॥ क. ॥ ६ ॥

मो धर्म के पथ से। भले कहो मूर्ख सब दुनियां हटे ना ध्यान तोडु मन का ॥ ह ॥४॥ मिले अपमान मो कुछ भी, डरों ना सहससुर आवें। सुरिनन्द 'सूर्य' यों भावे धन्य अवतार है जिसका ॥ ह ॥५॥

८३,—राग भरोसी ॥

कहें समझाय गुरु ज्ञानी जगत फानी जगत फानी। कुमति घर वास कर भामी जगत फानी जगत फानी ॥ टेर ॥ नहीं कोई साथ में आवे जगत सब स्वार्थ दरसावें। धरा धन धान रह जावें, प्रकट देखो मरे प्राणी ॥ क ॥ १ ॥ सामयत् स्याल है जग का मुसाफिर लोग है मठ

हो ॥ क ॥ ४ ॥ नहीं क्रोधी व अहंकारी, नहीं माई व व्यभिचारी। रहे मर्याद कुलधारी, पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क. ॥ ५ ॥ सुशीला है वही नारी, वरेगा ऐसे पति प्यारी। रहें सो श्रेष्ठ सुकुमारी, पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क.॥६॥ कहे सीता वरूँ जैसे, मिलेंगे नाथ गुण तैसे। कियो मैं प्रण हृदय ऐसे, पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क ॥ ७ ॥ सूरि नंदलाल रामचन्द कहे "मुनि सूर्य" हितवाणी। मिले जसु रामचन्द आनी, पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क. ॥ ८ ॥

तर्ज —गज़ल।

कहै सुन्दर सखी मेरा, पतिवर हो तो ऐसा हो। यही है माथ सिर सेप, पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ टेर ॥ जिसमें कुल जात हो ताकी टेक इक सत्य पै ठानी। नीतिवर और सब भाषी पति-वर हो तो ऐसा हो ॥ क ॥ १ ॥ न चोरी जारी का लक्षण करे पर मुख्य ना म-स्कन। दयालु प्रेम का दर्शन पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क ॥ २ ॥ अहिंसा धर्म धारक हो और मिथ्या निवारक हो। सर्व गुणधाम सायक हो पतिवर हो तो ऐसा हो ॥ क. ॥३॥ नहीं अज्ञान के मत में रहे सत् साधु संगत में। भरे नहीं पाप कुपथ में पतिवर हो तो ऐसा

की नारी, बिष दई करे विनाश। नाहक जग अगनी में तपना ॥ ज. ॥ २ ॥ रात दिन उमर जाय बीती, धरे नहीं मन में कछु भीती। शक्ति तन बीरज वय जावें, तोहु नहीं धर्म करन चावें। दोहा ॥ नर-तन सुर दुर्लभ, कह्यो, बार बार नहीं थाय। सुण सतगुरु के बैन को, जन्म जन्म सुख पाय। होगया एक दिन रे खपना ॥ ज. ॥३॥ फँसे क्यों जगत द्वन्द मांई, सार कछु दीसे नां भाई। वृथा नर तन को मतहारे, साथ में खरची ले प्यारे। दोहा ॥ सूरिनन्द सुपसाय से, 'सूर्य' कहें हितवान। कर सुकृत तूं चेत नर, काल सुभट बलवान। गहेगा चहे जहां छिपना ॥ ज. ॥४॥

॥ उपदेशी ॥

तर्ज—कव्वाली ॥ नगर का नायक मै कौन ॥

जगत में कोई नहीं अपना, सतत भवि जिनन्द जाप जपना ॥ टेर ॥ अकेलो आप यहाँ आयो, साथ कोड चीज नहीं लायो । अकेलो अन्तर फिर ध्यायो, साथ कोइ साथी नहीं पायो । दोहा—मात पिता परिवार सब स्वारथ को संसार । बिन स्वारथ से छिन में देखो, घर से देत निकार । समझलो जग है निशि सुपना ॥ ज ॥ १ ॥ मित्र तू समझे है जिनको, शत्रु हो पल में तज तनको । क्रिया मित्र मान प्यार धन को देख तज्यु खुशी आप मन को । दोहा—कोउ किसी के ना बने, हैं स्वारथ के दास । बिन स्वारथ से घर

आप्त वचन यह, निजपर आतम को सू-
चन यह। भव भव दुःख मोचन यह,
सरिता खरीरे ॥ पी.॥४॥ चिंतामणि पुनि
कल्पतरु सम, इच्छा पूरन कामधेनु
जिम। जिनवाणी त्यों अनुपम, रही अमृत
झरीरे ॥पी.॥५॥ सुणे भव्य जो इक चि-
त्तलाई, भ्रमतम ताको जाय विलाई।
आतम गुण प्रकटाई, भवनिध तरीरे॥
पी ॥ ६ ॥ वेदवसुनिधि चन्द सम्वत्सर,
धाम मुंबाई है सहु सुखकर। सूरिनन्द
पद नमकर गुण वर्णन करीरे ॥ पी. ॥७॥

॥ जिनवाणी ॥

तर्ज—म्हारी नाव उतारो पार करो सेवक ॥ छोटा ॥

पीओ जिनवाणी रस प्याला, भरी भरीरे। पी करके हो मतवाला अमृत हरीरे॥ टेर॥ वीर जिनंद मुख निकली वाणी मिलकर सदु के सुधा समाणी। गौतम गुरु वर जाणी, शिव वनिता वरीर॥ पी ॥१॥ मोक्ष सदन इह कमला सुख कर मिटे सर्व ही जन्म मरण डर। पावें पद अजरामर, जिनवाणी धरीरे॥ पी.॥ श्री जिनसेन दयारस पूरन अष्ट कर्मदल कंचन चूरन। राग द्वेष तम झूरन, को साची खरीरे॥ पी ॥२॥ अखिल अरोपित

को, करे सो याद फिर बिरथा ॥४॥ थकी इन्द्रि थकी काया, विकल गति होगई तन की। तोहु विषयांध होकर सो, करें आस्वाद फिर बिरथा ॥ ५ ॥ सूरिनन्द 'सूर्य' कहें जिनको, जिनंद वाणी सुगुरु सेवा। मिला सहु आतम हित साधन, करें परमाद फिर बिरथा ॥६॥

○ हाथ ○

तर्ज—मनाउ म्हेतो श्री अरिहत महन्त ॥

मित्रवर कीजे ऐसे हाथ ॥ टेर ॥

लेय छुरी सम कलम हाथ में- लिखे न झूठी बात। कुड तोला कुड मापा कर कर, कबहुं ठगे नहिं आथ ॥ १ ॥ दीन जनों पै हाथ न डाले, कर करुणा हर्षात।

॥ उपदेश ॥

तर्ज—पंजा

कोई सब हाथ से बाजी, करें विष पान फिर विरथा। करें अन्याय अब काजी, करें फरियाद फिर विरथा ॥टेर॥ कोई पत्थर पै धर करके करें चिन्तामणि चूरन। हुआ है भाग पे पे कर, करें बकवाद फिर विरथा ॥१॥ किया अन्याय से अपना, बड़ा बदनाम दुनियाँ में। त्याग मित्र हाथ से हमदर्द करें मर्याद फिर विरथा ॥२॥ पास में पूर्ण है लछमी करें शुभ काम में ना व्यय। करी बरबाद धन को करें आबाद फिर विरथा ॥३॥ पूर्ण थी पास में सम्पत, बड़ा था नाम दुनियाँ में। फिकर धर पूर्व की रिज

○ देव ○

तर्ज—मनाऊँ म्हेतो श्री अरिहंत महन्त ॥

सब मिल गाओ श्री जिनवीर ॥ टेर ॥

नाम जिसको है सुखदाई, मेटन को पर पीर। जन्म मरण भय व्याधि क्षय हो, पावत भवदधि तीर ॥ १ ॥ देखे देव जगत में केई, धारत विविध शरीर। काम क्रोध मद पूरन दोषित, जिम किं-पाक परीर ॥२॥ तुम विन कोउ न देख्यो स्वामिन् देव अदोषित धीर। तीन भुवन को भ्रमतम मेटन, तू है सत्य महीर ॥३॥ देव अदेव में अन्तर देख्यो, जैसे कनक कथीर। पूरन तू है कल्पतरू सम, अन्य है वृक्ष करीर ॥४॥ अम्बर घन पल मांही जैसे, नासें लगत समीर। त्योंहि वीर के दरश परशतें, भांजत कर्म जंजीर ॥ ५ ॥

दे हाथों से दान दुखित को, जगीमनहु न हात ॥२॥ करें न कभू दुष्टन से मीति, करें सुमित्रन साथ। देख सुगुरु के चरण शीघ्र ही, धरै सुगकर माथ ॥ ३ ॥ कंकण कर पहने नहीं सोहै, सोहै जिनगुण गात। निज हाथों से पर दुख काटे सो है जग विख्यात ॥ ४ ॥ कबहुँ कुचेष्टा करें न कर से करें न जीवन घात। क्षमा ग्रहण धर हाथ कर्मवश मेटत शांति अघात ॥ ५ ॥ करें न काहु संग दुष्टता जिनप्रभु धर्मी वरदात। ध्रुविनन्द सुनू सूर्य मुनि कहें कीजे सुकारज भ्रात ॥ ६ ॥

सुखकारी। हा! मणि मुकर को एक मानकर, कीनो भवख्वारी ॥ २ ॥ मिथ्या तिमिर निवारक जिनजी, भवभ्रम भय-हारी। कर किरपा अब नाथ कृपालु, दे तारक तारी ॥ ३ ॥ मंगलकारी देव, अ-मूर्तिक तू है अविकारी। अब लियो चरण में शरण सतत तूं, भव भव किर-तारी ॥४॥ सादि अनन्त सिद्धपद तुमरो, जन्म मरण टारी। अमित ज्ञान दर्शन मम दीजे, शिव सुन्दर नारी ॥ ५ ॥ पूज्य श्री नन्दलाल मुनीश्वर, भव्यन हितकारी। शरण 'सूर्यमुनि' आय पड़ा है, जावूँ बलिहारी ॥ ६ ॥

भव नीरज शुचि दर्पन को, धीर मिरा-
जिम धीर। भ्रमभरु पंक प्रक्षालन को
इह नाम है विशुद्ध सुनीर ॥ ६ ॥ भ्रमत
फिरत संसार मांहि हों ! काल भयो
अति धीर। सरिगम रत्न 'सूर्यमुनि' कहैं,
भव दुखसिंधु गहीर ॥७॥

○ विनय ○

तर्ज—प्रभु मम सुगर सुख धाम।

अरजी हमारी एक दयालु लीजे अब
धारी। मैं सेवक सरबे आप विनय अति
करता हितकारी ॥ टेर ॥ भीम भयानक
भववन कीजे सब पारी। गति चारों है
दुखदाय, तामें भटक्यो अविचारी ॥
१ ॥ श्री अरिहंत से देव सेवना धारी

हाथ कंकण। करते हैं मोज मानी, मन में गुमान लाकर ॥ ५ ॥ है माल महल उनके, रहने को खूब सूरत। लूले अपंग जैसे, सोते उमर विताकर ॥६॥ लक्ष्मी की अन्धता में, लखते न दीन जन को। किंचित् दया का अंकुर, अब तो हृदय धराकर ॥ ६ ॥ हा! बन रहे विधर्मी, लाखों अनाथ प्राणी। सत धर्म छोड़ निज कर, बनते हैं भ्रष्ट जाकर ॥७॥ धन प्राण जाय तो भी, रक्षा तो उनकी कीजे। सूरि-नन्द 'सूर्य' वाणी सुण भर्म को भगाकर ॥ ६ ॥

○ अनाथ ○

तर्ज—कव्वाली।

शुभ भावों से हमेशा, दुखियों के
दुःख लिया कर। जो है अनाथ दुखिया
ताको दें कुछ दिया कर ॥ टेर ॥ फिरते
बिचारे दरबदर, भूखों के मारे अनहद।
आधार वे रहे हैं तुम तो कोई दयाकर
॥१॥ इस पापी पेट कारण दिन दुगना को
धारें। कई बाहर आ रहे हैं किंचित् भी
मन दयाकर ॥२॥ निज पुत्र ही को माता
खाती है भूख कारण। उनके दुखों में
कुछ ही मन ध्यान तो किया कर ॥ ३ ॥
जाते हैं जिसके घर पै, वैसे हैं मार पता।
सुनते नहीं हमारी कुछ ध्यान भी लगा-
कर ॥ ४ ॥ कंठी गले लगाई कोड पार

सुगुरु सुदेवों को ध्याओ, अहिंसा धर्म उरलाओ। करो निज आत्म हित साधन, तजो अभिमान रे ! प्राणी ॥४॥ श्री जिन वैन उर आनो, मिथ्या पाखण्ड सहु जानो तजो जड़ देव अविरागी, भजो सुविकाश निर्वाणी ॥ ५ ॥ रतन चिन्तामणि तज के, गहो नां काच और कंकर। पाय नरतन वि-रथा त्योंहि, करोनां रत्न की हानी ॥ ६ ॥ श्री सूरिनन्द गुरुवर के चरण रज 'सूर्य' कहे हितकर। अनादि तोड़ वसु बन्धन, वरीजे सौख्य शिवरानी ॥ ७ ॥

○ उपदेशी ○

तर्ज—गजल ।

सुनावेंगे सकल जग को, हमारे वीर की वाणी। हटावेंगे अधम हिंसा बतावें धर्म हित जानी ॥ टेर ॥ पड़े क्यों हो भरम तम में अनादि नींद में अब तक। हिताहित भान निज कीजे, वृथा खोवो न जिन्दगानी ॥ १ ॥ तात और मात सुत भ्राता सकल परिवार पुनि माता। सदा निज स्वार्थ दरसाता, कहें समझाय गुरु ज्ञानी ॥ २ ॥ जहां तक पूर्व का पुण्य है वहां तक देखलो वैभव। क्षणिक से सर्व दिखलावें कहे ज्ञानी जगत फानी ॥ ३ ॥

सुगुरु सुदेवों को ध्याओ, अहिंसा धर्म उरलाओ। करो निज आत्म हित साधन, तजो अभिमान रे। प्राणी ॥४॥ श्री जिन वैन उर आनो, मिथ्या पाखण्ड सहु जानो तजो जड़ देव अविरागी, भजो सुविकाश निर्वाणी ॥ ५ ॥ रतन चिन्तामणि तज के, गहो नां काच और कंकर। पाय नरतन वि-रथा त्यौंहि, करोनां रत्न की हानी ॥ ६ ॥ श्री सूरिनन्द गुरुवर के चरण रज 'सूर्य' कहे हितकर। अनादि तोड़ वसु वन्धन, वरीजे सौख्य शिवरानी ॥ ७ ॥

○ उपदेशी ○

तर्ज—मेरे मैया तू कभी भुलाने मुझे ॥

हम वीर वाणी को सुनाय जायेंगे। हम सोये हुए को जगाय जायेंगे ॥ टेर ॥ काल अनादि जगत में भ्रमण कियो अज्ञान। राग द्वेष मिथ्यात्व में पड खोयो ममाल। ताको धर्म का रास्ता बताय जायेंगे ॥ हम ॥१॥ निज आतम गुण भूल के पुद्गल संग अनुराग। दिन दिन तृष्णा बढ़ रही ज्यों तृण लागत आग। ताको समता का ज्ञान कराय जायेंगे ॥ हम ॥२॥ चतुर्गति संसार में भ्रमण कियो अविचार। काम क्रोध मदपूर में डूब रहे मझधार। उनको धर्म की नौका दिखाय जायेंगे ॥ हम ॥३॥ जड़ चेतन एक

मान के, करत जीव की हान। स्व-पर हित का है नहीं, किंचित् ताको भान। शुद्ध श्रद्धा में उनको लगाय जायेंगे ॥ ह. ॥ ४ ॥ सुखदानी भववारणी, वाणी अमी समान। सूरिनन्द सुनू हित कहें, तज मिथ्या अभिमान। जिन वाणी का प्याला पिलाय जायेंगे ॥ ह ॥ ५ ॥

॥ कहां हमारे वीर ॥

तर्ज —गजल।

कहां गये भारत के ऐसे, वीर नर अब इन दिनों। कहां चमन आबादियां, सूखा है सर अब इन दिनों ॥टेर॥ कहां गये वह धर्म के, झण्डे उड़ाते जगत में। तकरार आपस में करें, उत्साह धर अब

इन दिनों ॥ १ ॥ कहां गई वह ताकतें, और कहां गई आजादियां। कहां गई वह धर्म श्रद्धा, सुखकर अब इन दिनों ॥ २ ॥ मुनिराज गौतम से कहां उपवास से अथवा मुनि। समा अर्जुनसी नहीं आती नजर अब इन दिनों ॥ ३ ॥ आनन्द जैसे श्राद्ध कहां कहां काम देवस से हैं वीर। कहां गई सीता सती सम, और सुन्दर इन दिनों ॥४॥ बाहुबलि से सूर कहां पदवी कहां भरतेश की। सम्यक्त्व कहां श्रेणिक की कहां नीतिवर अब इन दिनों ॥ ५ ॥ श्याम गज सुकुमाल का बुद्धि अभय जैसी कहां। कहां शालिभद्र से हैं श्रेष्ठ घर अब इन दिनों ॥ ६ ॥ काढते जड़ आपकी, ले हाथ में तीक्ष्ण कुठार। जिन मार्ग में हा! क्लेश का होता समर अब

इन दिनों ॥ ७ ॥ मान ईर्षा द्वेष में, देते हजारों खर्च कर। कैसे प्रबल हो पक्ष यों धरते फिकर अब इन दिनों ॥ ८ ॥ ज्ञान तप संयम किया, सब मान को अर्पण करें। हा! बाह्य आडम्बर लिये, कसते कमर अब इन दिनों ॥ ६ ॥ खूब तूने अब तलक, नीचा दिखाया धर्म को। कुछ भी सम्भालो होंस अपनी, हो चतुर अब इन दिनों ।१०। दे कलंक सत् धर्म को, उन से भी नीचा है कोई। क्यों पाप गठरी बांध के, खोते उमर अब इन दिनों ॥११॥ वस कहने का कुछ और है वर्ताव उनका और है। उपदेश उनका और है, ऐसे खुघर अब इन दिनों ॥ १२ ॥ क्या था करने का अवश्य, क्या हानियां होने लगी। किंचित भी तुमको है नहीं, दिल

में खातर अब इन दिनों ॥१३॥ हा ! पूर्वजों
के नाम को निर्मूल किमोगे तुमा ! क्यों
न तुम पै उनकी वाणी हो अमर अब इन
दिनों ॥ १४ ॥ सरिजन्म पदपंकज शरण हे
मुनि सूर्य हितकारी कहे । हे प्रभो !
चतुर्संघ में सद्बुद्धि धर अब इन दिनों
॥ १५ ॥

तर्ज—गजल ।

काहे क्यों मन फिकर प्राणी गया सो
तो नहीं आवे । लिखा है जन्म जब आके
अवश्य ही यहां से जावे ॥ टेर ॥ जो है
आयुष्य का बंधन यही सब भोगता प्राणी
टूटे आयुष्य तब यहां पे घड़ी इक रहीन
नां पावे ॥ १ ॥ जहां तक जीव है तन में

करे हैं आस सौ प्राणी। तभी तक देख लो सगपन, सभी आकर के दरशावे ॥ ॥ २ ॥ देही को अग्नि में धरकर, करे हैं छार पल भर में। न साथी साथ कोई आवे, प्रेम उस वक्त छिटकावे ॥३॥ मुसाफिर मान निज मठ को, विताया वर्ष कई रह कर। हुआ तब नाश तन मठ का, कहो कैसे रहिन पावे ॥४॥ मोह में मुग्ध हो नारी, शरण ले अगन की जाके। कूट ले छाजियां छाती, सभी सुध बुध को विसरावे ॥ ५ ॥ दीप में तेल हो जहां तक, रहे ज्योति प्रकट वहां तक। खुटा है तेल दीपक का, तभी ज्योति नहीं रहावे ।६। करे किसका फिकर मनमें, हँसे क्यों खुद निडर होकर। तूही है काल का भोजन, आज वह काल में धावे ॥७॥ करे

जो पाप पुन प्राणी उदय आता सो ही दरसावे । रहा संयोग था तब तक, नैन से नीर क्यों बहावे ॥ ८ ॥ इन्द्र चक्रि भूपत सब ही गये हार ! काल से हारी । रहे कोई स्थिर नहीं यहां पै कई ज्ञानी यों समझावे ॥ ९ ॥ करो सब धर्म मन आनी, समय मिलता नहीं हर्गिज । सुरिवन्द पद शरण लेकर सत्य यों 'सूर्य' बतलावे ॥ १० ॥

धर्म—पचासी ॥ तर्ज ॥

उपकारी गुरुदेव हमारे सुखकारी गुरुदेव ॥ टेर ॥ एवमीक गिरी सम पद बृत को । पालत हैं स्वयमेव ॥ ह ॥ १ ॥ भीम भयोदधि भ्रमण करत जस । तारन

है ततखेव ॥ ह ॥२॥ गुरु दीपक गुरु इन्दु जग में । है नहीं गुरु कोउ एक ॥ ह.॥३॥ ज्ञानांजन कर भ्रमतम मेट्यो । जो है अनादि कुटेव ॥ह.॥४॥ रत्नत्रय सुध मार्ग वतायो । सुमति हृदय में ठेव ॥ ह. ॥५॥ जड़ चेतन दोऊ भिन्न लखायो । गुण ज्ञानादि अछेव ॥ ह. ॥ ६ ॥ श्री सूरिनन्द 'सूर्य मुनि' पभरो । कीजे सुगुरु की सेव ॥ ह ॥ ७ ॥

○ जिनगुण ○

तर्ज,—ना छेड़ो गाली दुगारे भरवा दो मोहे नीर

सव मिल के जिन गुण गाओ रे, मन प्रेम धरी नरनार ॥ टेर ॥ है नाम जिनन्द सुखदाई, दे जामन मरण मिटाई । भज

अजर अमर हो जाओ रे ॥ म ॥१॥ छल कूड़ कपट को त्यागो श्री वीतराग पथ लागो। शुभ देव गुरु को ध्याओ रे ॥म॥ २॥ है कूड़ क्लेश की खानी, हो द्रव्य कुटुम्ब की हानी। मिथ्या जड़ से दूर भगाओ रे॥ म ॥३॥ सब लघु बड़े मिल भाई, कर आपस में मिलाई। सब जाति कुरीत मिटाओ रे॥ म ॥४॥ जो जाति भांति उजियारा समझकर सब से हित प्यारा। फिर धर्म ध्वजा फहराओ रे॥ म ॥५॥ सुरिनन्द सूर्य मुनि' गाई जय कहो वीर की भाई। नित वात्सल्यता दर साओ रे॥ म ॥६॥

मंगल

श्री धर्मदास मुनीश पट पै रामचन्द्र मुनीश थे। माणिक्य मुनि जसराज मुनि विख्यात प्रज्ञाधीश थे॥ श्री मन्मयाचंद्रार्य के पटयुग अमर सूरीश थे। केशव तथा मोखम मुनीश्वर नन्द मुनि गण ईश थे॥ १॥ धर्मोपदेशक थे दयालु पूज्य श्री माधव मुनि। कोविद विविध ज्ञाता स्व-पर के पोत सम थे वह गुनी॥ थे वह धुरंधर धर्म के पुनि जैन में वरवीर थे। तत्पाट पै चम्पक मुनीश्वर भव्य तारक धीर थे॥ २॥

॥ राग—भैरवी [illegible] स्तुति ॥

जगनाथ दास की ये, सुनिये विनय अरदासी। सेवक अधम तुम्हारा, एक दर्श का है प्यासी ॥टेर॥ चौरासी लख भटका कीना ज्यों देव भटका ॥ चौंधा रही मैं लटका सहि दुःखभार खासी ॥ ज ॥१॥ बस हाथ पर समाये निज आतम गुण भुलाये ॥ सुमती सभी रहाये, कुमती कुटिल है दासी ॥ ज ॥२॥ कोई कुकर्म कीना, निज गुण बिसार दीना ॥ अब तो शरण तुम्हीं का लेकर भया उदासी ॥ ज ॥३॥ देखा न देव तुमसा तिहुं लोक में है भगवन् ॥ रही नाम सर्व शक्ति तेरी अचल विलासी ॥ ज ॥४॥ सूरिमन्द्र गुरु पसाये कर जोड़ कर गुजारे ॥ मुनि सूर्य दास तेरा दें ही बसे विलासी ॥ ज ॥५॥

।। तर्ज—कव्वाली ईश प्रार्थना ।।

जय जय परम पिताजी, तेरा सहाय जग में ॥ स्वामी तेरी शरण से होता नहीं अलग मै ।। टेर ॥ छुट जाय कर्म सारे, भगजाय भर्म भारे ॥ इक नाम तुम समाया, मेरे रगोहि रग में ॥ ज.॥१॥ देखा है अन्य जग में, कामी विरूप देवा ॥ तुझ पंथ के शिवाना, भरता न अन्य डग में ॥ ज ॥२॥ है गुण गरिष्ट तेरा, महिमा अजब है भगवन् ॥ तेरी कृपा से तिर्यग, जाता उरग सुरग में ॥ ज ॥३॥ हो मोह के विवश मैं, कीना है क्रूर कर्मों ॥ सच्चा तेरा हु भगवन् , तस्कर पतीत ठग मै ॥ ज ॥ ४ ॥ हे पार्श्वनाथ पावन, तेरा परम सहारा ।। सूरिनंद 'सूर्य' प्रतिपल, पड़ता है नाथ पग में ॥ ज ॥ ५ ॥

॥ तर्ज—कव्वाली मार्चना ॥

तेरी जिनेश हम पे किरपा कमाल होगा । तब हो उद्धार मेरा, हिरदा विशाल होगा ॥ टेर ॥ अरिकर्म से हटाना, सतधर्म में लगाना । निज दास पे कृपा की दृष्टि रसाल होगा ॥ ते ॥ १ ॥ कीजे अनाथ पावन संपत अखूट दीजे । सद् ज्ञान चक्षु देके हरना जंजाल होगा ॥ ते ॥२॥ मन ये चपल है दुखी रहता विषय में लपटा ॥ भवताप से हमारा कबहुँ निकाल होगा ॥ ते ॥३॥ दुखी दीन की पिपासा, कर पूर्ण सर्व आशा । सुख आत्म गुण विकासा तुमसे दयाल होगा ॥ ते ॥ ४ ॥ महिमा अपूर्व तेरी, इक नाम में रही है । सब कर्म मर्म मिट के मेरा

निहाल होगा ॥ ते.॥५॥ प्रतिदिन तुम्हारी भक्ति, मन में समा रही है ॥ सूरिनन्द सूर्य मुनि पै, तेरा ख्याल हो ॥ ते ॥६॥

॥ तर्ज—क़व्वाली ॥ उपदेशी ॥

नहीं है खबर किसी को, दुनियां में आज कल की ॥ शुभ कार्य चाहे कर ले, मालूम नहीं है पल की ॥ टेर ॥ दुख हेतु भोग जगके, लख शहत की छुरी से ॥ यौवन अथिर ज्यों विदूयुत, दिन चार की है झलकी ॥ न ॥१॥ मतकर गुमान तन पै, दुर्गंध से भरी है ॥ अस्थिर यही है बुदबुद, जैसे कुशाग्र जल की ॥ न. ॥ २॥ कर ले भलाई प्यारे, यहां कौन स्थिर

रहा है ॥ आया वही सो जावे, हरपोट पाप मल की ॥ म ॥ ३ ॥ धनमाल म्हेल सारे सब छोड़ होय न्यारे ॥ साथी न होय तबही फौजें चढ़ी अजल की ॥ म ॥४॥ भोगों में रक्त होके यौवन अफल गमाया ॥ आई जरा अवस्था, लाली गई है ढलकी ॥ म ॥५॥ जाता समय अफल ये कुछ धर्म कर पियारे ॥ सब सिद्ध होय जिसके मति धर्म में अचल की ॥ म ॥६॥ हरिमन्द गुरु पधारे 'मुनिसूर्य' यों उचारे ॥ जिन जैन धर्म धारे, तिन भावना सफल की ॥ म ॥७॥

॥ तर्ज—कव्वाली ॥ उपदेशी ॥

सोते हुआ सबेरा, अब क्यों न आंख खोलो ॥ ज्ञानी गुरु सतत यों, कहते विचार तोलो ॥ टेर ॥ नर देह तू ने पाई, क्या क्या करी कमाई ॥ नहीं पर करी भलाई, नाहक फजूल डोलो ॥ सो. ॥१॥ निज आतम के समाना, पर जीव को पिछाना ॥ सन बोलरे सयाना, मुख से न झूठ बोलो ॥ सो. ॥ २ ॥ कीजे सुकाज प्यारे, जगजाल को हटा रे ॥ कर भर्म कर्म न्यारे, तप-नीर मांहि धोलो ॥ सो. ॥ ३ ॥ भज जैन सत्य धारो, मिथ्यात्व को निवारो ॥ पथ जैन का विचारो, मुश्किल मनुष्य चोलो ॥सो.॥४॥ सुन्दर सुसौख्यकारी, ले जैन बैन धारी ॥ सुरिनंद 'सूर्य' सारी, धर सीख त्याग को लो ॥ सो.॥५॥

तर्ज—कव्वाली ॥ प्रार्थना ॥

हो अन्त के समय तक भगवन् शरण तुम्हारा ॥ हो आपका सहारा, मन में लगन तुम्हारा ॥टेर॥ प्रतिपल हो तेरी भक्ति, बढ़ती हो ज्ञान शक्ति ॥ हो मेरे हृदय प्रकाशा, तारन तिरन तुम्हारा ॥ हो ॥ १ ॥ स्वाध्याय ज्ञान सेवा श्री संघ की हो हम से ॥ हो दीन की भलाई, सेवक चरण तुम्हारा ॥ हो ॥ २ ॥ होवे प्रकाश हृदय में सत् ज्ञान का उजाला ॥ सब कामना सफल हो मन हो मगन हमारा ॥ हो ॥३॥ सब जीव को क्षमा के सब वैर को मिटा के ॥ आतम सद्गुं समाधी पंडित मरण हमारा ॥हो.४॥ सुरिन्द्र सूर्य की ये छमिये विनय दयालु ॥ तिहुं ताप पाप सब ही कीजे हरण हमारा ॥हो ५॥

गजल—प्रार्थना ॥

आनंदसिंधु नाथ मुझे पार तो करो। निज दास खास जानके उद्धार तो करो॥ टेर॥ अविनाशी तेरे शरण में चाकर पड़ा सदा ॥ धर हाथ नाथ माथ पे आनंद तो करो ॥ आ. ॥ १ ॥ तृष्णा तरंग अङ्ग में चक्कर लगा रहा ॥ दुखदाय कर्म आठ ये सब छार तो करो ॥ आ. ॥२॥ मात तात भ्रात आथ पर्म है तूही ॥ ज्ञान भान दान ये किरतार तो करो ॥ आ ॥ ३ ॥ अधम उधार आप पाप ताप त्रयहरो। मन कामना सब पूर्ण इस बार तो करो ॥ आ ॥ ४ ॥ श्री नंदसूरि 'सूर्य' की ये अर्ज तो सुनो ॥ शिव शर्मनाथ देय के अविकार तो करो ॥ आ. ॥ ५ ॥

तर्ज—उत्तम ॥ कवेली ॥

प्रभु नाम आप नाथ से प्रति दिन लिया करो ॥ जो दीन दुखी जीव का दुख को दिया करो ॥ टेर ॥ उत्ता समय अमूल्य ये कुछ धर्म तो करो ॥ क्रोध लोभ त्याग के समता लिया करो ॥ प्र ॥ १ ॥ लज्जा दया सुशीलता त्यागो न सत्यता है जिन बैन सुधा प्रेम से] अविछिन पिया करो ॥ प्र ॥ २ ॥ पर ममता अभिमान तज परगुण गहा करो ॥ वाणी सुभाखी बोल के सुख से जिया करो ॥ प्र ॥ ३ ॥ नित दान अभय दैय के परहित किया करो ॥ तारन तरन जिनराज के शरणा गहा करो ॥ प्र ॥४॥ धर्म पंथ छोड़ और ध्यान ना धरो ॥ श्री सरिमन्धलाल के पद कंज हिया करो ॥ प्र ॥ ५ ॥

तर्ज—गजल ॥ उपदेशी ॥

सीधा है जैन पथ ये इस पर चले चलो। राग द्वेष टाल के बेडर चले चलो ॥टेर॥ क्षमा दया सन्तोष शील ध्यान तो धरो ॥ निज आथ ज्ञान साथ में लेकर चले चलो ॥ सी ॥ १ ॥ षट काय जीव जन्तु की करुणा किया करो ॥ शुभ दान अभय हाथ से देकर चले चलो ॥-सी ॥ २ ॥ वसु कर्म है अनादि के इनसे टरा करो ॥ तप ध्यान शस्त्र हाथ ले शिवपुर चले चलो ॥ सी. ॥ ३ ॥ जैन बैन ध्यान लाय ज्ञान तो धरो ॥ श्रद्धान जैन शास्त्र की मन धर चले चलो ॥ सी ॥ ४ ॥ जैन धर्म छोड़ कभी और ना चहो ॥ श्री नंदसूरि शरण ले पद पर चले चलो ॥सी ५॥

राग—नाथ किसे मन की मन सुहानी ॥ सवैया ॥

नाथ कैसे भक्ति तुम्हारी पावे मन चंचल स्थिर ना रहावे ॥कैसा ध्यान धरी जब बैठे तुमरत विपरीत ध्यान ले आवे ॥ तस्कर दुष्ट जलविध मेरे आतम माल छिपावे ॥ ना ॥ १ ॥ बुद्धि नहीं और ज्ञान आप नहीं श्रद्धा नहीं दर आवे ॥ क्यों कर मन निश्चल ये होवे मोह मद मा लिपटावे ॥ना ॥२॥ प्रतिपल छिन २ मांही पलटे तपजप नाहि सुहावे ॥ मन मतंग बिन अंकुश यह है कपि ज्यों नाच नचावे ॥ ना. ॥३॥ पञ्च चोरे पञ्च इन्द्रिय वश हो वश पर नाच जितावे ॥ जांको साधे सो सब साधे तब शिव पंथ पठावे ॥ ना.॥४॥ कीजे नाथ अचल अब मन को विभ्रम

सर्व पलावे ॥ विषय भोग बंधन से मुक्ति होकर अलख लखावे ॥ ना. ॥ ५ ॥ प्रीतम पद्म प्रभो परमातम् मुझ भव भ्रमण मिटावे ॥ नंद सूरिश्वर पद कंज प्रणामी 'सूर्य मुनि' कथ गावे ॥ ना. ॥ ६ ॥

तर्ज--मेरे शम्भू तु काशी बुलाले मुझे ॥ प्रार्थना ॥

होगा सेवक शरण निभाना तुम्हें ॥ होगा शिवसुख स्थान बताना तुम्हें ॥टेर॥ नहिं जान पड़ता है हमें कुछ भेद तत्वा-तत्त्व का । है भान नहीं कुछ भी हृदय में ज्ञानदीपक सत्त्व का ॥ होगा पंथ विशुद्ध जताना तुम्हें ॥ हो ॥ १ ॥ भोगादि पाया स्वर्ग में देवी करोड़ों भी भई । पाया अ-

सच्चा प्रभु तब नहीं लालसा मन की
गई ॥ होगा सन्तोष प्रभु दिलासा तुम्हें
॥ हे ॥२॥ पाऊँ कहां तुमको सभी लासी
घनेरे वेष थे । नहीं पावता आकर किसे
एकता सर्वाच्छित सेव थे ॥ मम नीति से
होगा सुहाना तुम्हें ॥ हे ॥३॥ जगदीश
दीन दिवाकर नमो अविकार अगवाधार
है । श्री मंत्र 'सर्प' कर जोड़ यों करता
नमन हरवार है ॥ तुम्हें वाणी से होगा
लगाना तुम्हें ॥ हे ॥ ४ ॥

तर्ज—बनजारा ॥

प्रभो प्रियतम पदकंज धारे, सो अपने काज सुधारे ॥ टेर ॥ तज मिथ्या जिन मगधारा, जड़ चेतन लखता न्याराजी ॥ निज पर को विमुख निहारे ॥ सो ॥१॥ जग कुगुरु कुदेव तज दीना, एक धर्म अहिंसा लीनाजी ॥ वैरी कर्म सभी संहारे ॥ सो ॥ २ ॥ सद्दुपुद्गल जाण पराया, जग अध्रुव लख विसरायाजी ॥ धर तप जप उर सुविचारे ॥ सो. ॥३॥ जड़ पूजा तज दी सारी, निज भान लह्यो सुविचारी जी ॥ पर भाव करें सब न्यारे ॥ सो.॥४॥ श्रीवीतराग उर आने, सम भाव दया पर-ठाने जी ॥ पद नंद सूरीश्वर धारे ॥सो.५॥

संध्या प्रभु तब नहीं लालसा मन की गई ॥ होगा सन्तोष प्रभु दिखाना तुम्हें ॥ टेर ॥२॥ चाहें क्या तुमको तजी स्वामी मनेरे देव पै । नहीं याचना आकर किये रहता मनस्थित सेव पै ॥ मय प्रीति से होगा सुझाना तुम्हें ॥ टेर. ॥३॥ जगदीश दीन दिवाकर नमो अविकार जगदाधार है । श्री मंत्र 'सूर्य' कर जोड़े जो करता नमन हरवार है ॥ मुझे ध्यानी से होगा लगाना तुम्हें ॥ टेर ॥ ४ ॥

पाप में धरे झूठ परिहारे ॥ है ॥ ४ ॥ है श्रेष्ठ देव जो वीतराग उर धारा ॥ निर्ग्रंथ गुरु है जग जन के हितकारा ॥ है धर्म अहिंसा श्रेष्ठ धरो उर प्यारे ॥ है ॥ ५ ॥ यों देवगुरु पुनि धर्म विमल पहिचानो ॥ कहे 'सूर्यमुनि' जिन वैन हृदय में आनो॥ श्री सूरिनन्द के पद कंज भर्म निवारे ॥ है. ॥ ६ ॥

भजन—उपदेशी ॥

सुमरन कीजिये रे, जिनवर नाम सदा हितकारी ॥ टेर ॥ अनन्त काल भव भ्रमण करत सब, सुधबुध दई विसारी । तदपि किंचित् भान न पायो, भव भव हुओ खुवारी ॥ सु ॥ १ ॥ देख विमासी

[illegible] ॥

है देव वही जो राग द्वेष से न्यारे ॥
है ज्ञानी वही जो पाप सर्व संहारे ॥टेर॥
तप वही सत्य जो, कर्म सभी हर डारे ॥
है दान वही जो दुख दीहन हो न्यारे ॥
है शील वही जो दुर्गति अघमल टारे । है
॥ १ ॥ है ध्यान वही जो भव बन्धन को
जारे ॥ है ज्ञान वही जो आतम गुण
दर्शियारे ॥ चारित्र वही जो नूतन बन्ध
निवारे ॥ है ॥ २ ॥ गति श्रेष्ठ वही जो
जहां से नहिं फिर आवे ॥ है सत्य वही
जो पर मन नहीं दुखावे ॥ है गुणी वही
जो पर के गुण सम्भारे ॥ है ॥ ३ ॥ वर
वैभवता की तृष्णा हीन पै भरते ॥ है श्रेष्ठ
क्षमा जो क्रोध जरा ना करते ॥ धर मौन

पाप मे धरे झूठ परिहारे ॥ है. ॥ ४ ॥ है श्रेष्ठ देव जो वीतराग उर धारा ॥ निर्ग्रंथ गुरु है जग जन के हितकारा ॥ है धर्म अहिंसा श्रेष्ठ धरो उर प्यारे ॥ है ॥ ५ ॥ यों देवगुरु पुनि धर्म विमल पहिचानो ॥ कहे 'सूर्यमुनि' जिन वैन हृदय में आनो॥ श्री सूरिनन्द के पद कंज भर्म निवारे ॥ है ॥ ६ ॥

भजन—उपदेशी ॥

सुमरन कीजिये रे, जिनवर नाम सदा हितकारी ॥ टेर ॥ अनन्त काल भव भ्रमण करत सब, सुधबुध दई विसारी । तदपि किंचित् भान न पायो, भव भव हुआो खुवारी ॥ सु ॥ १ ॥ देख विमासी

धनश्री—धन्य घड़ी ॥

है देव वही जो राग द्वेष से न्यारे ॥ है ज्ञानी वही जो पाप सर्व संहारे ॥टेर॥ तप वही सत्य जो कर्म सभी हर डारे ॥ है दान वही जो दुख दीनन हो न्यारे ॥ है शील वही जो दुर्गति मगमत डारे । है ॥ १ ॥ है ध्यान वही जो भव बन्धन को काटे ॥ है ज्ञान वही जो आतम गुण उजियाले ॥ चारित्र वही जो नूतन बन्ध निवारे ॥ है ॥ २ ॥ गति श्रेष्ठ वही जो जहां से नहिं फिर आवे ॥ है सत्य वही जो पर मन नहीं दुखावे ॥ है गुणी वही जो पर के गुण सम्भारे ॥ है ॥ ३ ॥ धन वैभवता की तृष्णा दीन पी करते ॥ है श्रेष्ठ क्षमा जो क्रोध कभी ना करते ॥ पर मौन

गजल—उपदेशी ॥

जो प्रेम से जिन नाम को, रटना वही सुख पायगा ॥ सब कर्म से निर्लेप हो, शिवधाम में वह जायगा ॥टेर॥ दिन चार की है जिंदगी प्यारे विचारो गौर कर ॥ दौलत खजाना मित्रवर सब साथ में नहीं आयगा ॥ जो ॥ १ ॥ अनित्यता जगवस्तु की, लख त्यागिये परतंत्रता ॥ निज भाव में तू रक्त बन, समता हृदय तप लायगा ॥जो ॥२॥ कर सोध तत्त्वातत्व की, हिंसा अधम त्यागन करो॥ सुदेव गुरु पुनि धर्म की, श्रद्धा न उर ठहरायगा ॥ जो ॥ ३ ॥ होना नहीं जल वून्द से मन शुद्ध

तज अगमासी वासी हृदय विचारी ।
वीतराग वर धार जैन मग तज मिथ्या
मति नारी ॥ सु ॥४॥ नर्क निगोद रुल्यो
अति चेतन गेंद बड़ी ज्यों भारी ॥ पुन्य
उदय उत्तम भव पायो, निर्मल नर भव
धारी ॥सु.॥५॥ जैन धर्म परम शिव साधन,
कर सिद्धि योग सुधारी ॥ बार बार नर
देह न पावे जैसे रत्न भिखारी ॥सु.॥६॥
भव भक्ति से जिन अभिषाला सब दुख
देय विडारी ॥ जिन सुमरन बिन और न
देख्यो पावन परम सुखारी ॥ सु ॥ ८ ॥
अधम पतित तिरे जिन सुमरन देवे भव
भय टारी ॥ मन्त्र यतीश्वर 'सूर्य मुनि'
कहे भज जिनवर अविकारी ॥ सु. ॥९॥

गज़ल—उपदेशी ॥

जो प्रेम से जिन नाम को, रटना वही सुख पायगा ॥ सब कर्म से निर्लेप हो, शिवधाम में वह जायगा ॥टेर॥ दिन चार की है जिंदगी प्यारे विचारो गौर कर ॥ दौलत खजाना मित्रवर सब साथ में नहीं आयगा ॥ जो ॥ १ ॥ अनित्यता जगवस्तु की, लख त्यागिये परतंत्रता ॥ निज भाव में तू रक्त बन, समता हृदय तप लायगा ॥जो ॥२॥ कर सोध तत्त्वातत्व की, हिंसा अधम त्यागन करो ॥ सुदेव गुरु पुनि धर्म की, श्रद्धा न उर ठहरायगा ॥ जो.॥ ३ ॥ होता नहीं जल बुन्द से मन शुद्ध

तीरथ न्हाय से ॥ काम क्रोधादिक नहीं जीते पछी पछतायगा ॥ जो ॥४॥ मिलता नहीं हरवक्त में, मानुष्य जीवन सार ये। श्री नन्दसूरि शरण ले, सुख पायगा हर्ष पगा ॥ जो ॥ ५॥

तर्ज—[illegible] । [illegible]सी ॥

है समस्तम्) जैन जग में क्यों हृदय लाते नहीं ॥ सागर दयामृत तोय में क्यों निमजर न्हाते नहीं ॥ [illegible] पर मात्र की हिंसा किये नहीं धर्म हो सकता कभी ॥ अज्ञान पट्टा दूर कर सत मार्ग पे आते नहीं ॥ है ॥१॥ क्रोध हिंसा मूठ चोरी और धन का त्यागना ॥ पाप माया-

दश कभी करते न करवाते नहीं ॥है ॥२॥
है विरागी देवता में राग वा नहिं द्वेष हैं॥
सब कर्म बन्धन नाश कर के जन्म जर
पाते नहीं ॥ है.॥३॥ है गुरु निर्ग्रंथ त्यागी
जर जमी पुनि नार को ॥ काच कंचन
सम गिने, ममता हृदय ध्याते नहीं ॥है ॥
॥ ४ ॥ उत्कृष्ट अहिंसा धर्म है रक्षा जहां
षट जीव की ॥ लक्षण विमल ये धर्म धर
दुर्गति कभी जाते नहीं ॥ है ॥ ५ ॥ यों
देव गुरु पुनि धर्म धर मिथ्यात्व को त्या-
गन करो ॥ सूरिनन्द पद सेवे वही निज
शुद्ध विसराते नहीं ॥है ॥६॥

तर्ज—गजल ॥ कवाली ॥

फिरता इधर से तू उधर, हरदम्म नाना धाम है ॥ निज आतम तीरथ में नहीं न्हाया किया आराम है ॥ठेरा गंगा गया जमुना गया, हरिद्वार या परियाग में ॥ न्हाया तथा धापा किया, तो भी मिला ना श्याम है ॥ फि. ॥ सिर पै जटा धारी धरी धुनि काम में सेवन किया ॥ भस्मी लगाई देह में, ले रूप आठों याम है ॥ फि. ॥ वन में रही फल फूल को, खाया तथा पानी पिया ॥ सदि धर तन कर कायक्लत् सीना न कुछ विस्राम है ॥ फि. ॥ मुख मौन धर लोचन करे, ऊंचा नहीं ऊंची बने ॥ सब जल तज मढ़ा रखे पर सिद्ध हो नहीं काम है ॥फि.॥ सम्यक

दर्शन ज्ञान विन क्रिया निरर्थक है सभी॥ अकाम होती निर्जरा जिन वैन विन निष्काम है॥ फि॥ निजरूप बिन पहिचान से मृगमद भरे फिरता फिरे॥ गुण आत्म के होवे प्रकट आता वही निज ठाम है॥फि.॥ मन शुद्ध विन चाहे कई तप जप क्रिया तीरथ करो॥ सूरिनन्द सुनू जिन वैन से, पाता अटल सुखलाम है॥ फि॥

ईश प्रार्थना ॥ कव्वाली ॥

महिमा तुम्हारी भगवन्, जगमें दिखा रही है॥ मघवा थके अनंते, नहीं पार आ रही है॥ टेर॥ कैवल्य ज्ञान दर्शन शक्ति तथा अनंती॥ तुम ज्ञान गुण

मिलाप की ज्योति जगा रही है ॥ म ॥१॥ मृत्यु जरा जनम को, सब के अटल बने हैं ॥ तुम में न मोह माया, सुमिराण्ता रही है ॥ म ॥ २ ॥ पावन परम मयाला, तिहु लोक में उजाला ॥ तेरा अनूप दुनियां इक नाम ध्या रही है ॥ म ॥३॥ तुही धर्म की है नौका माता पिता तुही है ॥ भक्ति तुम्हारी सबही कुमती हटा रही है ॥ म ॥४॥ मिथ्या मिलन मिलाप को, दीजे जिनेश हमको ॥ सुरिलब्ध की कृपा से सुमती समा रही है ॥ म ॥ ५ ॥

तर्ज—गजल ॥ प्रार्थना ॥

सुखकर कृपा मय आपका सुन्दर मनोहर रूप है ॥ तिहुँ लोक में मिलता नहीं, तुझ देवसा चिद्रूप है ॥टेर॥ है नेत्र केवल ज्ञान दर्शन धर्म का आनन महा ॥ भवि जीव उद्धारन लिये युग हाथ तुझ गुण तूप हैं ॥ सु. ॥ है वीतरागी देव तू अविकार निर्मल देह में ॥ तलवार तप धारन करी जीते महा वसु भूप है ॥ सु ॥ रक्षा करे जग जन्तु की सागर दया का तू विभो ॥ तारक तुही पालक तुही तुझ दीद परम अनूप है ॥ सु.॥ शान्ति शान्ति नाम से हो सिफ्त ये तेरी महा ॥ तिहुँ योग जपता नाम तुझ पड़ता नहीं भव कूप है ॥ सु. ॥ सूरिनन्द गुरुवर देव से

पाया अलौकिक वेष में ॥ सब 'सूर्य' हो मम कामना, भर ध्यान का मद्या धूप है ॥ ३ ॥

राग—भाटी ॥ सवैया ॥

तुम्ही हमारे नाथ हो, मैं दास तेरे चरणों का ॥ टेर ॥ हो तुम देव विरागी त्यागी अपर देव देखे सब रागी ॥ काम क्रोध मद में मोह लखे तुम अपवाद हो ॥ नाश कीना सब कर्मों का ॥ मैं ॥ १ ॥ करता हरता तू नहीं स्वामी अलख अगोचर अन्तर्यामी ॥ तेरा नाम अमित सुख धामी, सब जग में विख्यात हो ॥ मुझ पार लगादो नौका ॥ मैं ॥ २ ॥ अनंत चतुष्टय तुम भर पूरा नाप तिहूँ कीना चक

चूरा ॥ राग द्वेष कीना सब दूरा, घट घट के तुम ज्ञात हो ॥ मुझ सहाय तेरे चरणों का ॥ मै. ॥३॥ सच्चा संभव तू है स्वामी सब गुण नायक नहीं है खामी ॥ नंदसूरि शिष्य कहे सिरनामी, तुम्हीं सच्चे पितु मात हो ॥ कुछ रहा न मन में धोका ॥ मै. ॥ ४ ॥

राग—पजाबी ॥ ज्ञानविषे ॥

मिलती है मुक्ति ज्ञान से, यों जैन शास्त्र फरमावे ॥ टेर ॥ प्रथम ज्ञान फिर दया बतावे, ज्ञान विना समकित नहीं पावे ॥ क्रिया अफल विन ज्ञान दिखावे, ज्ञान सुधा विन पान से ॥ नर योंही जन्म गमावें ॥ यों. ॥ १ ॥ ज्ञान अखूट है द्रव्य खजाना, कभी नाश नहीं होय निधाना ॥

सुख सम्पत सो पावे नामा, कमी न विघा दाम से ॥ किंचित् भी हानी पावे ॥ यों ॥ ॥ २ ॥ ज्ञान दीप जिसके उर मांही प्रकट चराचर तत्त्व दिखाई ॥ रहे छुप जिनसे कछु नांही सब सिद्ध होय आसान से ॥ जग में नर पूज्य कहावें ॥ यों ॥३॥ ज्ञान बिना नर पशु समाना होय हिताहित का नहीं भाना ॥ भवगत स्वगत् उसे पि-छाना जहां जाय तहां अपमान से ॥ दुख बार बार दरसावें ॥ यों. ॥४॥ यदि चाहो निज सर्व कल्याना, आतम हित अरु पर कल्याना ॥ मन्त्र सुरीश्वर पदकज ध्याना ज्ञान पढ़ो इक ध्यान से ॥ सब "सूर्य" संपती पावे ॥ यों ॥५॥

भजन ।

जिनका बेड़ा पार है, नित ध्यान प्रभु भक्ति में ॥ टेर ॥ सकल तजी संसार उपाधि, त्याग क्लेश मन धरी समाधी ॥ सर्व कर्ममल तजता व्याधि, दीना भर्म विडार है ॥ इक ध्यान जैन सुक्ति में ॥ नि. ॥ १ ॥ तप जप संयम द्रव्य कमावे, विषय वासना बंध मिटावे ॥ आलस आसरकों विरलावे, सम्यक ली मल धार है ॥ रहे मगन अमित शक्ति में ॥ नि. ॥ २ ॥ काम क्रोध मद बन्धन जारे, कंचन काच सम हृदय विचारे ॥ जड़ को तज निज गुण सम्भारे, तज कुमत सुमत मन धारे है ॥ शिव शर्म यही युक्ति में ॥ नि. ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव संग तज प्यारा, धर्म

सुख सम्पत सो पावे नाना, कमी न विपा
दाम से ॥ किंचित् भी हानी थावे ॥ यों ॥
॥ २ ॥ ज्ञान दीप जिसके कर मांही प्रकट
बराबर तत्त्व दिखाई ॥ रहैं गुप्त जिससे
कछु नांही, सब सिद्ध होय आसान से ॥
जग में नर पूज्य कहावे ॥ यों. ॥३॥ ज्ञान
बिना नर पशु समाना होय हिताहित ज्ञान
नहीं माना ॥ अज्ञानस स्वानवत् उसे पि-
छाना जहां जाय तहां अपमान से ॥ दुख
बार बार दरसावें ॥ यों ॥४॥ यदि चाहो
निज सर्व कल्याना आतम हित अब पर
कल्याना ॥ नम्र सुरीश्वर पदपंकज ध्याना,
ज्ञान पढ़ो इक ध्यान से ॥ तब "सूर्य"
संपती पावे ॥ यों. ॥५॥

में रावण गया विलाई ॥ दीनी सोवन लंक गमाई, निशदिन रहे क्यों सोय के ॥ फिर रहेगा हृदय खटकता ॥ क्यों. ॥३॥ वार वार नरतन नही पावे, नन्द सूरीश्वर यों समझावें ॥ जो नर जपतप धर्म कमावे, ले माया मल को धोय के ॥ जस काल न व्याल गटकता ॥ क्यों. ॥४॥

राग—पंजाबी ॥ उपदेशी ॥

निज दोनों जन्म सुधार के, कर नेक कमाई लीजे ॥ टेर ॥ स्वप्न समान अथिर जग जाणा, रंक स्वप्नवत् इसे पिछाना ॥ कुटुम्ब और परिवार खजाना, दुखदाई संसार के ॥ सब राग द्वेष क्षय कीजे ॥ क. ॥ १ ॥ कुटुम्ब कबीला काम न आवे, धन दौलत यहां पै रह जावे ॥ अटल

महिमा से डर पाता ॥ मग सूरीश्वर से पर सहारा, कहे 'सूर्य' यही सुविचार है ॥ हद श्याम सौख्य मुक्ति में ॥ नि ७॥

राग—भैरवी ॥ कव्वाल ॥ आर्शेवा ॥

मन माया वश होय के क्यों भूल निरे भटकता ॥ टेर ॥ यह माया दुखदाई जग में होता क्लेश पूर्ण पग-पग में ॥ देते सब जन पेद खिमक में ले मोच गोस सत जोप है ॥ क्यों करसे मणी पटकता ॥क्यों ॥१॥ कोउ किसी के साथ न आता सदु स्वारथ के दास दिखाता ॥ होकर रस घम में मुरझाता आखिर रहेगा धेय है ॥ तू रहेगा बीच लटकता ॥क्यों. ॥ मत कर मान अप मन मांही किम

॥ चाल पजाबी ॥ माला ॥

ले माला करमें काठ की नर भजन करन को वैठा ॥ टेर ॥ कर में माला फिरे विचारी, रही जीभ मुख में जिनधारी ॥ मनवा चहुँ दिश फिरता भारी, रही धुन शास्त्र के पाठ की ॥ पर मन विषयों में पेठा ॥ न ॥१॥ वाह्याडाम्बर खूब बतावे नित्य नया सो ढोंग दिखावे ॥ मन को काबू में नहीं लावे, होगई उमर जब साठ की ॥ तोहु पाप करने में सेंठा ॥ न. ॥२॥ धन तन पर होकर मद माता, किंचित् धर्म न वात सुहाता ॥ दिन दिन तृष्णा में मुरझाता, परणी कन्या आठ की ॥ है घर में पोता बेटा ॥ न ॥३॥ दृढ़ आसन कर मन वस लाओ, वाह्याडम्बर सर्व

साथ इक धर्म रहावे, सेवो धर्म तन धार
के ॥ जिन वीर प्रभो सुमरीजे ॥ क. ॥२॥
कहाँ तक जग से मोह धरेगा इक दिन
जग से कूच करेगा ॥ कर्म किया निज
दुःख भरेगा मिथ्या भर्म विसार के । जिन
दान दीन को दीजे ॥ क ॥ ३ ॥ कर सत
संग काम पड़ भाई अफल गया मत फिर
पछताई ॥ तन धन मन से करो भलाई
मोह ममता को मार के ॥ भवि पर उप
कार करीजे ॥ क ॥४॥ श्री वीतराग कर
प्यारो प्राणी मीठ मीठ है भर जिन-
वाणी ॥ मग्न सूरीश्वर कहे हितवाणी
कर मनन 'सूर्य' सुविचार के ॥ तज
वंछित कारज सीझे ॥ क ॥५॥

दारिद नहीं पावे, रोग सोग संकट विर-
लावे ॥ प्रेतादिक ना दोष रहावे, फल हो
इनकी सेव का ॥ तुम अक्षय शिवपुर
वरलो ॥ इ. ॥ २ ॥ पूर्व चतुर्दश सार यही
है, परम श्रेष्ठ नवकार यही है ॥ जिन
मुनियों विस्तार कही है, है पूरन स्थान
अमेव का ॥ कर सुमरन पातिक हरलो
॥इ.॥३॥ वरन करत गुण अन्त न आवे,
कोटि जिव्हा हु थक जावे ॥ अधम मनुज
शिव सुरग पठावे, तस जाप जपी नित
मेव का ॥ संसार समुंदर तिरलो ॥ इ. ॥
४॥ लाखों नर इस मंत्र प्रभावें, मन चिं-
तित सिद्धि सब पावें ॥ हित धर नंद
सूरि समझावे, कर ध्यान 'सूर्य' अतएव
का ॥ गुण ज्ञान खजाना भरलो ॥ इ. ॥५॥

मिटाओ ॥ धन सम्पत में मत ललचाओ चंचलता ज्यों हाट की ॥ श्री सतगुरु पद कंज मेरा ॥ म. ॥४॥ क्षमा दया सन्तोष विचारा ममता मयका शुद्ध कर प्यारा॥ मन्त्र सूरीश्वर कहे हितकारा, अस्थिरता सम्राट की ॥ मत फिरे अकड़ में पैंठा ॥ न ॥ ५ ॥

राग—रसती ॥ पंचपरमेष्ठी स्तुति ॥

इक मन्त्र परमेष्ठी देव का अति शुभ तन मन वश करलो ॥ टेर ॥ पंच परमेष्ठी सब सुख दाता जन्म जरा त्रिहुं ताप मिटाता ॥ सब मन्त्रों में श्रेष्ठ विख्याता दायक सुख अशेष का ॥ नित ध्यान हृदय में धरलो ॥ इ. ॥ १ ॥ तस्कर मय

दारिद नहीं पावे, रोग सोग संकट विर-
लावे ॥ प्रेतादिक ना दोष रहावे, फल हो
इनकी सेव का ॥ तुम अक्षय शिवपुर
वरलो ॥ इ. ॥ २ ॥ पूर्व चतुर्दश सार यही
है, परम श्रेष्ठ नवकार यही है ॥ जिन
मुनियों विस्तार कही है, है पूरन स्थान
अमेव का ॥ कर सुमरन पातिक हरलो
॥इ.॥३॥ वरन करत गुण अन्त न आवे,
कोटि जिव्हा हु थक जावे ॥ अधम मनुज
शिव सुरग पठावे, तस जाप जपी नित
मेव का ॥ संसार समुंदर तिरलो ॥ इ ॥
४॥ लाखों नर इस मंत्र प्रभावें, मन चिं-
तित सिद्धि सब पावें ॥ हित धर नंद
सूरि समझावे, कर ध्यान 'सूर्य' अतएव
का ॥ गुण ज्ञान खजाना भरलो ॥ इ ॥५॥

राग—केदारी ॥ प्रभाती ॥

प्रभु डूबत हूँ मझधार में, लो बांह पकड़ कर मेरी ॥ टेर ॥ मैं हूँ अनाथ नाथ तुम मेरा सेवक शरण लिया है तेरा ॥ हरलो सब भव संकट फेरा प्रतिपल तुम आधार में ॥ अब मोपे करो न देरी ॥ लो ॥ १ ॥ जैसे लगे तिमिर विषारी पाप घोर अन्धकारवत् भारी ॥ भस्म किनक में करे अग्नारी यों तुम नाम विचार में ॥ सब होय भस्म अघ ढेरी ॥ लो ॥ २ ॥ अनन्य सहारा तेरा जग में शरण गहूँ तेरा पग पग में ॥ तुम पै श्रद्धा हूँ रग रग में तुम सम नहीं संसार में ॥ सब देखा है जग हेरी ॥ लो ॥ ३ ॥ कीजे मेरा पाप निकन्दन छगनस्वामी भव ठेपी मेटन।

नंदसूरि पद करके वन्दन जिनवाणी आधार में ॥ रहि 'सूर्य' लही सुख सेरी ॥ लो. ॥ ४ ॥

वशीकरण पजाबी भजन ।

एक वशीकरण हम पास है जग वस में सब हो जावे ॥ टेर ॥ प्रथम मिष्ट सब से तुम बोलो वचन मर्म किसके मत खोलो ॥ पहिले हिरदा मांही तोलो सब जन होता दास है ॥ नहीं शत्रु तिनके पावे ॥ ज. ॥ १ ॥ दान अभय दीजे हित जाना सब दानों में श्रेष्ठ बखाना । पेख परम करिये शुभ दाना दुख दोहग होवे नाश है ॥ शिव अमित शर्म दरसावे ॥ज. ॥ २ ॥ तृतीय विनय गहो मन मांही धरो सरलता तज कुटिलाई । धर्म मूल विनय

कहावे सब मंत्रों में खास है। यों जैन बैन बतलावे ॥ अ ॥ ३ ॥ पञ्चगुरु जीपा मन कहीजे पराघाताय् मुख से नम कीजे। असार तजि मम सार गहीजे जब प्रगटे आतम विकास है। शिव साधन परम कहावे । अ ॥ ४ ॥ वशीकरण से चार मंत्र हैं अपर व्यर्थ सब तंत्र तंत्र हैं। सगे नहीं जो मूढ मंत्र हैं तहे वही त्रिपनाश है। कहे सूर्य अभय पद पावें सब ध्या

राग—कवाली कवाली ॥

नर ईश्वर का आप जप तू क्यों नाहक जन्म गमावे ॥ टेर ॥ सुख शांति मय जिनका शरणा पतित पावन जिनवर परणा । प्रतिपक्ष ध्यान हृदय में धरना तब पै जग सन्ताप नहीं ॥ कोई साथ किसी

के नावे ॥ क्यों. ॥ १ ॥ निष्फल आयुष्य बीता जावे खोटा धन्धा कर ठगखावे। दीन अनाथ दुखी सन्तावे भोगे निजकृत आप तूं ॥ क्यों खोटा द्रव्य कमावे ॥क्यों. ॥ २ ॥ क्षण भंगुर तन जान सयाना मत कर तिन में मान गुमाना। मोह माया में क्यों मुरझाना निष्फल करता पाप तूं ॥ कर सुकृत पाप विलावे ॥ क्यों. ॥ ३ ॥ पथिक समान आश्रम ये जाना आखिर तन जल भस्म समाना। वार वार नर-तन नहीं पाना हरजन्म जरा त्रयताप तूं॥ ले वीतराग उर भावे ॥ क्यों. ॥ ४ ॥ सुर दुर्लभ नर देही प्यारे कोड़ी कानी में क्यों हारे। नंद सूरीश्वर पद् कंज धारे रट जिन नाम अलाप तूँ ॥ फिर भवसागर तिर जावे ॥ क्यों ॥ ५ ॥

कहाई सब मंत्रों में खास है ॥ यों जैन जैन बतलावे ॥ अ ॥ ३ ॥ पद्युत वीया मन कहीजे परापश्यात् मुख से बच दीजे। असार तजि मन सार लहीजे तब प्रगटै आतम विकास है ॥ शिव साधन परम कहावे ॥ अ ॥ ४ ॥ वशीकरण है चार मंत्र है अपर सबही सब तंत्र मंत्र हैं। लगे नहीं जो मूल स्वांग है लहे वही शिवनाथ है ॥ कहे सूर्य आनन्द पद पावे ॥ अ ॥

राग—बिली ज्योती ॥

नर ईश्वर का जाप जप तू क्यों ना-हक जनम गमावे ॥ टेर ॥ दुख शांति मय जिनका शरणा पतित पावन जिनवर वरणा। मतिपल ध्यान हृदय में भरना तन पै जग सन्ताप दें ॥ कोई साथ किसी

के नावे ॥ क्यों. ॥ १ ॥ निष्फल आयुष्य बीता जावे खोटा धन्धा कर ठगखावे। दीन अनाथ दुखी सन्तावे भोगे निजकृत आप तूँ ॥ क्यों खोटा द्रव्य कमावे ॥क्यों. ॥ २ ॥ क्षण भंगुर तन जान सयाना मत-कर तिन में मान गुमाना। मोह माया में क्यों मुरझाना निष्फल करता पाप तूँ ॥ कर सुकृत पाप विलावे ॥ क्यों. ॥ ३ ॥ पथिक समान आश्रम ये जाना आखिर तन जल भस्म समाना। वार वार नर-तन नहीं पाना हरजन्म जरा त्रयताप तूं ॥ ले वीतराग उर भावे ॥ क्यों. ॥ ४ ॥ सुर दुर्लभ नर देही प्यारे कोड़ी कानी में क्यों हारे। नंद सूरीश्वर पद् कंज धारे रट जिन नाम अलाप तूँ ॥ फिर भवसागर तिर जावे ॥ क्यों. ॥ ५ ॥

॥ धर्म ॥

कीजे धर्म सुधारस पान ॥ टेर ॥ जो धर्मामृत पिये प्रेम से, दुर्गति हो अवसान । संकट विकट विनाश सर्वथा पावे अचल निधान ॥की ॥१॥ जीवन धर्मामृत को तज के करो न मिथ्या पान । दुख सिंधु जिम में सब जीवें मंगल धर्म सुजान ॥ की ॥ २ ॥ ममता मैल हट ज्ञान नीर से धोय स्वच्छ धर ध्यान ॥ अस्थिर सम्पत पाय करो मत निर्धन ताप मान ॥ की ॥ ३ ॥ धर्मीजन को सुपथ अमर है हो तस आतम कल्यान । अधम उधार-ण परम धनी है धर्म अचल शिवस्थान ॥ की ॥ ४ ॥ जाको प्रतिपल धर्म एक मन रखे अटल अज्ञान । चोसठ मघवा भूपति

ताको, वन्दे युगकर पाण ॥की. ॥५॥ डिगे न कबहुं देव डिगाये, योग तिहुं थिर-ठाण ॥ नन्द 'मुनि सूर्य' धर्म के लक्षण दस पहिचान ॥ की. ॥६॥

॥ प्रार्थना ॥

कृपालु कीजे कृपा लख दास ॥ टेर ॥ राग द्वेष से दूर बने हम, प्रकटे ज्ञान उजास ॥ वीतराग जिन धर्म अराधें, होवे आतम विकास ॥ कृ. ॥ १ ॥ करे सहायता एक एक पै, द्वेष पंक हो नाश । तन मन वच से सेव संघ की, होवे सतत प्रयास ॥ कृ. ॥२॥ निज स्वरूप गुण ज्ञान दर्श और,

प्रकटे सम सुविभास । जन्म जरा मृत्यु
भय दुख पे, तज दीजे अरिपास ॥ ह० ॥
३ ॥ सत्या सत्य विचार बने चित होय
श्रेष्ठ अभिलासा । जैन धर्म मुनि सब
शास्त्रों का होय तमें अभ्यास ॥ ह० ॥४॥
मदन मान दलेश सुख प्रकटे, होवे शिव-
पुर वास । अपकर्म बन्धन क्षय होवे
पूरण इच्छित आस ॥ ह० ॥५॥ इह परभव
में शरण होय, श्री वीतराग अविनाश ।
मन्त्र सूरीश्वर 'सूर्य मुनि' यों करता है
अरदास ॥ ह० ॥ ६ ॥

तर्ज—भजन ॥ प्रार्थना ॥

तुम विन है नहीं सहायक और ॥टेर॥
मात पिता प्रियनारी जग में, बन्धु मित्र करोर। छेय देय विन स्वारथ छिन में होवे हृदय कठोर ॥ तु ॥१॥ सच्चा सहाय शरण सौख्यवर, तिहुं लौकिक सिरमौर। भव भ्रमण मेटे सब भगवन्, क्षय करदे अघ घोर ॥ तु. ॥२॥ पतित कर्म में किया कृपालु, तेरा सच्चा चोर। दुर्गति पड़े अधम दास की, रखिये जीवन डोर ॥ तु ॥३॥ देव अन्य तज लहि तुम सेवा, जैसे चन्द्र चकोर। रत्नत्रय तिहुं योग आराधी, दियो कुमत मत छोर ॥ तु ॥४॥ अजीतनाथ अब कीजे कुछ भी, दीन अर्ज पै गौर। नंदसूरि सुनु 'सूर्य' यों, विनय करें कर जोर ॥ तु. ॥५॥

हमारा मन ।

हमारा मन जिम ऐसा होय ॥ टेर ॥
मैत्री भाव और वात्सल्यता मन मन में
प्रतिपल होय ॥ ज्ञान नीर से ममता मल सब
ही मेरे मन में धोय ॥ ह ॥१॥ राग द्वेष
संयम चारित्र से मन हो मन में होय ।
तप संयम पर अनुकूल पाई कबहुं मिले
शिवलोय ॥ ह ॥ २ ॥ पंचाश्रव आलस्य
ममता मेरे मन में जोय । ब्रह्मचर्य चा-
रित्र पद मन इस बिन परम न कोय ॥
ह ॥३॥ मन वाणि दुर्गम कर डारे तातें
गर्व न मोह । बाह्य अभ्यंतर परिग्रह
त्यागु कबहु मन को मोह ॥ ह ॥ ४ ॥
परोपकार पर द्रव्य सरलता सम्यक्
दृष्टि विलोय ॥ गच्छधारि 'मुनि सूर्य' कहे
मन धीर दयामृत लोय ॥ ह ॥ ५ ॥

तर्ज—गजल ॥ उपदेशी ॥

तजे जो सत्य के पथ को, वही नर दुःख पावेगा ॥ धर्म हिंसा हृदय धारे, महा दुख सो उठावेगा ॥ टेर ॥ करे पर प्राण की हिंसा, कहें मुख वैन सहु झूठे । करे चोरी ममत आदिक, विषय को नां हटावेगा ॥ त ॥ १ ॥ कुगुरु कुदेव की संगत, रहे मिथ्यात्व मद माता ॥ पार टूटी हुई नौका, कहो कैसे लगावेगा ॥ त ॥ २ ॥ लखे तन पंच तत्वों का, नहीं चैतन्य को माने ॥ रहा नास्तिक सो पूरन, स्वर्ग कैसे सिधावेगा ॥त ॥३॥ अधमगति जायगा प्राणी, न धारे जैन की वाणी ॥ परम जिनराज को तज के, अन्य को स्वर झुकावेगा ॥ त ॥४॥ बुराई जो करे परकी उसी की होयगा हर्गिज । जो खोदे खाड

सो पकुता मरी उसमें समावेगा ॥ त ॥ ४॥ काच को रत्न सम जाने त्योंहि जड़ देव को माने ॥ तजी चैतन्य जड़ पूजे, बुधि जड़ सो समावेगा ॥ त ॥ ६ ॥ छोड़ माया अथिर जग की सुगुरु सुदेव को ध्यावो ॥ सूरीश्वर मंत्र पद सेवे, वही मो क्षगं अ वेगा ॥ त ॥ ७॥

८३—गजल ॥ कव्वाली ॥

जिनेश्वर धर्म के वास्ते बताना ही मुनासिब है ॥ अहिंसा धर्म का करना कराना ही मुनासिब है ॥ टेर ॥ अगाध भव सिंधु में नर की रही टूटी पड़ी नौका ॥ धर्म के तीर पर धरना, चलाना ही मुनासिब है ॥ जि ॥१॥ भरत जिन-राज की वाणी प्रमाण निक्षेप मय

जाणी । उसी को भाव से सुनना, सुनाना ही मुनासिब है ॥ जि ॥२॥ अहिंसा सत्य अरु ब्रह्मव्रत, तथा अस्तेय निर्ममता ॥ पंच गुण पै सतत बढ़ना, बढ़ाना ही मुनासिब है ॥ जि ॥ ३ ॥ राग द्वेष की जहां पै, बढी हो आग की ज्वाला ॥ उन्हीं से दूर हो हटना, हटाना ही मुनासिब है ॥ जि ॥ ४ ॥ हृदय समभाव नित लाना, भगाना द्वेष के पक्षी ॥ विषय विष भोग से बचना, बचाना ही मुनासिब है ॥ जि. ॥ ५ ॥ सूरि नन्दलाल पद ध्याई, अटल जिन वैन पै रहना ॥ 'सूर्य' भवसिंधु से तिरना, तिराना ही मुनासिब है ॥जि ॥६॥

तर्ज—गजल ॥ कवाली ।

विमल कर भाव सुख भर के सभी को हम खमाते हैं ॥ हुआ अपराध जो हम से द्वेष मन का मिटाते हैं ॥ टेर ॥ चउरासी लाख है जोनी जीवों की जैन में भाखी प्रम पूर्वक उन्हीं से हम चर सबही नमाते हैं ॥ वि ॥ १ ॥ प्रकट था गुप्त से अविनय हुआ मनवाग या काये। सभी से हम क्षमा मांगें नम्रता धर जताते हैं ॥वि ॥२॥ मूल है जीव में कई अनादि से पड़ी भारी ॥ भई हो पाप करमों से अमित अपगुण दिखाते हैं ॥ वि ॥३॥ द्वेष रागादि बंधन में छिपा है प्रेम पर जन पे । उन्हीं से शुद्ध भावों कर प्रेम बंधन हटाते हैं ॥ वि ॥ ४ ॥

हमारे होय सब भ्राता, धरे मैत्रियता दिल में ॥ सूरीश्वर नंद पद कंज से, अटल शिव शर्म पाते हैं ॥ वि. ॥५॥

पूज्य गुण चेतन चेतोरे दम वोल जग१ में ।

नित गुण गाओरे, श्री नंद सूरीश्वर ध्यान लगाओ रे ॥ टेर ॥ मालव मंजुल जनपद पत्तन, खाचरोद सुखकारी रे ॥ तात नगीनालाल आपके, अमृत महतारी रे ॥ नि. ॥ १ ॥ संवत गुन्नीसे साल गुन्नीस में, शुभ वेला शुभ वारी रे जन्म लियो श्री पूज्य आपने, मंगलकारी रे ॥ नि. ॥ २ ॥ मुनीश्वर गिरधरलाल गुरु से, वोधामृत सुन पायारे ॥ करी सगाई त्याग हृदय, वैराग्य समाया रे ॥ नि. ॥ ३ ॥

गुन्नीसे चालीस साल में धारा नगरी मांही रे ॥ उत्तप संयम पारम कीना कीरती छाई रे ॥ मि ॥४॥ इकवीस वर्ष की उमर मांही मे गुरु भक्ति चितलाया रे ॥ शांत समाधी महागुण कर तस्वज कहाया रे ॥ मि ॥ ५ ॥ गाम नगर पुर पाटन विचरत भव्य जीव समझायारे ॥ अन्तिम अस्थिर जाण देह अनशन मन ठायारे ॥ मि ॥ ६ ॥ संवत गुन्नीसे साल गुन्यासी गाम रतनपुर मांही रे ॥ तीन योग शुभधार स्वर्ग में पुण्य सिधायारे ॥ मि ॥ ७ ॥ उस पाटोपर पंडित भूपम माधव मुनि महाराया रे ॥ "सूर्य मुनि" कहे दिन दिन जिनका तेज सवायारे ॥ ॥ मि ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ तर्ज कव्वाली चतुर्विंशति स्तुति ॥

चौबीस ईश जग के, श्री संघ के सहायक ॥ हे भव्य भद्र भविके, शिव सौख्य के प्रदायक ॥ टेर ॥ आदे अजीत सम्भव, अभिनन्द देव भजिये ॥ सुमति सुपद्म प्रभुजी, सुपार्श्वनाथ ज्ञायक ॥चौ० ॥ १ ॥ श्री चन्द्रनाथ सुविधि, शीतल श्रेयांश श्रीमत् ॥ श्री वासुपूज्य वन्दौं, विमलेश जग विभायक ॥ चौ० ॥२॥ श्री अनन्त धर्म शाति कुन्थु अरह सुमल्ली ॥ स्वामी मुनिसुव्रत के, रहते सुरेन्द्र पायक ॥ चौ० ॥ ३ ॥ नमि नेम पार्श्व प्रभुजी, महावीर संघ स्वामी ॥ वन्दू मै सीस नम

है प्यारे तथा विमायक ॥ वी० ॥ ४ ॥ अरिहन्त सिद्ध पाठक आचार्य सर्व साधु ॥ नम सूर्य पावता है, चारित्र दर्य पावक ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ ३२ ॥ श्यामा मैं मन रही मोय ॥

नित भजिये जिन चौबीस इष्ट मन सीस मन्दिर धर भावे ॥ टेर ॥ श्री आदि अजित जिनदेव सेव श्री सम्भव जिनकी कीजे ॥ श्री जिन अभिनन्दन लाम नाम श्री सुमति सुमति सुमरीजे ॥ प्रभु पद्म प्रभो पद्मनामी श्रीसुपार्श्व प्रभो शिव गामी ॥ जिनचन्द्र चरम चितधार चाढ चूड़ामणि भवि उरलावे ॥ नि० ॥ १ ॥ श्री सुविधि सुबुधि दातार सार सीतल समता सुविभावे ॥ श्रीमान् श्रेष्ठ श्रेयांस

ईश जगदीश ज्ञान सुविकाशे ॥ वर वासु-
पूज्य नित सेवा मिल करते वासव देवा ॥
हो विमल विमल मति जपें खपें ·अघ
बुद्धि विक्रम विकसावे ॥ नि० ॥ २ ॥ श्री
अनन्त अन्तकर कर्म भर्म तज अखिल
हुवे सो अविकारी ॥ धनाधीप प्रभो धर्म
नाथ जगतात आप हैं हितकारी ॥ प्रभु
शांति शांति दातारा, किया कुंथु कर्म सं-
हारा ॥ श्री अर अन्तर भेद छेद अरि
जग में सो जय पावे ॥ नि० ॥ ३ ॥ है
मंगल मल्लिनाथ मुनीन्द्र श्री मुनि सुव्रत
स्वामी ॥ नमिये नमिपद नलिन,नेम जिन
नेता जग सुखधामी ॥ श्री पार्श्व पार्श्व
हितदाता, श्री वीर वीरयति ज्ञाता ॥ यों
चौवीसों जिनराज लाज रख 'सूर्य मुनि'
गुण कथ गावे ॥ नि० ॥ ४ ॥

॥ श्री वीर प्रार्थना ॥

तर्ज ॥ कोई नहीं दुनियां में साथी का मेरा ॥

श्री महावीर जिनन्द अरजी तो सुन
लीजिये ॥ टेर ॥ भटका चहुंगति सुख
नहीं पाया २ कैसे करूं जगनाथ अचल
सुख दीजिये ॥ श्री० ॥१॥ कुकुम कमीसा
काम न आवे २ आप अखंडित नाम, रटन
रम दीजिये ॥ श्री० ।२॥ सुधबुध बिसरी
जड़ चेतन की २ मान्यो एक समान, कैसे
तो अब कीजिये ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचल
अखंडित मोक्ष नगीनी २ कैसे चढूं वस
साथ, मुक्ति वरदीजिये ॥श्री०॥४॥ कुगुरु
मिथ्या विषविष मुझको २ गुरुसा मिला
नहीं देव, तुम्ही तो सुख कीजिये ॥श्री०५॥
काटे कर्म रोग में सर्व मुनि ज्यों रतिमणी
रस सार, भक्ति जन पीजिये ॥श्री०॥६॥

॥ गजल, ईश्वर स्तुति ॥

अधम उद्धारन दीन दयालु, परम जिनेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ त्रिशलानंदन, सब दुख भंजन, जग अखिलेश्वर तुम्हीं तो हो ॥१॥ भवि उद्धारण शिव सुख कारण, जग परमेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अघ रिपुवारक भविजन तारक, जग जोगेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञान विभाकर गुण के आकर, देव महेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ शिवमगदाता जग के त्राता, सर्व सिद्धेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ तत्त्व प्रकाशक वैर विनाशक, वर विश्वेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ स्थापक गण के युगवर वृप के, अचल सुरेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग न रोपा नहि तम तोपा, सिद्धि-गणेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ नाथ निरंजन

भविगणरंजन, विश्वनरेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अं० ॥ ४ ॥ मदि तुम कर्ता नहिं तुम हर्ता विमल सुमेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ भव तरि शिशु 'सूर्य मुनि' का देव नरेश्वर तुम्हीं तो हो ॥ अं० ॥ ६ ॥

॥ ७३ ॥ लावणी

कहे मन्दोदरी मेरा सुनलो पिया। नाहक परनारी पै चित्त दिया ॥ टेर ॥ करके पलक में इन्द्रजय पायक हजारों पेच हैं। जो अब तुम्हारा चित्त में यह रखिये नितभेद है। सभी बात बिगड़ नहीं आप किया ॥ क० ॥१॥ क्यों ? नाथ सीता को हरी कुल में लगाया दाग है। पीछे ही पठा दीजिये यह कामिनी विष नाग है। नाहक नाम पिया बदनाम किया ॥ क० ॥

२ ॥ काणी व कोची कूबडी परणी त्रिया सो पद्मिनी । अपनी वही है कामधेनु अन्य विषमय भामिनी । नहीं होत भला परनार छिया ॥ क० ॥ ३ ॥ परणो यदि इच्छा तुम्हारी राजवंशी कामिनी । श्रेष्ठ नहि तुम चोर के लाए पराई भामिनी । किसने परनारी से सौख्य लिया ॥ क० ॥ ४ ॥ यह तो सती हैं श्रीमती लज्जा दया गुण से भरी । संताप देना अन्य को अच्छा नहीं कहती खरी । सती राम सिवा नहि धारे हिया ॥ क० ॥५॥ शिक्षा लगे नां मनुज को जब ही विनाशक काल है । 'मुनि सूर्य' कहैं समझे नहीं लंका पुरी भूपाल है । रक्खा सील अखंड विशुद्ध सिया ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ रे मान ॥

॥ हरिगीत ॥

सुख को न पाया है कहो नर निज
मैं अभिमान पर ॥ देखा गया अभिमानि
का ये ह्रास होता सत्वपर ॥ अब मद पी
कर मान का अन्याय नर क्या क्या करे
मद अन्ध हो सुध भूल के अन्याय पथ पे
पग धरे ॥ १ ॥ आधीन हो अभिमान के
उत्सव का आयोजन करे ॥ हा ! धर्म का
असत्य बना निज मान्यता को अनुसरें ॥
इस मान पापी के लिये दुष्कर्म करते हैं
दुखी ॥ कई सैकड़ों बने पर्दा निज धर्म
खोते हैं सुखी ॥ २ ॥ मद में फूले धनधान्य
भी निज द्रव्य का पानी करें ॥ रण-भूमि
में कई या लड़ें निज प्राण की हानी करें ॥

तव साधु भी किरिया हरें जव मान के खर पे चरें ॥ नानाविधी परपंच कर कापट्य रचना आदरे ॥ ३ ॥ धारन करें जप तप क्रिया रे ! मान ही तेरे लिये ॥ सन्मान मिलता किस तरह यों जाल गू-थत है हिये ॥ भद्रीक भोले प्राणि को दे डाल अपनी जाल में ॥ हो अन्ध श्रद्धालु वही आजाय ताकी चाल में ॥ ४ ॥ अति धूर्तता छलबल करी उत्कृष्ट वन वहका-यता। क्यों कर प्रवल मुझ पत्त हो मन में यही नित चाहता ॥ जहँ सप हो तहँ क्लेश की तू आग धर हर्षावता ॥ रे नीच तेरे से कोई ना और वस दरसावता ॥५॥ रे मान ! ही तेरे लिये इक प्रवल अस्तर झूठ का ॥ जो थूँक कर पीछे निगलना काम है यह दुष्ट का ॥ रति मान ही में

मामता कर माफ्य रखना मूढ़ है ॥ अन
मस्य पश्चम के लिये ही कप करता मूढ़
है ॥ १ ॥ चित में धरे यह भावना मुझ
से नहीं जग और है ॥ पर आमती दुनियां
मुझ है सेठ अथवा चोर है ॥ क्यों और
को उपमत् गिमैरे ! माम किस का थिर
रहा ॥ फूला फली कुम्हलायगा यह सत्य
ज्ञानी ने कहा ॥ ७ ॥ सत्कार पुनि सम्मान
पूजा सुयश की इच्छा घरे ॥ करके उपा
र्जन पाप का यह पूर्ण मव मिथ्य मरे ॥
परिवार सम्पत तन पुजानी सब करे
अभिमान मन ॥ कैसे दयारस का रहा
उष बैलको पर ध्याम मन ॥८॥ जल कुम
परस की मस्तक होती नहीं देखी कभी ॥
क्या रूप से ही कम पड़े तालाब और
समुद्र भी ॥ ... से सो सेर भी और

मान से अपमान है ॥ ज्यों कूकरी विष्ठा समो ज्ञानी गिणे सन्मान है ॥ ९ ॥ पद उच्च पाकर गर्व करना पामरों का काम है ॥ दिन एक में वय तीन हो हा ! सूर्य की अविराम है ॥ संपूर्ण सम्पत थी उसी के छत्रपति था देश में ॥ देखा गया कल को उसे फिरता दरिद्री वेष में ॥ १० ॥ अभिमान से ही विनय का होता पलक में नाश है ॥ होता नहीं उसको कभी भी ज्ञान का सुविकाश है ॥ था मान जहॅ तक वाहुवलि ने ज्ञान केवल नहि लिया ॥ वर वीर सच्चा है वही जो मान मुख काला किया ॥ ११ ॥

॥ गजल ॥ पूज्य गुण ॥
॥ तर्ज ॥ भव २ आ मैं यह सरकार देन का ॥

भव भव पातिक दूर पलाय पूज्य
मुनि माधव गुण गाने से ॥ टेर ॥ सुन्दर
सच्चल सकल शुभगात निरखत आदि
नयन उल्लास । सखि नरदेव्य अतुल सुख
नात बैसे रंक रतन पाने से ॥ भ० ॥ १ ॥
भ्रम तम तोम गुरत रवि आत पुनि वर
वान भान प्रकटात निज हरि थांति नी
क्य नरत्वात अखि बैन परम माने से ॥भ
॥२॥ पूत वर बधीपर के बाप हरते भव
द्रषि अम अप आप पाहत निज २ उम
प्रताप माधवनाम ध्यान ध्यामी से ।भ०॥३॥
अननी रायकोर सार्मत संपत सिधि पण
मिधिचन्द थीमों जन्म सुभग सुखकन्द
पूरण पुण्य उदय पाने से ॥ भ० ॥ ४ ॥

ललित जस जन्म स्थान ललाम था अल्ल-
नेरा नामक ग्राम, सुखद मुनि पुण्य पूज्य
शुभ नाम जपिये भविक भव्यवाने से ॥
भ० ॥ ५ ॥

तर्ज—कव्वाली ।

श्री पूज्य धर्म गुरुवर श्री धर्मदास
स्वामी । जिन धर्म के उधारक भवियों के
भद्रकामी ॥ टेर ॥ जिन्ह बाल काल ही
में शुध ख्याल दिल में आया । संपत
विपत्ति लख के, छिटकाय छिन में वामी
॥ श्री० ॥१॥ दे बोध सात जन को लीना
अचल सु संजम । फिरके अथाग कीना
उपकार में न खामी ॥श्री०॥२॥ निन्याणु
शिष्य होगये सदबोध पाय जिन से । जड़

॥ गजल ॥ पूज्य गुण ॥

॥ तर्ज ॥ पल १ भी मैं ना भावन चैन का ॥

मय मत पानिक दूर पताप पूज्य मुनि माधव गुण गाने से ॥ टेर ॥ सुन्दर सच्छ सकल शुभगात निरखत आदि नयन उत्पात । लखि नरपुंग्व मतुल दुल नाव जैसे रंक रत्न पाने से ॥ म० ॥ १ ॥ श्रम तम वोम सुगत उहि जात पुनि वर ज्ञान भान प्रख्यात मित हृदि शांति मी सम सरसात ओंठे चैन पम माने से ॥ म० ॥२॥ पूत पर पंचीधर के भाप परते मव ऋषि अस आप आप पाकृत विन २ क्रम प्रताप माधव नाम ध्यान ध्याने से ॥ म० ॥ ३ ॥ जननी रायकोर सामंत संपत सिद्धि पच निधियन्न दीनो जन्म शुभग सुधजन्म पूरब पुण्य उदय पाये से ॥ म० ॥ ४ ॥

ललित जस जन्म स्थान ललाम था अछ्नेरा नामक ग्राम, सुखद मुनि पुण्य पूज्य शुभ नाम जपिये भविक भव्यवाने से ॥ भ० ॥ ५ ॥

तर्ज—कव्वाली ।

श्री पूज्य धर्म गुरुवर श्री धर्मदास स्वामी । जिन धर्म के उधारक भवियो के भद्रकामी ॥ टेर ॥ जिन्ह वाल काल ही में शुध ख्याल दिल में आया । संपत विपत्ति लख के, छिटकाय छिन में वामी ॥ श्री० ॥१॥ दे बोध सात जन को लीना अचल सु संजम । फिरके अथाग कीना उपकार में न खामी ॥श्री०॥२॥ निन्याणु शिष्य होगये सद्बोध पाय जिन से । जड़

॥ गजल ॥ पूज्य गुण ॥

॥ तर्ज ॥ भज र अम मे या मानत जैन का ॥

भय भय पातिक दूर पलाय पूज्य
मुनि माधव गुण गाने से ॥ टेर ॥ सुन्दर
स्वच्छ मकस शुभगात निरखत आदि
नयात उत्थान । शशि नरवेन्द्र अतुल द्युत
नाव जैसे रंक रत्न पाने से ॥ भ० ॥ १ ॥
श्रम तम तोम तुरत यहि जात पुनि वर
ज्ञान मान प्रकटात नित छवि शांति मौ-
क्ष भरमात आंकि जैन पम माने से ॥ भ०
॥२॥ पून घर मंझीधर के माप, वरते भव
ऋषि वास अप आप पाकृत निज २ कम
प्रताप माधव नाम ध्यान ध्यामी से ॥ भ०॥३॥
अगमी रायकोर सामंव संवत सिधि पण
निधिचन्द दीनों अन्म सुमग सुखकन्द
पुन्य पाप धामे से ॥ भ० ॥ ४ ॥

ललित जस जन्म स्थान ललाम था श्रच्छ
नेरा नामक ग्राम, मुखद मुनि पुण्य पूज्य
शुभ नाम जपिये भविक भव्यवाने से ॥
म० ॥ ५ ॥

तज—कव्वाली ।

श्री पूज्य धर्म गुरुवर श्री धर्मदास स्वामी । जिन धर्म के उधारक भवियों के भद्रकामी ॥ टेर ॥ जिन्ह बाल काल ही में शुध ख्याल दिल मे आया । संपत विपत्ति लख के, छिटकाय छिन में वामी ॥ श्री० ॥१॥ दे बोध स्रात जन को लीना अचल सु संजम । फिरके अथाग कीना उपकार में न खामी ॥श्री०॥२॥ नि
शिष्य होगये सद्बोध पाय

चेतमाचि सदाय समभाव बोध पामी ॥
श्री० ॥ ३ ॥ बावीस गच्छ के थे हैं मूल
पूज्य नायक । जिनकी संतान अब तो
मंमट तजो नवामी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ उन
माप घूट तज के श्री पूज्य पथ दिपाओ।
जिन्हें आत्म धर्म ऊपर तज के सुकीर्ति
पामी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ श्री पूज्य सब ऊपर
सद्दृष्टि कीजे अब तो । मुनि 'सूर्य' पूज्य
प्रतिदिन अपना नमत सु नामी ।श्री ।६।

भजन उपदेशी ।

क्यों भूल्या चेतन भ्रम मोहनी पाश
में ॥ टेर ॥ निर्मल स्फटिक सम आतम
उज्ज्वल सहज स्वभाव विकाश में । निज
स्वभाव से भिन्न हो राच्यो विष मय

मोह मिठास में ॥ क्यों० ॥१॥ मोह मदिरा वस आच्छादित हो फँस्यो कुटुम्ब की आश में। मृग तृष्णा वश फिरे भटकता इत उत कर विश्वास में ॥ क्यों० ॥ २ ॥ एकादश श्रेणी से चढ के पड़े प्रथम गुण रास में। तस्कर त्रिकट मोह अटकावे जाता शिवपुर वास में ॥ क्यो०॥३॥ सिंह सम्मुख हो भरे कुरंगी निज सुत रक्षा आश में। मरे मोह वश पड़ पतंगी जलता दीप उजास में ॥क्यों०॥४॥ मरुदेवी अरु गौतम मुनिवर वसिया मोह निवास में। मोह तज केवल कमला पाई पहुँचे शिव कैलास में ॥ क्यों० ॥५॥ सिंह कभी निज भक्षण तज के, धरे राग नहिं घास में। त्यों ज्ञानी नही विषय भोगवे रमण करे गुण खास में ॥ क्यों० ॥६॥ भ्रमर कमल

है पुण्य न छय पुन लहैं श्वासा श्वास में कठिन काष्ठ तण भर में कोरे होकर मोह के वास में ॥ क्यों० ॥ ७ ॥ सुगम तोड़नी मोह सांकली सुष्कर मोह विनाश में। धन्य पुरुष जग वचन तज के रमते चिद्विलास में ॥ क्यों० ॥८॥ गुणिसे चौपए संवत एही शांति श्रीमान में। नंद घरि मुनि सूर्य कहे यों सिरे शहर मद्रास में ॥ क्यों० ॥ ९ ॥

* ॐ शिवाः सिद्धि मम विरास्तु *

इति शुभ

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
७	११	अभिलाषा	अभिलाष
१०	८	क्रन्दन	कन्दन
११	३	पाव	पावन
१४	५	है ज्यों	ज्यों
१६	४	मुनिवृन्द	मुनिवन्द
२६	११	भावे	गावे
२७	११	त्रण	त्रण को
२७	१५	पाइ	पाई
२८	३	शुद्ध	अशुद्ध
२८	७	अभिमाना	अभिमाना

पृष्ठ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
२६	१०	कहियो	कह्यो
३६	८	सुप	सुष
४०	७	भूठे	भूठे
४०	६	सजीव	सजीव
४१	१०	अव बदलस	अदस बदल
४४	७	कृती	कृतो
४५	१	रमाने वाले	रमावे वाल
४५	१०	असे	ऐसे
४६	१	कहाँ म	कहीं
५४	११	ममो	मामो
५६	१०	जिमवास	मिजवास
६१	१	जम	जैम
६१	१६	कोप जो	कोप न
६२	१४	जाती	जाती

पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
६५	८	तुम	तृण
६७	६	वानो	वागो
६७	१४	सत	सुत
६८	८	सए	कए
७२	१६	आतम	आतम
७३	१४	सरखाई	सखाई
७५	६	करता है	करता
७७	५	यश	दश
७७	१५	हाथ	आथ
७८	४	काज	कीजे
७८	१३	वांधए	वाघए
७९	३	विरुद्ध	विरुद्ध

पृष्ठ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
८१	१२	मगार	मह्लार
८२	३	पाव	पाप
८२	४	भाव	भाव
८४	१२	कामन	कमाम
८७	२	दुख	दुःख
९२	१२	सिंधु हि	सिंधु
९७	३	जुग	जुग मग
९९	५	अपमल	अपमल
९९	११	अपमल	अपमल
१००	८	सिप्र	सिप्त
१००	१०	पानी	पानी तेरी
१०५	१०	करुंगा	करूं गी

पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१०५	१६	गहियो	गह्यो
१०७	५	स्तवन	स्तव
१०९	२१	ममता	ममत
११०	११	गहियो	गह्यो
१११	१३	श्री	श्री गुरु
११३	६	घना	मना
११३	६	जर	जग
११४	८	ध्याईरे	ध्याइयेरे
११५	४	वंच	वंचन
११५	१४	पन चिठगत्	प नचिठरतं
११८	३	अन्त	अनन्त
११८	६	रही कुमति कुदेव दिल आनी,	रही कुमति दिल छाय ताहि से जान्यो ना तुझको। कुगुरु कुदेव दिल आनी।

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
११६	२	व्यभिचार	व्यभिचारा
१२१	७	मिचारे	लिचार
१२३	१०	सप्तमी	समामी
१२४	३	कोप	कोपे
१२४	९	माघ २	मघ ९
१२८	४	मपो	मघो
१३०	४	विस	विस में
१३६	३	घर	घर

श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल
की
विक्रीयार्थ पुस्तकें

१ स्तवन तरंगिणी भा० तीन
(पू० माधव मुनिजी म० कृत)
२ ढूंढी दम्भ दर्पण
३ जैन भजन प्रदीप
४ जैन भव्य भजन
५ चतुर्विंशति भजनाकर
६ जैन भजन चरितावली
७ श्री भावना प्रबोध
८ जैन भजन भास्कर
९ जैन संगीत सुधाकर
१० श्रीमती गुण सुन्दरी च
११ सप्त गायन चरित्र
१२ जैन भजन भूषण

१३ नित्य मंत्र स्मरण
१४ चरित्रापली युक्त
१५ चरित्रावली पद्माकार
१६ कवित्त संग्रह पद्माकार
१७ साधु प्रतिक्रमण पद्माकार
१८ मल्लिनाथ चरित्र पद्माकार
१९ सुबोध भजन वाटिका
२० आत्मोपदेश भजनावली
२१ सूत्र स्तवन संग्रह
२२ पद्माकार चरित्र भक्ति माला
२३ प्रतिक्रमण सूत्र मूल
२४ प्रतिक्रमण सूत्र सार्थ

और भी या पुस्तके ईकी पातरे मोकरवाली आसनादि मिलेंगे।

पता–श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल

मु० लश्कर (ग्वालियर स्टेट)	ठि० चांदनी चौक रतलाम (मालवा)